॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

ॐ

वर्तमान चौबीसी विधान

(अर्हन्त परमेष्ठी विधान पूर्वार्द्ध)

卐

लेखक—

ब्र० रिषभचन्द जी जैन

•

संशोधित—

पं० खेमचन्द शास्त्री चन्द्रपुरा

टीकमगढ़ (म० प्र०)

[प्रथमवार १०००]

वीर निर्वाण सं २४९१

[न्योछावर १।)]

— निवेदन —

आदिनाथ स्वामी से लेकर के चन्द्रा प्रभू स्वामी तक सो सो केवली इनके तीर्थ में अनबंध हुये हैं और शेष तीर्थंकर इस ग्रन्थ के अनुसार ही हुये हैं। अतः इस विधि से ही अर्घ चढ़ाना चाहिये, जो हर तीर्थंकर के तीर्थ में ८ प्रकार का उपसर्ग सहकर दस दस अंतःकृत केवली हुये जो मोक्ष को गये हैं और दस दस साधू ८ प्रकार के उपसर्ग सहकर अनुत्तर विमान में पहुँच गये हैं। यह सावधानी से इस ग्रंथ में समोसरण में लिखा गया है सो तीर्थ में पढ़ना चाहिये।

ग्रंथ में भूल से अनेक गलतियां हुई हैं अतः बुधिजन सुधार कर पढ़ें।

— विषय सूची —

	पूजा प्रस्तावना	१
	समुच्चय चौबीसी पूजा	१७
१	श्री आदिनाथ पूजा	२६
२	श्री अजितनाथ पूजा	४१
३	श्री संभवनाथ पूजा	५०
४	अभिनंदन पूजा	५६
५	सुमतिनाथ पूजा	६७
६	पद्मप्रभ पूजा	७५
७	सुपार्श्वनाथ पूजा	८३
८	चन्द्रप्रभ पूजा	९१
९	पुष्पदन्त पूजा	९९
१०	शीतलनाथ पूजा	१९०
११	श्रेयांसनाथ पूजा	१९१
१२	वासुपूज्य पूजा	१२७
१३	विमलनाथ पूजा	१३६
१४	अनंतनाथ पूजा	१४५
१५	धर्मनाथ पूजा	१५४
१६	शान्तिनाथ पूजा	१६३
१७	कुंथुनाथ पूजा	१७२
१८	अरहनाथ पूजा	१८०
१९	मल्लिनाथ पूजा	१८९
२०	मुनि सुव्रत पूजा	१९८
२१	नमिनाथ पूजा	२०८
२२	नेमिनाथ पूजा	२१७
२३	पार्श्वनाथ पूजा	२२६
२४	वर्धमान पूजा	२३४

— दोशब्द —

यह वर्तमान विधान जो आपके हाथ में है इसके लेखक चन्द्रपुरा जिला टीकमगढ़ निवासी श्रीमान बाल ब्रह्मचारी रिषभचन्दजी हैं। आप बाल ब्र० तो हैं ही किन्तु उदासीन श्रावक भी हैं। आप अपने समय को व्यर्थ न खोकर हमेशा शास्त्र स्वाध्याय में तथा भक्ति वश कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं यद्यपि आपका अध्ययन किसी खास स्कूल में तो नहीं हुआ है पर पुराने समय की पद्धति के अनुसार हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया है इसी कारण इनकी हिन्दी व भाषा बुंदेलखंड के अनुसार है यद्यपि ब्र० जी ने छन्द रचना में पिंगल का सहारा नहीं लिया है सिर्फ भक्ति वश आपने इस विधान की रचना की है इसके अतिरिक्त आपने तो इतना साहस किया है कि स्वयं की ग्रंथ माला में २० ग्रंथों की रचना तो हो चुकी है आगे के लिए भी कुछ न कुछ कर रहे हैं विधान की रचनाओं में आपने निम्न ग्रंथों की मदद ली है श्री महाधवल, त्रैलोक्यसार, राजवार्तिकजी, हरिवंश पुरान, सुदृष्टि तरंगिनी, उत्तर पुरान, सार समुच्चय, भूवलय, पुन्याश्रव शिखर महातम भर तेश वैभव, आराधना सार, समोशरन दीपक आदि ग्रंथों के प्रमाणों का परिचय भी दे दिया है यह कार्य इन्होंने अपने नाम के लिए नहीं किया है बल्कि

धर्म भावना से प्रेरित होकर किया है पुस्तक साधारण १६ फारम में पूर्ण हो रही है। पुस्तकें कुल एक हजार छपाई हैं जिनमें आधी से अधिक तो मंदिर धर्म संस्थाओं और त्यागी विद्वानों को भेंट की जांयगीं जो शेष पुस्तकें साधारण मूल्य में दे दी जांयगीं जिनका दाम पुनः किसी दूसरे ग्रंथ की छपाई में लगा दिया जायगा ब्र० जी को निज के लिये नहीं चाहिये। समाज ब्र० जी के परिश्रम पर ध्यान देवे हिन्दी तथा पिंगलादि तुकाचार पर ध्यान न देवे।

विनीत—
राजकुमार जैन 'विशारद'

— मन्दिर के लिये सामान —

सुन्दरी छंद ।

हंस द्वीप के चालिये भाईजी; रतनन के कुछ पार मंगाइये।
सोलह प्रकार के रतन मगाकें दश प्रकार की मनी मगाकें ॥
अनेक प्रकार के काँच मगायकें सिंग मरावई पत्थर मगायकें।
सुफेद काला नीला लाल है, अनेक रंग भरे वे आय हैं ॥
ऐसी सामग्री रतन मगायकें शुभ मुहूरत में नीव डरायकें।
शुभ मुहूर्त दिन सुदवाय कें फिर मन्दिर का काम लगायकें ॥
फिर मन्दि बनकें तैयार है रतन द्वीप को चलिये भाय हैं।

अब रतन द्वीप से प्रतिमा

चित्र रतनन की प्रतिमा लै आयकै वैडूर्य रतनन की प्रतिमा मगाकें
वज्र रतन की प्रतिमा लयायकें लोहित रतन की प्रतिमा मगायकें
छेम सार रतन की मगायकें गत्थ रतन का प्रतिमा मगायकें।
गोमेद रतन की प्रतिमा मगायकें प्रवाल रतन की प्रतिमा मगायकें
जोतिर रतन की प्रतिमा मगायकें अंजन मूल रतन की मगायकें
काकनी रतन की प्रतिमा मगायकें स्फटिक की प्रतिमा मगायकें
चन्दन रतन की प्रतिमा मगायकें वरचक रतन की प्रतिमा मगायकें
वकुल रतन का प्रतिमा मगायकें सिलामय रतन की प्रतिमा मगायकें
सोरा प्रकार के रतन बताए हैं राज वार्तिक शास्त्र में गिनाये हैं
तीसरे अध्याय में देखिये भायजी चित्रा आदि सोरह पृथ्वी मानिये
हरित मनि की प्रतिमा लयायकें नील मनी की प्रतिमा लयायकें

पदम राग की प्रतिमा मगायकें मेचक मनी की प्रतिमा ल्यायकें
चन्द्र क्रांति की मनी लयायकें मरकत मनी की प्रतिमा ल्यायकें
वैंडूर्य मनी की प्रतिमा ल्यायकें स्फटक मनी की प्रतिमा ल्यायकें
इस प्रकार चौवीस जिन ल्यायकें रतन द्वीप से चुन के लै आयकें
लाल मनी की आसन ल्यायकें पन्ना मनी की आसन ल्यायकें
रतन मई नहीं मिले ने विध जू कल्पना करकें प्रतिमा मंगायजू
ऐसी भावना भैया राखिये भावना से सब कुछ बात बनाइये

अभिषेक को कलश पूजन के बर्तन

शुभ मुहूर्त को सुदवायकें पच कल्यानक की विधि लगायकें।
रतन द्वीप फिरकें चालिये कलशा रतनन के चुन लै आइये
एक हजार मगायकें अभिशेष करने को प्रभु लै आयकें।
पूजन के बर्तन सब लै आइये, अच्छे अच्छे चुन के लै आइये

चौपही।

स्फटक रतन के कलश जान, एक हजार आठ है प्रमाण।
वज्र रतन का थार मगाय सामग्री के लाने भाय ॥१॥
वैडूर्य रतन का लोटा मगाय, जल भरने के कारन भाय।
लोहित रतन का थार मगाय, द्रव्य चढ़ाने के लिये भाय।२।
छेम सार का कलश मगाय, जल भरने के लाने भाय।
गत्य रतन का कलश मगाय, सुगंध धरने के लिये भाय।३।
श्री मेद रतन का डबा मगाय, धूप धरने के लाने भाय।

प्रवाल रतन का खैना मगाय, धूप खेवने के लाने भाय ।४।
ज्योतिष रत्न की दीपक मगाय, दीप जलाने के लिये भाय।
स्फटक रतन का ठौना मगाय, आत्रा छेपन के लिये भाय।५।
अंजन मूल की रकेबी मगाय, द्रव्य चढ़ाने के लिये भाय।
कांकनी रतन का गिलास मगाय, जल चढ़ाने के लिये भाय ६
वरवक रतन का गिलास मगाय सुगंध चढ़ाने के लिये भाय।
चन्द्र क्रांति की आरती मगाय, आरती करने के लिये भाय ७
चंदन रतन की झारी मगाय, दीप चढ़ाने के लिए भाय।
बैडूर्य मनी और मरकत मनी; इनकी ज्योति जगाई घनी।८।
बकुल रतन की चौकी बनाय, द्रव्य की थारी धरने भाय।
सिलामय रतन की चौकी मगाय द्रव्य चढ़ाने थारी धराय।९।
चित्रा रतन का मोदरा मगाय, ठौना धरने के लिये भाय।
पदम रतन की बाल्टी मगाय, जल निकालने के लिये भाय १०
रतन द्वीप को जाने भाय, शक्ति जाने की नहि आय।
रतन नहिं मिलने को भाय, पुन्न हीन के कारन भाय।११।
ऐसी कल्पना कर लो भाय; उत्तम भावना राखो भाय।
सोई उत्तम फल को पाय, बीज उत्तम बोओ भाय ॥१२॥

॥ अभिशेष को जल कहां २ से ल्याइये ॥

सुन्दरी छंद।

हेम कुलाचल पै प्रथमै चालिये, पद्मद्रह को जल ल आइये
महा पद्मद्रह का जल ल्यायकें तहां हेम कुलाचल पै जायकें ।

निमधा गिरि पै भैया चालिये, तिगंछ द्रह को निर्मल लीजिये
नील गिरि पै भैया चालिये, केशरी द्रह को जल लै आइये ।२।
रुकमी कुलाचल पै भैया चालिये महा पुंडरीक द्रह को जल लै आइये
शिखरी गिरि कुलाचल पै जायकें पुंडरीक द्रह को जल लै आयकें
सुमेरु पर्वत पर भैया चालिये चारों वन की बावड़ी से जल लै आइये
एक २ वन में चार २ बावड़ी एकत्र सोग होतीं बावड़ी ४
प्रथम उत्पल गुल्मा बावड़ी दूजी नलनी उत्पला तीजी बावड़ी
उत्पल कला चौथी बावड़ी भ्रंगा पंचमी भ्रंग निभा छटमी बावड़ी
कज्जला सातमी कज्जलाप्रभा आठमी श्री भुता नौमी बावड़ी जानिये
दशमी श्री कान्ता श्री महता ग्यारमी श्री निलअर बारमी
नलनी तेरमी ॥६॥
नलिन गुल्मा चौदमी बावडी कुमदा पंदरमी कुमन्द प्रभा सोलमी
त्रिलोक सार में बताई है सो छासठ पेज पै गिनाई है ।७।
पांचौं मेरु की अस्मी जानने सब बावड़ी का जल लै आवने
विदेह क्षेत्र में भैया चालिये, दश २ द्रह से जल लै आइये ८
विदेह क्षेत्र में चौंसठ कुंड हैं, विभंगा नदी के ग्यारह कुंड हैं
चौदह नदी के चौदह कुंड हैं, जम्बू द्वीप के नव्वे कुंड हैं ९
जम्बू द्वीप के छह छब्बीस जानिये, एकत्र नदियों सब ही जानिये
सतरह लाख के बानवे हजार हैं, नव्वे नदी और सहाय हैं १०
इन सबका जल लेय भैया आइये प्रभु का अभिशेष करना चाहिए
अढ़ाई द्वीप के कुंड बनाइए चार सौं पचास की गिनती पाइए ११

अढ़ाई द्वीप के द्रह सब पाइए एक सौ तीस को जल ले आइए।
अढ़ाई द्वीप की नदी सब पाइए एक करोड़ उन्यासी लाख गिनाइये
बीस हजार और होती हैं सबै इन का जल लैके आओ अबै
समोशरन की बावड़ी से ले आइए नन्दीश्वर की बावडी से
भर लाइए ॥१३॥

दोहा—नन्दीश्वर को चालिए अष्टम द्वीप में मांय।
सोलह बावड़ी से ले आइए आँगे विवरन होय ।१४।

सुन्दरी छंद।

नन्दीश्वर के पूरब देश जाइए; नन्दा बावड़ी का जल ले आइए
दूजी नन्दावती पै चालिए, वहाँ का जल भर लाइए ॥१॥
नन्दोत्तरा है तीजी बावड़ी, वहां से जल लेके यहाँ आओरी।
नन्द घोसा है चौथी बावडी वहां से जल लेके यहां आओरी।२।
दक्षिन दिशा को भैया चालिए विजया बावड़ी से जल ले आइए
वैजयन्त बावडी दूजी जानिए वहाँ से जल भर के ले आइए ॥३॥
अपराजित बावड़ी तीजी जानिए. वहाँ से जल भरके ले आइए।
जयन्ति बावडी चौथी जानिए वहां से जल भरके ले आइए। ४॥
पश्चिम दिशा को भैया चालिए प्रथम अशोका का जल ले आइए
सुप्रबुद्धा का जल ले आइए कुमुदा नदी का जल ले आइए।।५॥
चौथी बावडी पुंडरीक पर चालिए वहां से जल भर कर ले आइए
उत्तर दिशा को भैया चालिए अलंकरा बावडी का जल ले आइए ६

सुमना बावडी दूजी पर चालिए वहां से जल भर कर ले आइए
आनंदा बावड़ी तीजी पर चालिए वहाँ से जल भर कर ले आइए ७
सुदर्शना बावडी चौथी पैं चालिए वहाँ से जल भर ले आइए।
चारों दिशा की सोलह बावडी इनका उत्तम जल भर ले आवो ८
अभिशेष प्रभु का करना चाहिए आनंद मंगल मनाना चाहिए

दोहा—समोशरन में चालिये दर्शन कर सुख साज।
तहाँ की बावडी से जल ले आइए अभिशेष काज॥

जोगी राजसा

समोशरन वैभव में देखो पांच छह पेज पै जानो।
पूरब दिशा में अशोक बगीचा वहां से जल लै आनो॥१॥
नंदा बावडी नन्दोत्तरा बावडी आनंदा बावडी जानो।
नन्दवती है चौथी बावडी पंचमी अभिनन्दि जानो॥२॥
छटमी बावड़ी नन्द घोसा है इन छहों से जल ले आओ।
दक्षिन दिशा में सप्त पर्न बगीचा वहाँ को चलिये भैया।३।
पहिली बावडी विजया सोहे अभिजिया दूजी जानौं।
तीजी बावडी यजन्ति नामगी वैजयन्ति चौथी जानो॥४॥
पांचवीं बावड़ी अपराजित जानो जयोत्रा छटमी बावड़ी।
इन छह बावडियों से जल सुन्दर भर लो जो मन मोहे॥५॥
पश्चिम दिशा में चम्पा के वन हैं तामैं बावड़ी सोहे।
प्रथम बावडी कुमुदा जानो नलनी दूजी जानो॥६॥

तीजी बावड़ी पद्मा नाम की पुष्करा चौथी जानों।
विचचेत्पक्षा बावडी पांचवी अरु कमला छटमी मानों॥७॥
उत्तर दिशा में आम्र बन मोहें तामें बावडी नानों।
प्रथम बावड़ी प्रभास नान की दूजी आसमती जानों।॥८॥
तीजी बावडी भामा की शप्रभा चौथी जानौ।
पांचवीं बावड़ी भानु मालिनी, स्वयम्भा छटवीं जानों।९।
समाशरन की चौबीस बावड़ीं क्रम क्रम से जल ल्याओ।
अभिशेप करलो चौबीसों जिनको परमानन्द को पाओ १०
नौ के पेज पै ऐसी लिखते तीन पीठ के चारों दिशा में।
चार बावडी विशाल बनी हैं समौशरन के मध्य में॥११॥
स्नान करने तैं सात भव दिखपे भूत भविष्य बर्ता।
प्रथम बावडी नन्दानाम की भद्रा दूजी जानौ॥१२॥
तीजी बावड़ी जया नाम की पूर्णा चौथी जानो।
अट्ठाईश बावडी समोशरन की त्रिलोक सार में जानो १३।
असी बावडी पाँचों मेरु की साँरा नंदीश्वर की जानो।
समौशरन की जानो अट्ठाईश एक सौ चौबीस सबरीं।१४।

दोहा—समौशरन की बावड़ी नन्दीश्वर की जान।
पांचों मेरो की सबरी एक सौ चौबिस जान।१५।
इनको जल ले आयकें अवशेप करन के काज।
अब चालो समुद्र को जल भरने के काज।१६।

सुन्दरी छंद ।

समुद्रन की भैया जल लै आइये अभिशेष की भैया चाहिये
लवण समुद्र का जल नहिं चाहने छार जल है उसका पावने ।१।
वारुनी समुद्र का जल नहिं लै आवने मद समान उसका जल त्यागने
दूध अभिशेष के कारन भाईजी क्षीर समुद्र का जल ले आइये २
घृत अभिशेष के कारन भाईजी घृतवर समुद्र को जल हम
लै आयकें ।
कालो दधि समुद्र को जल हम लै आयकें पुष्कर समुद्र को
जल हम लायकें ।।३।।
स्वयंभू रमन समुद्र जल लै आयकें प्रभु का अभिशेष करने जायकें
और बाकी के समुद्र हैं जितने सबै सांटा रस के समान जल है सबै
इक्षुरस अवशेष के कारने, उन समुद्रन को जल लै आवने ।
ऐसी भावना मन में भाइये, जाने की शक्ति नहिं पाइये ।५।
कल्पना करके ही जल लीजिये प्रभु का अभिशेष चालू कीजिये
एक हजार आठ कलशा जल लै आइये कलसों का विस्तार बताइये
आठ योजन गहरे जानिये, चार योजन चौंड़े मानिये ।
एक योजन मुख जिनके जानिये, ऐसे अभिशेष के कलशा
मानिये ।।७।।

— पूजन सामान —

चौपही छंद ।

पूजन का सामान जोड़े प्राशुक जल सुगंध सब जोड़े ।
चावल बिन टूटे सब होंय, पुष्प अच्छे शोभा होंय ॥१॥

नैवेद्य पकवान अच्छा बनावे दीप कपूर की बाती बनावे ।
धूप दशाँगी जानो भाई; अगर तगर मलयागिर ले आई २

सुगंध वाला जटा मासी होई, छबीला पांडरी जानो सोई ।
तज पत्रज अरु मीथा जानो कपूर और मिलालो तामें ।३।
उत्तम सब फल लेओ भाई आठ द्रव्य पूरी धर ले आई ।

दोहा–इहि विधि द्रव्य लगाय के विनय पाठ पढ़ेय ।
उत्तम द्रव्य सों धोयकें मन वांछित फल लेय ।१।
देख दरश जिनराज के होत परम आनंद ।
भव्य जीव सम्यक्त लहैं कटें कर्म के फंद ॥२॥
ऐसे पद सर्वज्ञ पूजत इन्द्र नरेन्द्र ।
परम हर्ष को धारकें ले ले के वसु द्रव्य ।।३॥
श्री जिन पूजा जो करै सो नर इन्द्र समान ।
पुन्य वान ता सम नहीं सेवत सुर नर आन ।४।

पुजारी कैसा होना चाहिये ।

जञो पवीत सो पहिरकर नव प्रकार तिलक लगाय ।
धोती दुपटा पहिर के धुलै सुध मंगवाय ॥५॥
आभूषन सब पहिर कें खडो होय जिन पास ।
पूरब उत्तर मुख करै पूजा करै हुलास ॥६॥

चौपही ।

श्री आचार्य सूर्य्य सागर महाराज आर्षमार्तंड में लिखते आप
छह भेद पूजन के जान, परंपरा आचार्य कहना मान ।७।
प्रथम अभिशेष प्रचाल कराय, आह्वानन बुलाना भाय ।
स्थापना ठहराना भाय, सन्निधी करना पास ठहराय ॥८॥
पूजा करना द्रव्य चढ़ाय विसर्जन करना जिन पहुंचाय ।
ऐसे भेद शास्त्रन में भाय, पूजा जिनवर की गुन गाय ।९।

दोहा—श्री जिन पूजा जो करै सो नर इन्द्र समान ।
पाप परमाणु दल मलै, पुन्य परमानु अधिकाय ।१
जै दिन में पूजा करैं वर्तमान विधान ।
तब लग माम में आरती गावै नृत्य करान ॥११॥
पूजन करते ही समय ढुरते रहें सो चौंर ।
बाजा तबला बजायकें माथें मुकुट सु और ॥१२॥

॥ इति प्रस्तावना ॥

मुद्रक—वीर प्रेस अशोकनगर

❀ चौबीसों भगवान की पूजा ❀

दोहा।

दोष दहन गुन गन सहित चौबीसों जिनराज।
मन वचकाय लगायके पूजा करहू सुखकार॥
दो गोरे दो साँवरे दो हरियल दो लाल।
षोड़स कंचन वर्ण हैं ते पूजों तिहुं काल॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्त रेभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सुन्दरी छन्द।

सकल द्रहों को जल हम लायके, सवरे एक सौ तीस गिनायके
जन्म जरा को रोग मिटावने प्रभूजी के चरणों देत चढ़ावने
चौबीसों भगवान अरजा सुनो जन्म जरा मोरो रोग मिटावनों
चरण कमल की पूजा मैं करू संसार भ्रमण का रोग मिटावनों

ॐ ह्रीं श्री रिषभादि वीरान्तरे भ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति।

बावन चदन सवरे घीसायके केसर कपूर लोंग इलायची मिलायके
संसार ताप मीटावन कारने, प्रभुजी के चरनु हेत चढ़ावने चौबीसो॰
जन्म जरा और रोग मीटावनो. चरन कमल की पूजा में करो
संसार रोग मीटावनो ॥सुगन्धम॥२॥

केस मती सुख दास सुहावनी, बीना टूटे ईनके चावल ले आवनी
अक्षयपद के कारन माईजी, श्रीजी के चरनो देत चढ़ायजी ॥
चौबीसो० अक्षतम ॥३॥

श्री गुलाब और बेला ले आयके, पारिजात और लौंग मंगायके
काम बाण विनाशन कारणं, प्रभुजी के चरणों देत चढ़ावने
चौबीसो० पुष्पं ॥४॥

लाडू बाबर फेनी लायके, बुंदी सीघाड़े पाग बनायके ॥
क्षुधा रोग विनासन कारने, प्रभुजी के चरनो देत चढ़ावने ॥
चौबीसो० नैवेद्य ॥५॥

रतन दीप से बैडूय मनी ले आयके, कंचन झारी में धर लायके
मिथ्या तिमर के नासन कारने, प्रभुजी के चरनो देत चढ़ावने
चौबीसो० ॥ दीपम ॥६॥

अगर तगर मलियागर लायके, धूप दशाँग कूट बनायके ॥
अष्ट कर्म के नाशन कारने, प्रभुजी के चरणों देत चढावने ॥
चौबीसो० धूपम ॥७॥

श्रीफल और बादाम सो लायके, पीस्ता खारक किसमिस ले आयके
मोक्ष पद के कारन धोय के, प्रभुजी के चरनो देत चढ़ावनो ॥
चौबीसा भगवान

अरजी सुनो जन्म जरा मेरो रोग मिटावनो । चरण कमल की
पूजा में करूं संसार भ्रमण का रोग मिटावनो ॥फलम ॥८॥
जल फल आठो द्रव्य सो धोय के, रतन थाली में भर ले आयके

राग द्वेष निवारण कारनो, प्रभुजी के चरणो देत चढ़ावनो ॥
चौबीसो० ॥ अर्घम ॥९॥

दोहा।

चौविसो भगवान की पूजा कर सुखकार
पृथक २ को नाम ले अर्घ देत सुखकार ॥१०॥

अड़ल छन्द।

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन नाथ जू।
सुमति पद्म सुपार्श्व भगवान जू ॥
चन्द प्रभु पुष्प दन्त शीतल महाराज जू।
श्रेयांस वाँस पूज्य भगवान जू॥
विमल अनन्त धर्म शान्त महाराज जू।
कुन्थ अरहं मल्य भगवान जू ॥
मुनिसुव्रत नमि नेम नाथ महाराज जू।
पार्श्वनाथ महवीर चरण शिर नाय जू॥
मैं नमन करूं अष्टांग पूज्य वसुविधि सही ॥
निज स्वरूप में रमै मोक्ष पावे सही।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तभ्यो अर्घं

चौपाई छन्द।

विद्या नन्दी आचार्य ने कहा श्लोक वार्तक शास्त्र में कहा
अत्यन्त दुःख की बात निरविती तिरथंकर की पूजन दर्शन
नाहीं करी ॥१२॥

क्यों के सज्जन लोग सो जाने ।
किये हुये उपकार नहीं भुलाने ॥

चौविसो भगवान ने सोय, मनुष्य को उपदेश जो होय ।१३।
मनुष्यो के हृदय मन्दिर में सोये सद बुद्धी देते प्रभु होये
सदाचार दीपक जो जलाय एसा उपकार करो जिनराय ।१४।
मनुष्यों का अनन्त अपरिमित जाने उपकार किया दया देख
भगवाने
शान्ती की रास्ता बतलाई भगवान श्रावक धर्म बतलाया
भगवान ॥१५॥
मोक्ष रास्ता बतलाई भगवान आतम का पहचान कराने
रतना त्रय स्वरूप बताये देव शास्त्र गुरु भेद बताये ॥१६।
जो कोई व्यक्ति मूर्खता के वस जाने तथा आ मद के बस में ही जाने
धन कुटम्ब के मद में आय भक्ति पूजन नहीं कराये ।१७।
सो तीर्थंकर का ऋणी है भाई हरदम ऋणी बनो रहता भाई
ताते मैं तो उनके ऋण से भाये छूटना चाहते हो मैं भाये ।१८।
नित प्रति नमन अष्टाङ्ग सहित हम करें पूजा भक्ति हम करे
जिनके प्रसाद से कर्म छुटे मुक्तपुरी को गमन कर रूठे ॥१९॥
पद्म नन्दि आचार्य महाराज पंच विनसतका में लिखते आप
हे जिनेन्द्र आपके देखने से सोय मोह रूपी अन्धकार विनास
जो होय ॥२०॥
जैसा वस्तु का सुभाव जो होय तैसा ही जान लेता सोय

आपके दर्शन पूजन गुन चिन्त समकत पाकर केवल लहन्ते ।२१।
थोडे दिन में मोक्ष पुर जाय आतम आतम ही रह जाय
जो मनुष्य पूजन दर्शन ना है तीर्थंकर का ऋणी है भाई।२२।
सोम देव आचार्य महाराज नीतवाक्यामृत में लिखते आप
जो मनुष्य पूजन दर्शन ताहि तीर्थंकर का ऋणी रहता है भाई।२३

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देव भगवान की आदद वीरनाथ पर्यन्त चौबिसों भगवान को अर्घम ॥२३॥

❀ जयमाला ❀

दोहा।

तीसरे काल के बाकी रहे, चौरासी लाख पूर्व सुजान
तीन साल साढ़े आठ माह बाकी रहे मध्य लोक में आये।१।
पंचम काल के अन्त तक तीन साल साढ़े आठ माह रहान
वहाँ तक तीर्थंकर काल है; रहे धर्म सुजान ॥२॥

पदड़ी छन्द

जब तीर्थंकर प्रभू गर्भ आय ताके पहले छः मास माय ॥
सौ धर्म इन्द्र आसन कंपाय अवधि ज्ञान से जानु भाय।३।
नगरी की शोभा अति कराय रत्नों की वृष्टि होत भाय।
कई आचार्य का मत ऐसा जान सवरी नगरी रत्न बरसान ।४।
कई आचार्य का मत ऐसा जान माता पिता के घर बरसा जान।५।
श्रीं ह्रीं धृत कीर्त बुद्ध लक्ष्मी आय छह कुचालकों के ऊपर से आय
माता की गर्भ शोधन कराय तब गर्भ में जिनराज आय ६।

कुन्डलगिर ग्यारवा द्वीप होय रुचकर गिर तेरहवां द्वीप होय।
वहाँ से आई देवी जान, छप्पन कुमारी का प्रमान ॥६॥
जे माता सेवा करन आय, कोई प्रश्न करे कोई से व भाय
नौ महिना छै महिना सो जान पंद्रह महीना रतन वरष जान।८।
तीन करोड़ और आधा करोड़ रोजीना तीनों टेम जौड़
ऐसी वरषा रत्नों की होय शास्त्र सार समुच्चय में जो होय।९।
आशाधर पंडित ने बताय सहस्त्र नाम उनके भाय
माता के आँगन में जो सोय रत्नों की वर्षा रोज होय।१०।
सोलह स्वप्न माता को होत सुरगण से आवे गर्भ सोय
फिर चतुर्निकाय के देव आय आवे कल्याणक करन भाय।११।
फिर जन्म होत भगवान सोय देवन घर में है ध्वनि होय
भवनवासी देवन के होय शंख भेरी बाजिजां सोय ॥१२॥
व्यन्तर देवों के नगाडे बाज ज्योतिष देवों के सिंह नाद
कल्पवासी देवों के सोजान घंटा की ध्वनि होवे सो जान।१३।
देवन ने जानी जन्म होय, बाजन के शब्दों से मालुम होय।
चारों निकाय के देव आय, कल्याणक कर आनन्द पाय।१४।
इन्द्रानी जाय प्रसूति स्थान, ले गोद आन चले भगवान।
सौ धर्म ईन्दर को सोंप देय, ऐरावत हाथी पै चढ़ाय ॥१५॥
पांडुक सिला पर बैठार देय, सिंहासन के ऊपर सु जेय।
कलशा ले फिर जल को सुजाय; खिरो दधि पर पौंहचे सो जाय १६
ऐसे कलशा हैं हजार एक, ढोरे ईन्दर ने एक ही बेर।

बाकी के कलशा बचे आठ, अभिशेष कियो सब देव भ्रात ।१७।
फिर वस्त्रा भूषन पहराय दीन, ईन्द्रानी ने सब सजाय दीन
बज्रा सुर्चा कण छेद, अथवा हीरा की सुई से छेद ॥१८॥
कुन्डल कानन पहराय सोय, सुरगन ते लाये नये सोय ।
सुरगन में मान स्थंभ होय, उसके बदिया में पिटारे होय ।१९।
माने की जंजीर से बंधे होत, पिटारन उपजात वस्त्र सोय ।
तिर्थकरों के लिए पहरन जोग, इन्द्र इन्द्रानी लेकर आते सोय २०
फिर माता को सौंपे जिनेन्द्र, कल्यानक कर सुरगन चले इन्द्र
कोई तीर्थंकर सादी करेत राजगद्दी पर बैठे राज लेत ।२१।
कोई तीर्थंकर ब्रह्मचार्य बाल; न शादी करे न राजभार ।
कोई जिनने राजो भगतिया कोई जिनने नहीं गद्दी राज ।२२।
कुछ कारण पाय वैसराग होत लौकातिक आते तबे सोय ।
वराग समर्थन करत जेय; बाल ब्रह्मचारी लौकान्तदेव ।२३।
जे आठ प्रकार के होत सब, एका भव तारी होत सबै ।
चारों प्रकार के देव आय, शिरो जध के जल से नहाय ॥२४॥
बेठाय लियो पालकी जिनाय, पहले भूम गोचारी लही उठाथ ।
फिर विद्याधर लीनी उठाय, सात सात पेड लीनी उठाय ।२५।
फिर देवन ने लीनी उठाय, आकाश मार्ग ले चले जाय ।
फिर नियत बगीचा में उतार; पंच मुष्ठ लोच किनो जिनाय २६
देवन पिटारे धार केश, क्षीरोदधि डालन को जाकेश ।
मानवोत्तर पर पहुंचे जो देव, पिटारे में से खिरे केश ॥२७॥

फिर मायो कर देव रचे केश, चारो दधि में पधराय केश।
फिर तिर्थंकर ने उपवास कीन, फिर भोजन का कुछ विचार
किन।२८।

फिर राजा के घर आहार लेत, रत्नों की वर्षा करत देव।
बारह करोड़ व पचास लाख, वा ५ लाख २५ हजार।३०।

दाता के जैसो भाव होय; तीर्थङ्कर का मोक्ष पीछे होय।
दूजा तीजा भव धार साये. दातार मोक्ष जाना सो होय।३१।

फिर कछु दिनन के बाद साये, तीर्थङ्कर को कवल ज्ञान होय
ज्यों न वृक्ष तले प्रभु ज्ञान पाय, यहे वृक्ष अशोक नाम पाय ३२

यहे प्रत्येक भाग में नव रंग होय ज्यों न तीर्थकर का ज्यों न वृक्ष होय
तीर्थङ्कर देहतें गुना बारा होय, अहे वर्द्ध समोशरण में ज्यों
होय।३३।

तीर्थंकर के पीठ पीछू होय, द्रव्य ध्वनि तीन काल होय।
तीन तीन मुहूर्त ध्वनि खिरै सोय, चक्रवति के पुन्य से जो
सोय ॥३४॥

आधी रात प खिरे सोय, जब प्रभुजी का कई गमन होय
चार ऊपर अंगुल गमन होय; आकाश में चले भगवान सोय ३५

धरती से चार अंगुल ऊँचे चले जिनाय; जब प्रभुजी का बिहार होय
धर्म चक्र का आगे गमन होय: चरनों के नीचे कमल होय ३६

जब तीर्थकर की रहे नजीक आऊ, बाकी सो रहे थोड़ी कहाऊ
जब ध्याना रूढ़ रहे भगवान, निरवान होय सुख में निधान ३७

पुदगल परमाणु बिखर जात, माया मय देव रचौ काय
अगनि कुमार जब शीश नाय, मुकटों से अगन प्रज्वलित
सौभाय ॥३८॥
निर्वाण कल्याणक देव कीन, फिर अपने अपने स्थान लीन
सब ही जन ने कुछ शोक कीन, धीरे धीरे कुछ हरष लीन।३९।

धत्ता- दोहा।

तीर्थंकर चौबीस की जयमाला कहि सोय।
कल्यानक वरनन करो रिषभचन्द ब्रह्म सोय॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घं ॥४०॥

चौपही छन्द

भूत बनी आचार्य महाराज। लिखते हैं महाबंध की पहिली किताब
चौबीसों भगवान की सोय। पूजा भक्ति जो नर होय।४१।
त्रिकाल वंदना पूजन करै। सो नर तीर्थंकर प्रकृति बंध करै।
इसमें कोई नहीं संदेय। जिन आगम ने कही है सोय।४२।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर प्रकृति उदय॥ अर्घं ॥४३॥

दोहा–समाधिभक्ति में कही सुन लीजे भवि सोय।
चौबीसों भगवान की विनय भक्ति होय।
पूजा विर्सन जो करै नरनारी सब कोइ।१।
नर का दिक का दुख नहीं और दुर गति नहिं होय।
सातिशय पुण्य बंध है सम्यकधारी होय।२।

कछु भव धर शिव त्रियवरै आनन्द मंगल होय।
रिषभचन्द भाषत सही मागे मिलै न माय।
जब लग यह संसार में भ्रमण हमारा होय।
तब लग मुझे सम्यक्त सहित मरण समाधि होय ॥३॥

॥ इत्यादि आशीर्वाद ॥

श्री आदिनाथ जिन पूजा।

भये वंश इक्ष्वाकु में श्री आदीश्वर देव।
सुर नर मिल पूजत चरण तिन की कीजे सेव ॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर २ अत्र तिष्ठ। ठः ठः अत्र मम सन्निधो० परिपुष्पांजलं।

ढोर जोगी रायसा।

अढ़ाई द्वीप की नदी पै चालौ जल भरने के काजै।
एक करोड़ उन्नासी लाखरु बीस हजार सब जानौ ॥
मिथ्यात रूपी मैल धोय कर सम्यक दर्श सजालौ।
इसी के कारण जल भर ल्याया श्रीजी के चरण चढ़ाओ।
श्री रिषभ देव स्वामी महाराजा तीनों लोक के नाथा।
भव २ के अपराध मैट कर शान्ति रस दे नाथा ॥

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिन देवाय नमः ॥जलं ॥१॥

सब चन्दन में सार चन्दन गौसीर चन्दन गारौ।
मिथ्या ज्ञान के नाश करन को श्री जी के चरन चढ़ाओ।
श्री रिषभ० ॐ ह्रीं० सुगधं ॥२॥

हीरा रतन के पुंज बनाओ कंचन थारी भरिये ।
दर्शना वरनी कर्म नास को श्री जी के चरन चढ़इये ।
श्री रिषभ० ॐ ह्रीं० अक्षतं ॥३॥

कल्प वृक्ष के पुष्प मनोहर ताजे खुशबू वाले ।
काम बान के नाश करन को श्रीजिन चरण चढ़ाले ॥
श्री रिषभ० ॐ ह्रीं० पुष्पं ॥४॥

भांत भांत के नेवज ताजे रतनन थारी भर लो ।
क्षुधा वेदनो नाश करन को श्रीजी के चरन चढ़ावो ॥
श्री रिषभ० ॐ ह्रीं० नैवेद्यं० ॥५॥

बैडूर्य मणि का दीप बनालो जग मग ज्योति जगा लो ।
मोह तिमिर के नाश करन को श्री जिन चरण चढ़ाओ ।
श्री रिषभ० ॐ ह्रीं० दीप ॥६॥

सुगंध वाले चन्दन मँगा लो धूप दशांगी बनालो ।
नाम करन के नाश करन को श्रीजी के चरण चढ़ा दो ॥
श्री रिषभ० ॐ ह्रीं० धूपं ॥७॥

पिस्ता खारक बादाम श्रीफल और सुपारी मंगाओ ।
अन्तराय के नाश करन को श्री जिन चरन चढाओ ।
श्री रिषभ० ॐ ह्रीं० फलं ॥८॥

जल आदिक वसु द्रव्य मिलादो कंचन थारी भर लो ।
आठ करम के नाश करन को श्री जिन चरन चढादो ॥
श्री रिषभ० ॐ ह्रीं० अर्घं ॥९॥

पूजा पांच कल्याण की; करै भवक जन कोय ।
यह भव सुख संपति लहै, सुरग मुकति पद होय ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अर्घं ॥

दोहा—समोशरण के संघ को अर्घ देत मैं सोय ।
सात संघ विराजहीं अर्ज्जका एलक होय ॥

अडिल्ल छंद ।

श्री आदीश्वर महाराज समोशरण में विराजहीं ।
केवल ज्ञान प्रकाश सब सुख पावहीं ॥
पूजों वसु विध अर्घ सो द्रव्य मिलाय कैं ।
आतम अनुभव पोय मोक्ष पद जायकैं ॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभनाथ जिनेन्द्र समोशरण में विराजमानाय अर्घं ।

आदीश्वर के समोशरण में चौरासी गण धर विराजहीं।
सातौं रिद्धि पाय ज्ञान चार पावहीं ।
क्रम क्रम सों मैं नाम सहित बतावहीं ।
दर्शन करौ अष्टाँग पूज सुख पावहीं ॥
वृषभ सेन कुंभ दृढ़रथ तीजें विराजहीं ।
सतधन देवशर्मा पांचवें विराजही ॥
देव भाव नन्दन सौमदत्त विराजही ॥
सूरदत्य और वायुशरमा विराजही ॥
जसोवाहु देवज्ञ बारवें विराजही ।
महेन्द्र अगन देव अगन गुप्त विराजही ॥

मिताग्नि हल भूत प्रसिद्ध महीश्वर भये ।
वसु देव वसुंधर वीसवां गनधर कहे ॥
अचल मेरु मेरुधन मेरुभूत हैं सही ।
सर्वजस सर्वज्ञ सर्वप्रिय गनेश हैं ॥
समगुप्त सर्वदेव सर्वविजय कहे हैं ।
विजयगुप्त विजयमित्र विजयऐल कहें हैं ॥
अररा जित वसु मित्र विश्व सन ही कहे हैं ।
सेंतीसवें सेन गनधर हैं भगवान जे कहे हैं ॥
सत्यदेव, देवसत्य, सत्यगुप्त जानिये ।
सत्यमित्र निर्मल विनीति बखानिये ॥
संवरमुनि गुप्तमुनि दत्य मुनिजज्ञ प्रधान है ।
मुनिदेव गुप्तजज्ञ मित्रजज्ञ महान हैं ।
स्वयंभू भगदेव भगदत्त भगफलगू कहे ॥
गुप्तफलगू मित्रफलगू गनधर कहे ॥
प्रजापति सर्वस्य वरुण गनधर प्रधान हैं।
धनपाल मघवान तेजोराश राश महान हैं ।
महावीर महारथ विशालक्ष प्रधान हैं ।
महावाल शुचि शाल विशाल सरसट है ॥
वज्र गणधर वज्यसार चन्द चूल हैं ।
जय कुमार महाराज कच्छ महा कच्छ है ॥
नम विनम बल अतिबल गनधर कहे ।

भद्रबल और नन्दी महा भागी कहे हैं ॥
नंद मित्र और काम देव अनुपम कहे हैं।
क्रम क्रम सों चौरासी गनधर ये कहे हैं।
तद भव हैं जे गनधर चार असी कहे हैं।
नमन करूं अष्टाँग पूज वसु विधि लहे हैं।

ॐ ह्रीं चौरासी गणधर शमोशरण सहिताय श्री रिषभ जिनेन्द्राय नमः ॥ अर्घ ॥

जिनके समौशरण में सामान्य केवली विराजहीं।
गिनती में है बीस हजार मौक्ष सुख पावहीं ॥
मैं नमन करूं अष्टांग पूज सुख पावहीं ।
आतम ध्यान लगाय मोक्ष पद पावहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभ देव के समोशरण में २० हजार सामान केवली विराजमान तिन सब को अर्घं ।

जिनके समोशरण में श्रुत केवली विराजहीं।
अंग पूर्व द्वादशांग अर्थ के पाठी विराजहीं ॥
चार हजार सात सौ पचास गिनती कही।
नमन करूं अष्टांग पूज वसुविधि सही ॥

ॐ ह्रीं रिषभ जिनेन्द्र के समोशरण में द्वादशांग के पाठी श्रुतकेवली चार हजार सात सौ पचास मुनि विराजमान तिन को अर्घ ॥

जिनके समोशरण में विराजै जती शिक्षक सही।
दीक्षा लेते भगवान से सूत्र अग्यासी कही।
दो हजार एक सौ पचास गिनती कही ॥
नमन करूं पंचाँग पूज वसु विधि सही ।३।

ॐ ह्रीं श्री रिषभ देव के समोशरण मे भगवान से दीक्षा लेते ऐसे शिक्षक उपाध्याय साधू दो हजार एक सौ पचास विराजमान तिन सब को अर्घं ।

जिनके शमोशरण में अवधि ज्ञानी विराजहीं ।
नौ हजार की गिनती तिन की पावहीं ॥
नमन करूं पंचाँग पूज वसु विधि सही ।
आतम अनुभव पाय मोक्ष पावैं सही ॥४॥

ॐ ह्री श्री रिषभ देव के समोशरण में अवधि ज्ञानी साधू नौ हजार विराजमान सहिताय अर्घं ।

जिनके समोशरण में मनः पर्य्यय साधु विराजहीं ।
साड़े बारह हजार की गिनती पावहीं ॥
नमन करूं पंचाँग पूज वसुविधि सही ।
आतम ध्यान लगाय मोक्ष पावै सही ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभ देव के समोशरण मे मनः पर्य्यय ज्ञानी मुनि नौ हजार विराजमान सहिताय अर्घं ।

तिनके समोशरण में वैक्रियक रिद्धि विराजहीं ।
गिनती में तीस हजार छह सौ पावहीं ॥
नमन करूं पंचांग पूज वसु विधि सही ।
आतम ध्यान लगाय मोक्ष पावें सही ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभ देव के समोशरण में वैक्रियक रिद्धी के धारक साधू तीस हजार छै सौ विराजमान तिन सहित अर्घ ॥७॥

समोशरण में वादित्य रिद्धधारी साधु विराजहीं ।
बारा हजार की गिनती जिनकी पावहीं ॥
नमन करूं पंचाग पूजौं वसु विध सही आतम०।८ ।

ॐ ह्रीं श्री रिषभ देव के समोशरण में वादित्य रिद्ध धारी साधू जिनको वाद विवाद में नहीं जीत सकते ऐसे बारह हजार विराजमान जिन सबको अर्घं ॥८॥

जिन के समोशरण में सब ऐकत्र साधू विराजहीं।
चौरासी हजार और चौरासी मुनि कहावहीं॥
सातो संग के साधू इतने विराजहीं।
नमन करूं अष्टांग पूज सुख पावहीं॥९॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभदेव के समोशरण में सातो संग के साधू एकत्र चौरासी हजार और चौरासी गनधर सहिताय अर्घं।

जिनके समोशरन में मॉच्च जाने वाले विराजही।
इनही में से जाय और नहीं आवही॥
सतत्तर सतत्तर हजार एक सौ गिनती जानिये।
नमन करूं अष्टांग पूज सुख पावहीं॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीरिषभ देव के समोशरण में एकत्र साधु सतत्तर हजार एक सौ मुनि मोक्ष जाने वाले विराजे अर्घ॥१०॥

जिनके समोशरन में माता अर्जका विराजहीं।
ब्राह्मनी सुन्दरी आदि साड़े तीन लाख विराजहीं॥
नमन करू पंचाँग अर्घ सब देत हों।
आतम अनुभव पाय मोच्च पद पावहीं॥११॥

ॐ ह्रीं समोशरन में साड़े तीन लाख अर्जका विराजमान सहिताय श्री रिषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

जिनके समोशरन में ऐलक छुल्लक विराजहीं।
तद भव मोच्च गामी भरत वैभव में गावहीं॥

श्रुत कीर्त दिडव्रतादि तीन लाख विराजहीं ।
नमन करूं पंचांग अर्घ सब देत ही ।।

ॐ ह्रीं श्री रिषभदेव के समोशरन में तद भव मोक्ष गामी ऐलक छुल्लक श्रुतकीर्त दिढरथादि तीन लाख विराजमान सहिताय अर्घं १२

जिनके समोशरन में छुल्लका बाई विराजहीं ।
गिनती में हैं वे लाख कहावहीं ।।
सुव्रता है प्रमुख छुल्लका विराजहीं ।
नमन करू पंचाँग सबै अर्घ चढावही ।।

ॐ ह्रीं श्री रिषभदेव के समोशरण में सुव्रता छुल्लक को आदि देकर पांच लाख छुल्लका सहिताय अर्घं ।।१३।।

आपके समोशरण में अनंत वीर्य केवली विराजहीं ।
पहिले पहिले निर्वाण प्राप्त होय सुख पावहीं ।।
गंगा नदी के तट से मुक्ति पद पावहीं ।
नमन करूं अष्टांग पूज सुख पावहीं ।।१४।।

ॐ ह्रीं श्री रिषभदेव के समोशरण में विराजमान थे ते पहिले पहले कैलाशगिरि के पास में गंगा नदी के तट से मोक्ष प्राप्तये अर्घ ।१४।

जिनके समोशरन में बाहुबलि विराजही ।
दुसरा लम्बर पाय कैलाश से मोक्ष पधारही ।
नमन करूं अष्टाँग पूज वसु विधि सही ।।
आतम रमन कराय मोक्ष पद पावहीं ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्री रिषभ देव के समोशरन में स्थित श्री बाहुबलि कैलाशगिर से मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ।१५

प्रथम तीर्थंकर पद पाय बैल का चिन्ह है।
रिषभदेव जिनदेव आदिनाथ नाम हैं॥
कैलाशगिर से मोक्ष गये भगवान जू।
दस हजार मुनि संग भये निर्वाण जू॥१६॥

ॐ ह्रीं केलाशगिर तें रिषभदेव भगवान दस हजार मुनि संग मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं।१६।

जिनके तीर्थ में दश मुनि ऐसे भये।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अन्तःकृत केवली भये॥

नम न० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दस साधू उपसर्ग सह अन्ताकृत केवली होय मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं।१७।

जिनके तीर्थ में दश साधू ऐसे कहे।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहि मेन्द होते भये॥
नमन करूं पंचांग अष्ट द्रव्य से पूजहों।
आतम अनुभव पाय मोक्ष पद पाय हों।१८।

ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर के तीर्थ में दस साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अहिमेन्द होते भये ऐसे साधू को अर्घं।

आपके तीर्थ में कैलाशगिर से शिवपुर गये।
भरतचक्री सौ भाइयों सहित शिवपुर गये॥
हरवंश पुरान में ऐसो कहो मुनिराज ने।
एक लाख पूर्व विहार करो केवल ज्ञान में।१९।

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में भरतचक्री सौ भाई सहित कैलाश से मोक्ष पधारे अर्घं॥

आपके तीर्थ में केवल ज्ञानी विराजहीं ।
जिनको नमन अष्टांग पूज में करत ही ॥२०॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने केवल ज्ञानी विराजमान तिन सबको अर्घं ॥२०॥

आपके तीर्थ में रौप्य पर्वत सों सही ।
अर्क कीर्त और आदराज शिवपुर लही ॥
तिन को नमन अष्टांग पूज मैं करत हों ।
आतम अनुभव पाय मोक्षपुर जात हों ॥२१॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में रौप्य परवत से अर्क कीर्त आदराज मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं ।२१।

आपके तीर्थ में भरत चक्रवर्ती के पुत्र जू ।
चित्रकार आदि साड़े निन्यानवै हजार जू ॥
विवर्धन आदिक नौ सौ तेईश सुपुत्र जू ।
नित्य निगोद जैं निकस भये भरत पुत्र जू ॥२२॥
दीक्षा लेकर केवल ज्ञान प्रकाश जू ।
मोक्षपुरी कों जाय अनन्त सुख पाय जू ॥
हरवंश पुरान में इह चरचा मैंने सुनी ।
दो सौ अठासी पेज दो सौ नवासी में सुनी ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभदेव के तीर्त में भरतचक्री के पुत्र चित्रकार आदि नौ सौ तेईस मुनि मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं ॥२३॥

आपके तीर्थ में साधू जितने विराजही ।
करोड़ों अरबों की संख्या आवही ॥

नमन करूं अष्टाँग पूज वसु विध सही ॥
आतम रमन कराय मोक्ष पद पावही ॥२४॥

ॐ ह्रीं आप के तीर्थ में क रोड़ों अरबों साधु विराजमान अर्घं २४।

आपकी निर्वाण भूमि से मोक्ष गये साधु जिते।
कुमेरपाल गुनपाल और नागकुमार तिते ॥
वाल महावाल और सहस भट मुनीसजी ।
अंजन चोर आदि चौदा हजार मुनि बताये जी ।२५।

ॐ ह्रीं आपकी निरवान भूमि से भरत बाहुवलि आदि चौदा हजार मुनि मोक्ष पधारे जिनको अर्घं ।२५।

आपके तीर्थं में माता अर्जका विराजही।
भरत कुटुम्बी एक लाख बानवै हजारही ॥
और अनेकों मात अर्जकाएं विराजहीं ।
नमन करूं पंचाँग अर्घ चढ़ावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थं में मातेश्वरी अर्जकाएं भरत कुटुम्बी एक लाख बानवे हजार और अनेक अर्जकाएं विराजमान तिन सब को अर्घं ।२६।

जयमाला।

दोहा।

चौरासी लाख पूर्व कम तीन वर्ष साड़े आठ माह।
तीजे काल के जानिये मध्य लोक के माहि ॥

पद्धड़ी छंद ।

सर्वार्थ सिद्धि स्वर्ग छोड़ आय मरुदेवी के गर्भ में पधारे जाय ।
अषाढ़ वदी दोइज गर्भ जान । माता के उर में आए मान ॥
उत्तराषाढ़ सु नक्षत्र जान । देवन कीन्हों कल्याण मान ॥
मरुदेवी सुत जन्म दीन । नाभिराय पिता कहे प्रवीन ॥३॥
उत्तराषाढ नक्षत्र जान । चैत्र वदी नवमी जन्म मान ॥
अयोध्या नगरी में कहो बखान । पद में बैल का चिन्ह जान ।४।
सुवर्ण समान शरीर जान । चौरासी पूर्व आयु मान ॥
पाँच सौ धनुष शरीर जान । बीस लाख कुंवरा बखान ॥५॥
त्रेसठ लाख पूर्व राज कीन । इक्ष्वाकु वंश में जन्म लीन ॥
देवन कीनो कल्याण आय । सुमेरु गिरि पै अभिशेष कराय ।६।
महामण्डलेश्वर राजा सो होय । आनंद करत दिन गये सोय ।
चैत वदी नौमी सो आय । नीलांजना को निमित्त पाय ।७।
उत्तराषाढ़ नक्षत्र आय । संसार देह से विरक्त थाय ॥
लौकांतिक देवन जोग कीन । चतुर्निकाय के देव प्रवीन ॥८॥
सुदर्शना पालकी दई सजाय अभिशेष कियो देवन ने आय ।
पालकी में जिनको लिया बिठाय कुटम्बी जन कांधे धराय ।९।
फिर विद्याधर ने लई उठाय । सात सात पेड़ ले चले आय ॥
फिर देवन कांधे धरी सोय । आकाश मार्ग ले चले सोय ।१०।
सिद्धारथ वन में दई उतार । वट वृक्ष तले धारी सो भाय ॥
उत्तराषाढ़ नक्षत्र जान । दीक्षा लीनी प्रभु हर्ष मान ।११।

चार हजार राजा दिक्षाधार, संजा समय प्रभु दीक्षा धार ॥
छह महीना का उपवास लीन, खडगासन गह ध्यान कीन।१२।
विनीतपुरी तप कल्याणक जो होय, कल्याण कर देव गये सोय।
छह महीना पूरा ध्यान होय, आहार की इच्छा प्रभू होय।१३।
बिहार कियो आहार काज, सात महीना के अंतराय आय।
बैसाख सुदी तृतिया सो जान, ईर्था पथ पग धरते सुजान १४
नगर हस्तानापुर गये सोय, पड़गाया श्रेयांस राजा ने सोच।
गन्ना का रस आहार दीन; जाति स्मरण सोम प्रभ ने लीन १५
तप कियो एक हजार वर्ष, मह मौन किया हजार वर्ष।
वेला उपवास का नेम धार, वेला पारना का नेम धार।१६।
ऐसो जस करत हजार वर्ष छह उपवास का वेला कहात।
लघु वेला दो उपवास जान ऐसा करते दिन गये जान।१७।
फिर आए मितालपुरी ग्राम, सकटा मुख नाम उद्यान जान
नागोध वृक्ष अशोक जान, उसके नीचे प्रभु ध्यान मान।१८।
वहाँ धारे वेला उपवास सोय, फागुन वदी ग्यारस तिथि होय
उत्तरा नक्षत्र जान। प्रभात समय केवल ज्ञान मान ॥१९॥
प्रभु केवल ज्ञान प्रकाश होय; पाँच सौ धनु ऊंचो शरीर होय
उपदेश दियो प्रभु भव्य जान। अनन्त वीराज दीजित सो जान २०
तप करके केवल ज्ञान पाय, पहिले पहिले शिवपुर को जाय
फिर वृषभसेन दीक्षा सु लीन, प्रथम पद गनधर का लीन।२१।

फिर क्रम क्रम से चौरासी जान सब गणधर शिवपुर लहान
दूजा नम्बर बाहूबली मोक्ष । ता पीछे औरहु गये मोक्ष ।२२।
समोशरण रचना जो होय, बारह योजन का विसार होय ।
इनके जो तीर्थ में पूर्ण धर्म, चलतो रहो नहिं विछोह धर्म २३
कबहु मुनि और केवली होंय, कबहु अर्जका छुल्लका होंय ।
प्रभु केवल सहित विहार होय हजार घाट लाख पूर्व होय ।२४।
बाकी सो रही आयु अल्प जान, चउदह दिन बाकी रहे मान ।
अष्टापद पर जाकर मौन लीन; दिव्य ध्वनुनि नहीं खिरी नवीन २५
जब सब बिघठी रचना सुजान; समोशरण की रचना महान ।
तब आए भरत भगवान पास; चऊदह दिन पूजन करी प्रभात २६
द्रव्यन के लागे ढेर ढेर, भरतेश पुराण में देख लेव ।
वदी चौऊदस माघ प्रवीन, उत्तराषाढ़ सो नक्षत्र लीन ।२७।
चऊदस के प्रथम पहर सोय, निर्वाण भयो पदमाशन से होय
तब पुद्गल के स्कंद सोय; उड़ गये कपूर वत व्योम सोय ।२८।
फिर रहे केश नख शेष सोय, देवन की माया भई सोय ।
वैक्रियक रिद्धि से बनो शरीर, कपूर चन्दन की अर्थी कीर २९
अगनकुमार दोंनों बगल होय, माथो सो नवायो दोंनों सोय ।
मुकटों से मुकट टक्कर खाय, अग्नि प्रज्वलित भई धाय ।
कल्याणक मनाय देवों ने सोय, तब चक्री को कछु शोक होय ३०
तब वृषभ सेन गनधर संबोध, त्यागी मूर्छा तब भरत सोय ।
जब तीजे काल के रहे सोय, तीन साल साढ़े आठ माह होय ।३१।

तब मोक्ष गये प्रभु आदिनाथ, कुछ शोक वंत कहें भये अनाथ।
इनके तीर्थ में अखंड धर्म, चलता रहो सतत पंथ शर्म।३२।

धत्ता।

रिषभदेव भगवानजी विनती मोरी मान।
रिषभचन्द विनती करैं अपनो सेवक जान।३३।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं॥

चौपही–श्री रिषभदेव भगवान आज, मो विनती सुन लीजो महाराज
जब तक मोक्ष न मेरो होय। भव भव में दर्शन तुमरो होय॥
मरन समाधि सहित जो होय। रतनत्रय का चितवन होय।१।
राज पाठ की वाँछा नाहि। भोग विलास चहूँ कुछ नाहिं॥
वांछा है आराधन चार रिषभचन्द जपै मंत्र नवकार॥२॥

॥ इत्यादि आशीर्वादः॥

॥ इति आदिनाथ पूजा समाप्तं॥

❀ श्री अजितनाथ पूजा ❀

दोहा—श्री अजितनाथ महाराज जी विनती मोरी लेव ।
भव भव के अपराध मेट दर्शन हमको देव ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम सन्नधी करणं परिपुष्पांजलं क्षिपेत् ।

अडिल्ल छंद ।

अढ़ाई दीप के कुंड सवरे पाइये ।
चार सौ पचास हैं जिनकी गिनती पाइये ॥
तिनमें से जल लै आय रकेबी हम करैं ।
जनम जरा के नाशन चरन धारा धरैं ॥
अजितनाथ महाराज अरज सुन लीजिये ।
भव भव के अपराध मेंट सुख दीजिये ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जलं ।

केशर कपूर मिलाये जी चन्दन घिस धरों ।
भव आताप मिटाय प्रभु चरनन धरों ॥ अ० सुगंधं ॥
तंदुल चोखे शाल अखंडित पाइये ।
अक्षय पद के कारन प्रभु को चढ़ाइये ॥ अ० अक्षतं ॥
श्री गुलाब के फूल सो बेला मंगाइये ।
काम बान नाश करन प्रभु को चढ़ाइये ॥अ० पुष्पं ॥
घेवर बावर मोदक थार मराइये ॥
क्षुधा मेटन काज प्रभु को चढ़ाइये ।
अजित० ॐ ह्रीं० नैवेद्यं० ॥

वात कपूर जलाय रकेबी में धरूं ।
मोह तिमिर के नाश प्रभु चरनन धरूं ॥
अजित० ॐ ह्रीं० दीपं ।

धूप दशाँगी ल्याय रकेबी में धरूं ।
अष्ट कर्म को नाश करने प्रभु के चरनन धरूं ॥
अजित० ॐ ह्रीं० धूप ॥

सबसे जोरा बल अंतराय दुख देत है ।
दूर करन के हेतु श्री फलादि भेंट है ॥
अजित० ॐ ह्रीं० फलं ॥

जल फलादि आठों द्रव्य सो मिलाय कैं ।
राग द्वेष के नाश हेतु प्रभु को चढ़ाइकै ॥
अजित० ॐ ह्रीं० अर्घं ॥

दोहा–अजितनाथ प्रभु दीजिये शान्ति सुख भरपूर ।
पर पदार्थ दुख देत हैं इनको करिये दूर ॥
गर्भ जनम तप ज्ञान युत मोक्ष कल्यान महान ।
भये पांच कल्यान प्रभु अजितनाथ भगवान ॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र पांच कल्यानक प्राप्ताय अर्घं ॥

श्री अजितनाथ महाराज समोशरण में बैठे ।
लहि केवल ज्ञान प्रकाश पूजत हैं मन मेरे ॥
मैं नमन करों अष्टांग वसु द्रव्य ल्याय धरूं ।
पूजौं मैं भक्ति समेत तन मन मोद धरूं ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय केवल ज्ञान सहित समोशरण में स्थित अर्घं ।

आपके समोशरन में महाराज सिंगसेन गनधर बैठे ।
तिनको आदि सुदेय निन्यानवै और सब बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं समोशरन में सिंगसेन आदि निन्नानवे गनधर सहिताय अर्घं ॥२।

आपके समोशरन में महाराज सामान्य केवली बैठे ।
गिनती में बीस हजार दो सौ बैठे ॥

मैं नमन करूं० ॐ ह्रीं अजितनाथ समोशरण स्थित सामान्य केवली बीस हजार दो सौ पचास विराजमानाय अर्घं ॥३॥

आपके समोशरन में महाराज ग्यारह अंग पूर्व पाठी
बैठे साड़े तीस हज़ार श्रुत केवली सो हैं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं अजितनाथ के समोशरण में स्थित ग्यारह अंग १४ पूर्व के पाठी साड़े तीन हजार सहिताय अर्घं ॥४॥

आपके समोशरण में महाराज अवधि ज्ञानी बैठे ।
गिनती में एक हजार छै सौ साधु बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं अजितनाथ के समोशरन में स्थित शिक्षक सूत्र अभ्यासो एक हजार छह सौ साधू स्थित अर्घं ॥५॥

आपके समोशरण में महाराज अवधि ज्ञानी बैठे ।
गिनती में हैं नौ हजार चार सौ मुनि बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं अजितनाथ के समोसरन में अवधि ज्ञानी नौ हजार चार सौ साधू विराजमान अर्घं ॥६॥

आपके समोशरण में महाराज मनः पर्य्यय ज्ञानी बैठे ।
गिनती में बारह हजार चार सौ बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं अजितनाथजी के समोशरण में मनः पर्य्यय ज्ञानी बारह हजार चार सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥७॥

आपके समोशरण में महाराज वैक्रियक साधू बैठे ।
गिनती में बीस हजार चार सौ पचास बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जी के समोशरण में विक्रिया रिद्धधारी साधू बीस हजार चार सौ पचास मुनि अर्घं ॥८॥

आपके समोशरण में महाराज वादित्य रिद्धिधारी बैठे ।
गिनती में बारा हजार चार सौ मुनि बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजी के समोशरण में स्थित वादित्य रिद्धधारी साधू बारह हजार चार सौ मुनि अर्घं ॥९॥

आपके समोशरण में महाराज एकत्र साधू बैठे ।
गिनती में एक लाख सातों संग वारो ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजी के समोशरण में स्थित एकत्र सातों संग के साधू एक लाख विराजम न तिन सबको अर्घं ॥१०॥

आपके समोशरन में महाराज मोक्ष जाने वाले ।
बैठे हैं सतत्तर हजार एक सौ और बैठे ॥

मैं नमन ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजी के समोशरण में स्थित मोक्ष जाने वाले साधू इसी सातों संग में से सत्तर हजार एक सौ विराजमान अर्घं ॥११॥

आपके समोशरण में महाराज अर्जिका माता बैठीं ।
ब्रिकुंजाको आदि देकें तीन लाख तैंतीस हजार बैठीं ॥
तिनको नमन करूं पंचांग वसु विध अर्घ धरूं ।
वंदामि कहकर आज अपने मन हरषूं ॥१२॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरण में प्रिकुंजा आदि तीन लाख तेतीस हजार अजिका विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

आपके समोशरण में महाराज ऐलक छुल्लक बैटे।
गिनती में तीन लाख हैं सबको अर्घ धरूं ॥
मैं नमन करूं पंचाँग वसु विधि अर्घ धरूं।
इच्छामि कह कह कर आज चरनन शीश धरूं ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजी के समोशरण में ऐलक छुल्लक तीन लाख विराजमानाय नमः अर्घं ॥१३॥

आपके समोशरण में महाराज छुल्लका माता बैठीं।
जिनकी गिनती पांच हैं लाख अर्घ सबन को दीजे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र के समोशरण में विराजमान छुल्लका पांच लाल ब्राजमान अर्घं ॥१४॥

आपके तीर्थ में महाराज दश साधू ऐसे भये।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय
मोक्ष पधारे अर्घं ।१५।
आपके तीर्थ में महाराज दश साधू ऐसे भये।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अनुत्तर विमान में गये ॥

मैं नमन करूं० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह अनुत्तर बिमान में आहमेन्द हुए ऐसे साधू को अर्घं ।१६।

आपके तीर्थ में महाराज सगर चक्री भये।
साठ हजार पुत्रों समेत मोक्षपुरी गये।

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में सगर चक्रवर्ती साठ पुत्रों सहित मोक्ष पधारे अर्घं ॥१७॥

आपके तीर्थ में महाराज सामान्य केवली बैठे।
गिनती में जितने हों उन सबको अर्घ चढ़ावें ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं समोसरन में जितने केवली विराजमान होवें उनको अर्घं ॥१८॥

आपके समोशरन में जितने साधू मोक्ष पधारे।
गिनतीं में जितने होंय उन सबको अर्घ चढ़ावें ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में जितने साधु मोक्ष पधारे होवें उन सबका अर्घं ॥२०॥

आपके तीर्थ में महाराज दिगम्बर निर्ग्रंथ बैठे।
गिनती में जितने हों सबही को अर्घं धरे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ म जितने दि० जैन मुनि विराजे तिन सबको अर्घं ।२१।

दूजे तीर्थंकर महाराज हाथी का चिन्ह पग में।
तुम अजितनाथ महाराज जीतौ कर मन को ॥
सिद्धवर कूटतें महाराज हजार मुनि संग में।
लीनो शिवपुर का वास पुद्गल छोड़ न मैं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ भगवान सिद्धवर कूट में शिखर सम्मेद से एक हजार मुनि मोक्ष पधारे अर्घं ।२२।

आपके तीरथ में महाराज अर्जका जी बैठो।
बैठे ऐलक छुल्लका भाई छुल्लका जी बैठी ॥२३॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं समोशरण स्थित अर्जका ऐल छुल्लकादि विराजमान अर्घं ।२३।

आपकी निर्वाण भूमि से महाराज सिद्धवर कूट तैं हो
एक अरब असी करोड़ चऊवन लाख कहे।

ते सब पहुंचे निर्वान सबको नमन करूं ॥
पूजों मैं वसु विध ल्याय आतम रमन करूं ॥
ॐ ह्रीं आपकी निर्वाण भूमि शिखर सम्मेद के सिद्धवर कूटतें एक अरब अस्सी करोड़ चऊवन लाख साधु मोक्ष पधारे अर्घं ।२४।

श्री अजितनाथ महाराज अरजी सुन लीजे ।
समोशरण के साधु महाराज अरजी चित दीजे ॥
सकल तीर्थ के मुनिराज अर्जी चित दीजे ।
रिषभचन्द घबड़ाय हस्तालम्बन दीजे ॥
मोक्ष न जब तक होय तब लग भव भव में ।
चारों आराधना अराध पुद्गल छोड़न में ॥
सम्यक दर्शन ज्ञान सम्यक चारित्र कहो ।
द्वादश तप चिन्तन होय आराधना चारो हो ॥

॥ इत्यादि आशीर्वादः ॥

मोक्ष गये आदिनाथ पचास लाख कोड़ सागर जान ।
तब दूजे तीर्थंकर भये अजितनाथ भगवान ॥

पद्धड़ी छंद ।

तुम आये विजय विमान छोड़, माता विजया के गर्भ सोय ।
रोहनी नक्षत्र में गर्भ आय, जेठ वदी है अमावस आय ॥
अजुध्या नगरी शोभायमान; देवन कीनो कल्याणक आन ।
राजा जित शत्रु के सो दुआर, देवन नें नृत्य कियो अपार ।२।
माता विजया ने जनम दीन, श्री अजितनाथ ने जनम लीन ।
माहु वदी दशमी सौ होय, रोहनी नक्षत्र में जनम होंय ।३।

जित शत्रु पिता प्रभु के कहाय, देवन कीनी कल्याण आप।
प्रभु को उठाय इन्द्र गोद लीन, पांडुक शिला पै अभिषेक कीन ४
वस्त्रा भरन पहिराय दीन; माता कौ देवन सौंप दीन ॥
तन का स्वरूप सुवर्ण समान, पद मैं हाथी का चिन्ह जान।५।
धनुष साढ़े चार सौ ऊचाई जान, ऐसा शरीर प्रमाण जान।
लाख बहत्तर की आयु जान, अठारो लाख पूर्व कुमार जान।६।
वंश इक्ष्वाकु कहो बखान; फिर राज काज में करो प्रयान।
त्रेपन लाख को पूर्व जान, पूर्वांग अधिक कीन्हो प्रमान।७।
मंडलेश्वर राजा प्रभु होय, दया सहित राज करैं जु सोय ॥
प्रजा को पाले न्याय नीति, आगम अनुसार वर्तें पुतीति।८।
उलका पात को देख सोय, वैराग हृदय में रहो समाय।
फिर माघ सुदी नौ मी सो आय, रोहनी नक्षित्र लागो सौ भाय ९
लौकान्त देव पहुंचे सो आय; प्रभु के भावौं को समर्थन कराय।
फिर चातुर निकाय के देव आय, सिद्धार्थ पालकी लई सजाय १०
प्रभु को पालकी में बैठार; काँधे सो धर ले चले देव ॥
अजुध्या नगरी के बाग सोय, आम्र वन ताको नाम होय।११।
सप्तच्छंद वृक्षतल उतार, आभूषण फेंके प्रभु उतार।
एक हजार राजा सहित होय, दीक्षा लीनी प्रभु हर्ष होय।१२।
पांच मुट्ठी कचु लुंच कीन; देवन ने पिटारे धर सु लीन।
साँझ समय प्रभु दीक्षा धार, बेलोप वास लियो जिनाय।१३।

फिर अयोध्या नगरी गये सोय, ब्रह्मदत्त राजा ने पड़ गाय सोय।
फिर दियो दुग्ध आहार सोय, पंचाचार देवन से होय ।१४।
दो उपवास इक पारन होय, ऐसा करते बारह वर्ष होय ।
उपदेश न कुछ देत सोय, मौन सहित प्रभु विहार सोव ।१५।
फिर आए मनोहर वन मझार, बेला धर प्रभु नेम होय ।
तिथि पोस सुदी ग्यारस सुभाय, पिछले पहर में कर्म नाश १६
रोहनी नक्षत्र में ज्ञान पाय; समोशरण माया रचाय ।
साड़े ग्यारह योजन प्रमान; बारा कोटा रचना कराय।१७।
पूर्वांग एक बारह वर्ष होय, इतने घट एक लाख पूर्व होय।
अजुध्या नगरी का बाग सोय, केवल कल्यान प्रभु का सो होय १८
केवल ज्ञान के सहित विहार कीन, एक लाख पूर्व कुछ घट प्रवीन
उपदेश दियो प्रभु सर्व ठौर, भव्यन को लागो नहीं और।१९।
अब आयु रही बाँकी एक माह, सम्मेद शिखर में पहुंचे सु जाय
तब आए सिद्ध कर कूट होय, सब जीवों को हर्ष होय ।२०।
धर जोगा शन में ध्यान सीन, दिव्य ध्वन नहीं खिरी नवीन ।
तब समोशरन रचना विलाय, देव मनुष दोऊजोर हाथ ।२१।
चैत्र सुदी पांचे सो हीय, रोहनी नक्षत्र लागो जो सोय।
प्रथम पहर दिन का सो होय; खड़गाशन से निरवान होय।२२।
तिन के जु संग हजार साधु, निरवान भयो अति शुद्ध साधु।
पुद्गल परमाणु बिखर जांय, जित तित कपूर समविलय जोय २३

बाकी के रहे नख केश सोय; देवन ने माया करी सोय।
फिर रचो शरीर निर्मलाकार, चन्दन कपूर की अर्थी धार।२४।
फिर अगनकुमार ने शीश नाय प्रगटत भई अग्नि भस्म कराय।
तिन के जो तीर्थ में अखंड धर्म, चालो सो रहो सर्वत्र धर्म।२५।

अजितनाथ भगवान अरज मोरी सुनों।
भव भव के अपराध मोक्ष सुख आदरो॥
समाधि भक्ति में कहौं पूजन भगवान की।
जनम जनम के पाप नाश सुख होत की॥
करोडों भव के पाप किये छिन में ढरैं।
रिषभचन्द के पाप आप छिन में हरें॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं।

दोहा–जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग तुझे सम्यक्त सहित मरण समाधी हाय॥

॥ इत्यादि आशीर्वादः॥

❀ अथ संभवनाथ जिन पूजा ❀

सोरठा–श्री संभवनाथ जिनेन्द्र, शिवमग साधन साज दो।
प्रभु इतनो जस लेव तुम दाता हो मोक्ष के॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर अत्र तिष्ठ २ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट परिपुष्पांजलं क्षिपेत्।

नंदीस्वर चाल।

क्षीरो दधि समान निर्मल तथा मुनि मनसार सौ।
भर भृंग मणिमय नीर सुन्दर त्रषा तुरत निवार सो
संभयनाथ के चरन पूजों धार हृदय संतोष जी।
तातै मिटै भव ताप मेरी जनम मरन मिटावजी ॥
ॐ ह्रीं संभभनाथ जिनेन्द्राय जलं ॥१॥

मलय चन्दन मगाय सुन्दर गंध सों अलि झंकरें।
सो लेव भव जन कूंभ भरकें तप्त दाह सबै हरै ॥
संभव० ॐ ह्रीं० सुगंधं ॥२॥

इन्दु किरन समान सुन्दर जोति मुक्ता को हरै।
हाटक रकेवी धार भवि जन अखय पद प्राप्ती करै ॥
संभव० ॐ ह्रीं० अक्षतं ॥३॥

पाटल गुलाव बेला चमेली मालती केवरे घने।
काम बाण विनाश कारण चढ़ाऊँ प्रभु के चरण में ॥
संभव० ॐ ह्रीं० पुष्पं ॥४॥

बरा मगौरा फैनी ले आओ मोदि कादिक लै घनै।
घृत पक्क मिश्रत सुरस पूरे भूख डायन को हनै ॥
संभव० ॐ ह्रीं० नैवेद्यं ॥५॥

मणि ज्योति मगाय सुन्दर बात कपूर घृत में सनै।
हाटक सो थाली माह धरकें प्रभुजी के चरन चढ़ायकैं ॥
संभव० ॐ ह्रीं० दीपं ॥६॥

चन्दन सो क्रिसना गरु कपूर मँगाय अग्नि जलाइये ।
सो धूप धूंम्र आकाश लागी मानौ कर्म उठाइये ॥
संभव० ॐ ह्रीं० धूपं ॥७॥
श्रीफल सुपारी आम नीबू केला संतरा लै आइये ।
मोक्ष फल के कारने प्रभु अंतराय बाधा बचाइये ॥
संभव० ॐ ह्रीं० फलं ॥८॥
जल फलादि द्रव्य लैकर अर्घ सुन्दर कर लिया ।
संसार रोग निवारन प्रभु भार तुम पद पै दिया ॥
संभव० ॐ ह्रीं० अर्घं ॥९॥

नाराच छंद ।

समोशरन को दर्स के संभवनाथ अवलोकिये ।
केवल ज्ञान सों सहित बारह सभा को देखिये ॥
दिव्य ध्वनि खिरे निर छरी चार काल पाइये ।
कल्यानक पाँचो सहित द्रव्य आठ से पूजिये ॥९॥

ॐ ह्रीं पंचकल्यान धारी समोशरन स्थित श्री संभवनाथ जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहिताये अर्घं ॥१॥

समोसरन में आपके महाराज गनधर पाइये ।
चारसेन को आदि दै एक सौ पांच पाइये ॥
नमन करों अष्टाँग अष्ट द्रव्य को धोयकें ।
आरत रौद्र मैटकें शान्ति भाव ले आयकैं ।२।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन चारसेन गनधर को आदि देय एक सौ पांच गनधर अर्घं ॥२॥

समोसरन में आपके सामान्य केवली पाइये।
पन्द्रह हजार व्राजमान गिनती इतनी पाइये ॥

नम० ॐ ह्रीं समोशरन में सामान केवली पंद्रह हजार विराजमान अर्घं ॥३॥

समोसरन में श्रुत केवली द्वादशाँग पाठी पाइये।
दो हजार डेढ़ सौ सब ही रिद्धिधारी चार ज्ञान पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं दो हजार डेढ़ सौ श्रुत केवली समोशरन स्थित अर्घं ।४।

समोशरन में आपके शिक्षक साधू पाइये।
एक लाख उनईस हजार तीन सौ गाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय एक लाख उनईस हजार तीन सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोसरन में आपके अवधि ज्ञानी पाइये।
नौ हजार छै सौ साधू विराजमान पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानीं साधू नौ हजार छै सौ व्राजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में आपके मनः पर्य्यय ज्ञानी पाइये।
बारह हजार मुनि गिनती इतनी पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में बारह हजार मनः पर्य्यय साधू विराजमानाय अर्घ ॥७॥

समोशरन में आपके वैक्रियक रिद्धी पाइये।
उनतीस हजार आठ सौ पचास साधू पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधू उनतीस हजार साड़े आठ सौ मुनि विराजमानाय अर्घ ॥८॥

समोशरन में आपके वादित्य रिद्धी पाइये।
बारह हजार एक सौ मुनि आगम में गाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन स्थित वादित्र रिद्धिधारी बारह हजार एक सौ मुनि साधु विराजमानाय अर्घ ॥९॥

समोशरन में आपके एकत्र साधू पाइये।
गिनती में दो लाख मुनी ब्राजमान पाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र साधु सातौ संघ के दो लाख ब्राजमानाय अर्घं ॥१०॥

आपके समोशरन में मौक्ष गामी साधू पाइये।
एक लाख सात हजार एक सौ साधू पाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोसरन में एकत्र साधू एक लाख सात हजार एक सौ मुनि विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोसरन में आपके माताजी अर्जका पाइये।
धर्मी माता आदि दे तीन लाख तीन हजार पाइये॥
वंदामि सबको करके अर्घ चढ़ाऊँ हूं।
आरत रौद्र छोड़कें शान्ति भाव ले आऊं हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजी के समोशरन स्थित तीन लाख तीन हजार अर्जका विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोसरन आपके छुल्लका माता पाइये।
गिनती है पाँच लाख और न आगे पाइये॥
नमन करूं मैं हाथ जोड़ अर्घं चढ़ाय कें।
आरत रौद्र त्याग शान्ति भाव ल्याय कैं॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता पांच लाख विराजमानाय अर्घ ॥१३॥

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक पाइये।
तीन लाख गिनती है इच्छामि सबगो कीजिये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक तीन लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

तीजे संभवनाथ तीर्थेश चिन्ह अश्व आपके।
सिद्ध भये धवलदत्त कूटतें मोक्ष लक्ष्मी पायकें॥
संग आपके हजार साधू तप कर मुक्ति पायकैं।
नमन करूं अष्टांग आठ मैं द्रव्य से पूजकैं॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र सम्मेद शिखर के धवल कूटते हजार मुनि सहित मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

तीर्थ आपके में प्रभु दश साधु ऐसे पाइये॥
आठ प्रकार उपसर्ग सह मोक्ष लक्ष्मी पाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में १० साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ।१६।

आपके तीर्थ में प्रभु दश साधु ऐसे पाइयो।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद पाइयो॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में १० साधु ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अहिमेन्द्र भये तिन को अर्घं ॥१७॥

निरवान भूमि आपकी धवलदत्त कूट है।
मोक्ष गये नौ कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख जानिये॥
व्यालीस हजार पाँच सौ सम्मेद शिखर तें जानिये।

नमन० ॐ ह्रीं शिखर सम्मेद के धवल कूट तें नौ कोडा कोड़ी बहत्तर लाख व्यालीस हजार पांच सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं १८

संभवनाथ महाराज अरज सुन लीजिये ।
रिषभचंद घबड़ात हस्तालंबन दीजिये ॥
सम्यक दर्शन सहित आराधना ध्याऊँ मैं ।
भव भव सम्यक सहित आपको ध्याऊँ मैं ॥

इत्यादि आशीर्वादः ।

मोक्ष गये अजितनाथ को तीस कोड़ सागर जान ।
ग्रैवेयक तज जन्म पुरि सावत्री नगरी मान ॥

पद्धड़ी छंद ।

माता जयसेन के गर्भ आय, पूर्वाषाढ़ नक्षित्र शुभ आय ।
फाल्गुन वदी आठें सु जान, पिता जितारी के गृह बरवान ।१।
फिर चातुर निकाय के देव आय, कल्यानक कर आनंद पाय ।
शुभ माघ सुदी बारस सुजान, जेष्ठा नक्षत्र पहुंचे सॉ जान ।२।
जयसेना माता सुत जन्म दीन, देवन आय कल्यानक सु कीन ।
इन्द्रानी जाय प्रसूत थान, बालक को गोद में कर प्रयान ।३।
पांडुक शिला अभिशेष कीन, आभूषन पहिराये प्रवीन ।
फिर माता सोप चले सो देव, पग में घोडा का चिन्ह देख ।४।
सुवर्ण समान शरीर जान; चार सौ धनु ऊँचा कहो प्रमान ।
साठ लाख पूरव की आयु जान, अब कुमार काल का सुन प्रमान ५

कुमार पन्द्रह लाख पूर्व, अब आई जुवानी आनंद पूर्व ।
राज काल चालीस लक्ष पूर्व, है अधिक चार पूर्वांग अपूर्व ।६।
महामंडलेश्वर पदवी सो जान, वंश इक्ष्वाक कही बखान ।
फिर मेघ पटल विनास देख, वैराग बढ़ो हृदय नरेश ॥७॥
लौकान्तक आए देव सोय, तिथि अगहन सुदी पूनो सो होय ।
जेष्ठा नक्षत्र तब पहुचो आय, देवगन सब मिल कें सु आय ।८।
कमला पालकी रची सोय, अभिशेष कियो जिनवर का सोय ।
प्रभु को पालकी में लिये बिठार, कुटुम्बी जन कांधे धराय ।९।
फिर देव लियो आकाश जाय, सावत्रीपुरी के बाग आय ।
आम्र वन में साल वृक्ष तल उतार: दीक्षा लीनो प्रभु संग हजार १०
केशन कौ लुंच की यों जिनाय, कर बेला धर उपवास भाय ।
सांझ समय दीक्षा सौ धार, उपवास नेम हृदय सुधार ॥११॥
पारना के भाव भये जिनेश आए सावत्री नगर ईश ।
पड़ गाहे राय सुरेन्द्र दत्त, षट रस भोजन हैं पवित्त ।१२।
चौदा बरस तप कियो सोय, कर मौन सहित भ्रमन होय ।
फिर आए मनोहर वन मझार, सावत्रीपुरी के पास जाय ।१३।
सालमली वृक्ष तल ध्यान लीन, धर बेला का उपवास कीन ।
कार्तिक वदी चौथ तिथि होय, मृगसरा नक्षत्र का उदय होय ।१४।
पिछले पहर ज्ञान होय, देव गन आए हर्षित सो होय ।
फिर समोशरन रचना कराय, ग्यारह योजन विस्तार कराय १५
बारह शुभ सभा लागी जो सोय, भव्यन लागो उपदेश होय ।

पूर्वांग चार चौदा वर्ष घाट, एक लाख पूर्व केवल प्रकास ।१६।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय; तिथि चैत्र सुदो छट महि आय
बाकी सो रहा एक माह सोय, धवदत्त कूट पै पहुंचे सोय ।१७।
समोशरन रचना विलांय; दिव्य ध्वनि सब वंद भाय ।
जेष्ठा नक्षत्र पहुंचो सो आय, पिछलोसोपहर दिन को कहाय १८
खड़गाशन से प्रभु मोक्ष पाय, संग में हजार साधू मोक्ष जाय ।
नरदेव करैं कछु शोक माय; पुद्गल परमाणु विगर जाय ।१९।
रहे केश और नख शेष जान, माया से देव ने फिर रचान ।
अरथी बनाय चन्दन कपूर, फिर देव विद्याधर आये भूर ।२०।
फिर अगनकुमार ले शीश नाय; मुकटन से अगनी जली लाय ।
फिर देवन कर कल्यान होय, अपनो नियोग कर हर्ष होय ।२१।
इनके जो तीर्थ में अखंड धर्म; चलतो रहो कछु नाहि फर्क ।
कभी केवली कभी मुनि होय, कभी अर्जका छुल्लक छुल्लका
होय ।२२।

धत्ता-सोरठा—तारन तरन जिहाज इस संसार असार में ।
दीनबंधु महाराज मम उर वास करो सदा ।२३।

ॐ ह्रीं संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ॥२३॥

जब लग इस संसार में भ्रमन रिषभचन्द होय ।
भव २ में सम्यक सहित मरन समाधि होय ।२४।

। इत्यादि आशीर्वादः ।

॥ इति सम्भवनाथ जिन पूजा समाप्तम् ॥

❋ श्री अभिनन्दन जिनपूजा ❋

सोरठा-अभिनन्दन भगवान असरन के तुम शरन हो ।
यह संसार असार । याते मम रच्छा करो ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवोषट अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट ।

छंद गीतका ।

जल पद मद्रह का ल्याय उज्वल कनक घट भर लायकें ।
दैधार तुम पद पदम की अति मन आनंद बढ़ायकें ॥
अब द्रव्य क्षेत्र काल भव अरु भाव पर वरतन लई ।
संसार पन विध इम अभिनंदन नासिये जग की जई ॥
ॐ ह्रीं अभिनन्दन जिनेन्द्राय जलं ॥१॥
गो क्षीर चन्दन ले आय केशर लायची अरु कपूर लै ।
घिस वाय कर चन्दन कटोरी नाथ पद में चढ़ावहूं ॥
अब द्रव्य॰ ॐ ह्रीं॰ सुगंधं ॥२॥
तन्दुल प्रचाले नीर प्रासुक खड़े भरलै थार में ।
चन्द्र क्रांति समान तिन सों करों पूजा सार में ॥
अब द्रव्य॰ ॐ ह्रीं॰ अक्षतं ॥३॥
कुंद चम्पक राय वेला कुंज और कदभ के ।
लै फूल नाना भांति तिन सों जजूं पद अभिनंद के ॥
अब द्रव्य॰ ॐ ह्रीं॰ पुष्पं ॥४॥

घेवर अनेक प्रकार के बरफी बनी फेनी बनी ।
लख क्षुधा रोग नसात जिनसों पूजहूँ जग के धनी ॥
अब० ॐ ह्रीं० नैवेद्यं ॥५॥
कनक दीप भराय के कर्पूर बाती बारिये ।
सब दिशा करत उद्योत जासों जजूं पद हित धारिये ॥
अब द्रव्य० ॐ ह्रीं दीपं ॥६॥
वर धूप दहन में धूप धर दई घूमकर दिगावली ।
भर पूर महकत जजों प्रभु पद जलै मोह महाबली ॥
अब द्रव्य० ॐ ह्रीं० धूपं ॥७॥
नाशपाती सेव फल ले बादाम श्रीफल लै आयकैं ।
भर ले विशाल सा थार लै के प्रभू के चरन चढ़ायकैं ॥
अब० ॐ ह्रीं० फलं ॥८॥
जल गंध अक्षित फूल चरु वर दीप धूप फलौ धलै ।
शुभ अरघ सों पद कमल पूजत करम गण जासौं जलैं ॥
अब द्रव्य० ॐ ह्रीं० अर्घं ॥९॥

सोरठा—दीनबंधु महाराज अभिनंदन जिनराज जी ।
मरन जनम तप ज्ञान मोक्ष कल्यानक के धनी ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं ।

नाराच छंद ।

श्री अभिनंदन महाराज जी समोशरन में विराजहीं ।
केवल ज्ञान उद्योत सौ दिव्य ध्वनी खिरावहीं ।

नमन करूं अष्टांग प्रभु आठौं अंग नवाय कें।
आठौं द्रव्य धोयके जी पूजन करों भाव सों ॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन जिनेन्द्र समोशरण स्थिताय अर्घं ॥१॥

समोशरन में आपके गनधर प्रभु को पाइये।
बज्र नामि आदि दै एक सौ पाँच गिनाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं बज्रनामि आदि एक सौ पांच गनधर समोशरण स्थित अर्घं ॥२॥

समोशरन में आय के सामान्य केवली पाइये।
गिनती में हैं सोलह हजार तिनको शीश नवाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली सोलह हजार विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में आपके श्रुत केवली पाइये ।
दो हजार पाँच सौ तिन की गिनती गाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली ढाई हजार विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके सूत्र अभ्यासी पाइये ।
दो लाख तीन हजार पांच से साधू पाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरण में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय साधू व्राजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में आपके अवध ज्ञानी पाइये ।
नौ हजार आठ सौ गिनती इनकी पाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरण में अवधि ज्ञानी साधू नौ हजार आठ सौ व्राजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में आपके मनः पर्य्यय ज्ञानी पाइये ।
ग्यारह हजार छह सौ पचास आगम में बताइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधु ग्यारह हजार छह सौ पचास मुनि अर्घं ॥७॥

समोशरण में आपके वैक्रियक साधू पाइये ।
गिनती है नौ हजार सुदृष्टि तरंगनी देखिये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधु नौ हजार विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में आपके वादित्य रिद्धिधारी पाइये ।
गिनती में ग्यारह हजार सबै शीश नाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में बादित्त रिद्धधारी साधू ग्यारह हजार विराजमानाय अर्घं ।९।

समोशरन में आपके एकत्र साधू पाइये ।
सातौं संघ के तीन लाख गिनती इतनी पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातौं संघ के साधू तीन लाख प्रमाण अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके मात अर्जका पाइये ।
तीन लाख तीस हजार तिनके गुन गाइये ॥
वन्दामी करों आपको हाथ जोड़ मात जी ।
आठ द्रव्य सों अर्घ लै आपको चढ़ावजी ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में तीन लाख तीस हजार माता अर्जका जी विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में आपके छुल्लका माता त्राजहीं ।
पाँच लाख गिनती जैन आगम में बताई है ॥

हाथ जोड़ इच्छाकार अर्घ सबै देत हों ।
माताजी धन्य भाग आपका समोशरन में विराजी हों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरण में छुल्लका माता पाँच लाख विराजमानाय अर्घं १२।

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक पाइये ।
तीन लाख विराजमान सर्वानंद पाइये ॥
इच्छा कार आपको अर्घ सबै देत हूं ।
राग द्वेष छाड़ के विराग पद हेतु हूँ ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एलक छुल्लक तीन लाख विराजमानाय अर्घं १३।

अभिनदन महाराज की चौथे तीर्थंकर जानिये ।
बदर का चिन्ह पग में हजार राय संग मोक्ष जानिये ॥
श्री समेद शिखर के आनंद कूट शिव थान जानिये ।
नमन करूं अष्टाँग प्रभु अष्ट द्रव्य से पूजिये ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन जिनेन्द्र श्री सम्मेद शिखर के आनन्द कूट से हजार मुनि संग मोक्ष प्राप्ताय अर्घं ॥१४॥

तीर्थ आपके में प्रभु दश साधू ऐसे पाइये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अंत कृत पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दस साधु ऐसे हुए जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ।१५।

तीर्थ आपके में प्रभु दश साधु ऐसे पाइये ॥
आठ प्रकार उपसर्ग सह कर पद अहमेन्द्र पाइये ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में १० साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र हुए उनको अर्घं ॥१६॥

निरवान भूमि आपकी आनंद कूट जहाँ है।
वहत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तर कोड़ छत्तीस लाख है॥
अरु व्यालीस हजार सात से मुनिराज हैं।
नमन करूं अष्टांग मैं आठ द्रव्य से पूज्य है॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ निर्वाण भूमि श्री सम्मेद शिखर आनन्ट कूट से वहत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तर कोड छत्तीस लाख वियालीस हजार सात मुनि मोक्ष पधारे तिन को अर्घं ॥१६॥

जयमाला-दोहा।

तीसरे भगवान मोक्ष गये दस करोड लाख सागर जान।
विजय विमान को छोड़कर मध्य लोक में आन॥

पद्धड़ी छंद।

बैसाख सुदी छटमी सौ जान, बिसाखा नक्षत्र पहुचो सौ आन
सिद्धार्था मां के गर्भ आन, सुवीर पिता आनंद मान॥१॥
अयोध्या नगरी आनंद होय, देवन कीनों कल्यान सोय।
माता की सेवा करन सोय, छप्पन कुमारी आई होय।२।
कार्तिक सुदी पूने आई जान, पुनर वसु नक्षत्र लागो सो आन।
प्रभु जनम लियो आनंद कार, देवन कीनों कल्यान आन।३।
वंदर का चिन्ह पग में जु सोय, सुवर्ण समान शरीर होय।
साड़े तीन सौ धनु, प्रमाण पचास लाख पूर्व आऊ जु मान।४।
साड़े वारा लाख पूर्वकुमार काल। फिर पाई राज पदवी कुमार
महामंडलेश्वर राजा सो होय। पदवी धारक जे कहे सोय।५।

साड़े छत्तिस लाख पूर्व जान. पूर्वांग आठ और अधिक जान।
इतने दिन कीनों राज सोय प्रजा को पाले निसकुंटक होय।६।
वंश इक्ष्वाक कहो जो सोय, ताको कीनो उद्योत होय।
गंधर्व नगर का नाश देख, वैराग बड़ो संसार देख ॥७॥
लौकातिक आये नियोग पाय, फिर चतुरन काय के देव आय
माघ सुदी बारस सुजान, पुनर्वस नक्षत्र का उदय मान ॥८॥
अर्थ सिद्धा पालकी देवन सजाय, नर स्वर मिल जय २ कराय
प्रभु कों पालकी में बैठार सोय, कुटंबी जन कांधे धरी सोय।९।
फिर कांधे धारी देव सोय, आम्र वन अजुध्यापुरी सोय।
शाल वृक्ष तल लई उतार; केश लुंच कियो पंच मुष्ठ डार।१०।
राजा हजार संग दीक्षा सुधार, संध्या के समय दीक्षा विचार
बेला उपवास करे जिनाय, तीजे दिन पारन कराय ॥११॥
फिर आए विनीता नगर सोय, इन्द्र दत्त राजा पड़गाय सोय
गाय दूध खीर के दिये आहार, राजा के घर पंचाचार अपार १२
अठारा बरस कीयो विहार; मौन सहित कुछ न उचार।
विहार करत प्रभु आए सोय, अयोध्या के मनोहर वन में सोय १३
शाल वृक्ष तल ध्यान कीन्ह बेला उपवास धारे प्रवीन।
पौष सुदी चऊदश सुजान, चौथो पहर दिन को कहान।१४।
पुनर वसु नक्षत्र शुभ जान. प्रगटो केवल पंचम सो ज्ञान।
फिर आए चतुर निकाय देव, सो समोशरन रचयो सुदेव।१५।
साड़े दश योजन प्रमान, बारह कोठा रचना करान।

दिव्य ध्वनि खिरती चार वार, चक्रवर्ती के पुन्न से बार बार १६
आठ पूर्वांग अठारा वर्ष घाट, एक लाख पूर्व विहार काल।
फिर आए करत विहार सोय, मधुवन में सबको हर्ष होय।१७।
आनंद कूट पर पहुंचे जिनेश, बाकी की रही आयु एक मास।
दिव्य धुनी को बंद कीन, समोसरन रचना विलीन ॥१८॥
बैसाख सुदी छट आई होय, पहुंचो पुनर वसु नक्षत्र सोय।
दिन का पहर पहिलानो होय, खडगाशन से मुक्ति जो होय।१९।
निर्वाण गये भगवान सोय, पुद्गल परमाणु बिखरे जु सोय।
माया मई देव रचो शरीर, चंदन कपूर की अर्थी गहीर।२०।
फिर अग्निकुमार ने शीश नाय, अगनी प्रगटी भई भशम काय।
फिर सुर नर कुछ शोक कीन, गनधर प्रभु ने संबोध दीन।२१।
इनके जो तीर्थ में धर्म सोय, चलतो रहो नहिं फर्क होय।

धत्ता-अडिल्ल छंद।

अभिनंदन भगवान अरज सुन लीजिये।
भव भव के अघ नाश करम क्षय कीजिये॥
जो पूजे भव्य सुख लहै संसार में।
अविनाशी पद पाय रिषभचन्द भव नाश के॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दन जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं।

दोहा–जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मो सम्यक्त सहित मरण समाधि होय॥

। इत्यादि आशीर्वादः।

॥ इति श्री अभिनन्दन पूजा समाप्त॥

❀ अथ सुमतिनाथ जिन पूजा। ❀

सोरठा–दीनबन्धु भगवान, हरो हमारी वेदना।
वसु गुनधर महाराज, सुबुध सम्यक्त मम दीजिये।

ॐ ह्रीं श्री सुमति नाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

नाराच छंद।

महा सुगंध धार नीर ले आइये सिन्धु क्षीर सों।
पवित्र कुंभ हेम के भराइये गहीर सों॥
पद जजूं सुविध नाथ के सुबुध आप देत हो।
जजूं अनंत दर्शन ज्ञान सौख्य वीर्य हेत ही॥
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं॥१॥

हिमो पुरा सुगंध सार कध सी भयो वरम।
ल्याय सीत महान आताप हरं॥
पद जजूं सुविध नाथ के सुबुध आप देत ही।
जजूं अनन्त दर्शन ज्ञान सौख्य वीर्य हेत ही॥ सुगंधं॥

कहे अखंड अक्षित, पवित्र सेन भावही।
भरे महान थार लै आप इंद को लनावही॥
पद० ॐ ह्रीं अक्षतं॥२॥

गुलाब लै मचकुंदलै सु सेवती चुनाय कें।
हजार पुष्प को सो कंज हेम को बनाय कें॥ पद० पुष्पं ४॥

पकाय अन्न भांति भांति थार में भराय कें।
सो हाथ माह लेय सुध भाव को लगाय कें। पद० नैवेद्यं ५
कपूर वात दीप में बड़ो उद्योत पावती ॥
कहूँ न लेश धूम को महान ज्योति जागती ॥ पद० दीपं ६
करूं मगाय धूप सार अग्नि के सु सन्मुखा।
सुख रहोय आपके सुवास दे दशों दिशा। पद० धूपं ७।
लवंग लायची अनार दाख पिस्ता लायकैं।
धार चरण के समीप मोक्ष फल पायकैं।पद० फलं ८।
द्रव्य आठौं लीजिये, कनक रकेबी लै धरै।
राग द्वेष नाश करम, प्रभु के चरन चढ़ाइये। पद० अर्घं ९

सोरठा–सुन विनती भगवान ज्ञान दान मम दीजिये।
एही सर्व कल्याण, करौ सदा मुझ दीन पै ॥

चाल नन्दीश्वर।

श्री सुमतिनाथ भगवान समोशरन में बैठे।
लहैं केवल ज्ञान प्रकाश पूजत हैं मन मेरे ॥
मैं नमन करूं अष्टाँग पूजत वसु विध सों।
मैं आतम रमन रमन कराऊं मोक्षपुरी देखों ॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ जिनेन्द्र पंचकल्याण धारी केवल ज्ञान सहिताय अर्घं १

आपके समोशरन में महाराज चारन गनधर बैठे।
इन ही को आदि सो देय एक सौ सौरा बैठे। मैं नमन०

ॐ ह्रीं आपके समोसरन में चारान गनधर को आदि देय एक सौ सोरा विराजमानाय अर्घं ॥२॥

आपके समौशरन में महाराज सामान केवली बैठे।
गिनती में तीन हजार पूजत मन मेरे ॥ मैं नमन० ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली तीन हजार विराजमानाय अर्घं ॥३॥

आपके समौशरन में महाराज श्रुत केवली बैठे।
गिनती में दोय हजार चार सौ और बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली दो हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥४॥

आपके समोशरन में महाराज सूत्र अभ्यासी बैठे।
गिनती में दोय हैं लाख चौंसट हजार तीन सौ बैठे॥

मैं नमन ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी दो लाख चौसठ हजार तीन सौ उपाध्याय साधू विराजमानाय अर्घं ॥५॥

आपके समोशरन में महाराज अवधि ज्ञानी बैठे।
गिनती में ग्यारह हजार पूजत मन मेरे। मैं नमन०।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधु ११ हजार विराजमानाय अर्घ ॥६॥

आपके समोशरन में महाराज मनः पर्य्यय ज्ञानी बैठे।
गिनती में एक हजार चार सौ और बैठे। मैं नमन०।

ॐ ह्रीं आपके समोसरन में मनः पर्य्ययः ज्ञानी एक हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥७॥

आपके समोशरन में महाराज वैक्रियक साधू बैठे।
गिनती में सोरा हजार चार सौ और बैठे। मैं नमन०

ॐ ह्रीं आपके समोसरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधू सोरा हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥८॥

आपके समोशरन में महाराज वादित्य रिद्धिधारी
गिननी में एक हजार चार सौ और बैठे। मैं नमन०

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी साधू एक हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥९॥

आपके समोशरण में महाराज अर्जका माता बैठीं।
अनत मती को दै कैं आद तीन लाख तीन हजार बैठीं॥
वन्दामी करों मैं आय वसु विध अर्घ धरूं।
तातें राग द्वेष कर नाश शान्ति भाव धरूं मैं॥

ॐ ह्रीं आपके समोसरन मे मातेश्वरी अर्जका विराजमान संख्या तीन लाख तीन हजार तिन तिन सबको अर्घं ॥१०॥

आपके समोशरन में छुल्लका माता बैठीं।
पाँच लाख की गिननी जान और नहीं बैठीं॥

इत्वाकार करूं० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता पांच लाख राजमान हैं तिन सब को अर्घं ॥११॥

आपके समोशरन में महाराज एलक छुल्लक बैठे।
तीन लाख की गिनती जान मेरे मन बैठे॥

इत्वाकार० ॐ ह्रीं आपके समोशरण में एलक छुल्लक तीन लाख विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

सुमतिनाथ जिनेन्द्र चिन्ह चकया चरनों में।
अव चल कूट तें मोक्ष गये हजार साधू साथ में॥

नमन० ॐ ह्रीं श्रीं सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अवचल कूट तें हजार मुनि सहिताय मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१३॥

आपके तीर्थ में महाराज दश साधू ऐसे भये ।
आठ प्रकार का सह उपसर्ग मोक्ष जाते भये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह अन्तः कृत केवली हो मोक्ष पधारे अर्घं ॥१४॥

आपके तीर्थ में महाराज दश साधू ऐसे भये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र स्वामी भये ॥

में नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दश साधू आठ प्रकार का उपसर्ग सह अहमेन्द्र भये अर्घं ॥१५॥

आपकी निर्वाण भूमि से महाराज अब चल कूट कहा ।
एक कोड़ा कोड़ी जान चौरासी कोड़ भया ॥
बहत्तर लाख सो जान इक्यासी हजार सात सौ रहै ।
निर्वान भयो महाराज सदा केवली हो सुख लहैं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपकी निरवान भूमि सम्मेद शिखर के अवचल कूट से एक कोड़ा कोड़ीं चौरासी कोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं ॥१६॥

श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र अरज सुन लीजिये ।
समोशरन सब संघ अरज चित दीजिये ॥
सकल तीर्थ के साधू अरजी सुन लीजिये ।
रिषभचन्द की अरजी चित्त में दीजिये ॥
जब लग मोक्ष न मेरो होवै भव भव मैं कही ।
समाधि सहित चारों आराधना मरन मेरौ सही ।१७।

॥ इत्यादि आशीर्वादः ॥

जयमाला दोहा।

अभिनंदन को मोच्च गये नव लाख कोड़ सागर जान।
वैजयन्त स्वर्ग से आपकें सुमतिनाथ जनम जान॥

पद्धड़ी छन्द।

सावन सुदी २ की तिथि जान मघा नक्षत्र पहुंचो सो आन।
मंगला देवी के गर्भ आय अयोध्या नगरी जानों सौ भाय।१।
राजा मेघ प्रभ पिता जान, तिनके घर वर्षे रतन आन।
देवन कीनों कल्याय सोय माता सेवा देवी से होय॥२॥
तिथि चैत्र सुदी ज्ञारस सु आय; प्रभु सुमतिनाथ ने जनम पाय।
माता मंगला प्रभु जनम जान; पिता मेघप्रभ हरष मान॥३॥
फिर चतुर निकाय के देव आय, प्रभु को गोदी में लियो उठाय।
फिर मेरु सुदर्शन पै सो जाय, अभिशेष कीन्हों अति हरष धार ४
फिर पहिराये आभरन सोय, सोंपे मात को साकेत आय॥
प्रभु के पग में चकुवा सो जान, सुवर्न समान शरीर जान।५।
ऊँचाई तीन सौ धनुष जान, चालीस लाख पूर्व आयु जान।
दश लाख पूर्व कुमार काल; इक्ष्वाकु वंस जानौ विशाल।६।
फिर कीनों राज जिनेश जान, मंडलेश्वर पद पायी महान।
उनईश लाख पूर्व राज कीन, बारो पूर्वांग और अधिक कीन ७।
जनम इस मरन तैं वैराग आय, राज लक्ष्मी सब ही छोड़ जाय।
वैसाख सुदी नौमी सो जान, मघा नक्षत्र पहुंचो सौ आन॥८॥

लौकान्तदेव निजोग पाय, फिर चतुरनि काय के देव आय।
अभयाकोरी पालकी सजाय जिनेन्द्र देव को लियो बैठाय।९।
कुटुंबी जन काँधे धरेय; फिर देवन ने कांधे धरेय।
अजुध्या नगरी के आम्र बाग; प्रियंग वृक्ष तर दई उतार।१०।
पूर्वान्ह समय दीक्षा सो धार, हजार राजा संग दीक्षा धार।
पंच मुष्ठन से केश लुंच कीन, बेला उपवास धरे प्रवीन।११।
फिर आए विजयपुर विषै सोय, पदम राजा आप सनमुख जु होय
गाय दुग्ध खीर आहार दीन, जहाँ पंचाचार भये प्रवीन।१२।
तप कीया प्रभु बीस वर्ष सोय, मौन सहित प्रभु का विहार होय।
फिर आए अयोध्या मनोहर बाग, प्रयंग नाम का वृक्ष भास १३
तिथि चैत्र सुदी चौदस सु आय, मघा नक्षत्र का समय होय।
बेला उपवास धरो जु सोय, पिछले पहर में ज्ञान होय।१४।
फिर चतुरन काय के देव आय, समोशरन रचना कराय।
दश योजन की रचना सो जान, बारा कोठा खांदे महान १५
फिर दिव्य ध्वनि खिरी जु सोय, भव्यन लागू भई सोय।
बारह पूर्वांग बीस वर्ष घाट, एक लाख पूर्व विहार पाट।१६।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, अब चल कूट पर पहुंचे आय
तब जानी आयु एक मास, कीनो जोग निरोध पास ॥१७॥
दिव्य ध्वनि को बंद कीन, समोशरन रचना भई विलीन।
तिथि चैत्र सुदी ज्ञारस सु आय, मघा नक्षत्र पहुंचो सो आय १८
प्रथम पहर दिन का सो आय, खड़गाशन से प्रभु मोक्ष पाय।

पुद्गल परमाणु बिखर जांय, शेष नख केश रहे सोय।१९।
एक हजार मुनि संग जाहिं, निरवान प्रभू का जानि सोहि।
देवन ने माया मई सोय प्रभुजी का शरीर रचो जो सोय २०
चन्दन कपूर अर्थी बनाय फिर अगनकुमार ने शीश नाय।
मुकटों से मुकट लागे टकराय, प्रज्वत अग्नि अर्थी जलाय।२१।
भूचर खेचर देवन जो सोय, सबही के मन में शोक होय।
इनके तीर्थ में अखंड धर्म, चालो सो रहो नहिं फर्क पर्म।२२।
कबहुं मुनि कबहूं केवली होय, कबहुं अर्जका कबहूं छुल्लका होय
एसो चलतो रहो धर्म सोय, श्रावक जन के मन हर्ष होय।२३।

घत्ता आडिल्ल छंद।

सुमतिनाथ भगवान की जो पूजा करै।
अभयनंद आचार्य कही हृदय धरै॥
पुत्र कलित सब होय धन और धान जी।
इच्छा जावें होय तुरत सब लीजिये॥
मन वचन काय सों पूजा जिनवर कीजिये।
रिषभचन्द को मोक्ष सौ निर्मल दीजिये।
आतम रस को चाख सो मन सा पूरिये॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ॥२४॥

दोहा।

जब लग इस संसार में मरन हमारा होय।
तब लग मुझ समकित सहित मरन समाधि होय॥

इत्यादि आशीर्वादः।

❀ अथ पदमप्रभ जिन पूजा ❀

सोरठा—पदम प्रभु महाराज मोरी सुध प्रभु लीजिये।
कीजे भव दधि पार और कछू इच्छा नहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री पदमप्रभ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

चामरा छंद।

नीर लैआओ सीयरो, महान मिष्ठ सार सौ।
आन शुद्ध गंध मेल वेस तीन धार सौ॥
पदमनाथ देव के पदार विन्द जान के।
पंच भाव हेतु मैं जजौं आनंद ठान के॥
ॐ ह्रीं श्री पदमप्रभ जिनेन्द्राय जलं ॥१॥

गौशीर कपूर लै आयकैं मलयागिर साथ घिसाय कैं।
हेम पात्र धारकें प्रभुजी के चरण चढ़ाइये॥
पदम० सुगंधं ॥२॥

तंदुल भले सुपाड वरन खंड विवर्जितं।
हेम थाल में धराय, चन्द्र क्रांति लनातं॥
पदम० अक्षतं ॥३॥

पंच वर्ण के प्रसून गंधता बड़ी वहै।
पाय पाय गंध भूर मग्नता अली गहैं॥
पदम० पुष्पं ॥४॥

क्षीर मोद काद बिन्दु शुद्ध पात्र में धरूं ।
भात्र को लगाय पाय चैन पाप को हरों । पदम० नैवेद्यं ५
धूम की ना लेश शुद्ध बातका कपूर की ॥
रत्न दीप में धराय अन्धकार दूर की । पदम० दीपं ६ ।
धूप दशांगी लै आय कैं कपूर की मिलाय कैं ।
धूप खेवन माहि खेय धूम की बढ़ाय कैं ॥
पदम० धूपं ॥७॥
जाम आम निम्बु बिजौर बादाम छुहारा ले आयकें ।
फल अनेक थार भर प्रभुजी को चढ़ाइकें ॥
पदम फल ॥८॥
नीर गंध अक्षतान पुष्प नैवेद्य लीजिये ॥
दीप धूप खारकादि अर्घ लै बनाइये ॥
पदम० अर्घ ॥९॥
सोरठा–विनती सुनियो देव शरन तुम्हारे आइयो ।
प्रभु इतनों जस लेहु जनम मरन मिटाइयो ॥

नाराच छंद

समोसरन को दर्स कै पदम प्रभु अब लोकिये ।
केवल ज्ञान सहित सो बारह सभा को देखिये ॥
नमन करूं अष्टांग मैं द्रव्य आठ से पूजहों ।
आतम अनुभव पायकैं मोक्ष लक्षमी पावहों ॥

ॐ ह्रीं श्री पदमप्रभ जिनेन्द्र केवली पंचकल्याण सहित समोसरन में विराजमानाय अर्घं ॥१॥

समोशरन में आपके गनधर महाराज पाइये।
वज्र्य चामर आदि है एक सौ ग्यारह पाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरण में वज्य चामर आदि १११ गनधराय नमः अर्घं ॥२॥

समोसरन में आपके सामान्य केवली पाइये।
बारह हजार आठ सौ गिनती इतनी पाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान्य केवली बारह हजार आठ सौ विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरण में आपके श्रुत केवली पाइये।
दो हजार तीन सौ गिनती इतनी ही पाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली दो हजार तीन सौ विराजमानाय नमः अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके सूत्र अभ्यासी पाइये।
दोय लाख उनहत्तर हजार गिनती जानिये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोसरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय दो लाख उनहत्तर हजार बाजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में आपके अवधि ज्ञानी पाइये।
दश हजार साधू बैठे गिनती इतनी ही पाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू दश हजार विराजमानाय अर्घ ॥६॥

समोशरन में आपके मनः पर्यय्य ज्ञानी पाइये।
गिनती में हैं दस हजार छह सौ पाइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोसरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू दश हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में आपके वैक्रिय रिद्धी साधू पाइये ।
सोरा हजार तीन सौ गिनती इतनी ही पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक ऋद्धि धारी साधु सोरा हजार तीन सौ विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में आपके वादित्य रिद्धी पाइये ।
गिनती में हैं नौ हजार और नहिं पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरम में वादित्य रिद्धि धारी साधू नौ हजार विराजमानाय नमः अर्घं ॥९॥

समोशरन में आपके अर्जका माता पाइये ।
चार लाख तीन हजार वन्दामि कह अर्घ दीजिये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मातेश्वरी अर्जका बाई चार लाख तीन हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके ऐलका छुल्लका पाइये ॥
गिनती में हैं पाँच लाख इच्छामि कह अर्घ दीजिये ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता पांच लाख ब्राजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक पाइये ।
गिनती में हैं तीन लाख इच्छामि कह अर्घं दीजिये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक तीन लाख विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरण में आपके एकत्र साधू पाइये ।
तीन लाख तीस हजार गिनती इतनी पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र साधू तीन लाख तीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

श्री पदम प्रभ जिनराज जी कमल चिन्ह पग में कहो ।
मोहन कूट तें मोक्ष गये तीन हजार आठ सौ साथनी ॥

नमन० ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर के मोहन कूट तें तीन हजार आठ सौ मुनि मोक्ष पधारे अर्घं ॥१४॥

आपके तीर्थ में प्रभु दस साधु ऐसे पाइये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली जानिये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दस साधू ऐसे भये हैं जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१५॥

तीर्थ आपके में प्रभु दस साधू ऐसे पाइये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ मे दस साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद प्राप्ताय अर्घं ॥१६॥

निरवान भूमि आपकी सम्मेद शिखर मोहन कूट तें।
निन्यानवे करोड़ सतासी लाख तेतालीस हजार सात सौ ॥

नमन० ॐ ह्रीं आकी निरवान भूमि सम्मेद शिखर के मोहन कूट तें निन्यानवे करोड़ सतासी लाख तेतालीस हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे अर्घं ॥१७॥

पदम प्रभु महाराज अरज सुन लीजिये ।
समोसरन के साधू विनती लीजिये ॥
सकल तीर्थ के साधू विनती लीजिये ।
रिषभचन्द घबड़ाय हस्तावलंबन दीजिये ॥
जब लग मोक्ष न मेरो होवै प्रभुजी सही ।
तब लग भव भव में मांगत हूँ सही ।

चारों आराधना आराध मरन मेरो रहै ॥
नमोकार जपते जपते तन छोड़ना पड़ै ॥

। इत्यादि आशीर्वादः ।

जयमाला ।

दोहा—मुक्ति भये सुमतिनाथ को नव्वे हजार क्रोट सागर जान ।
फिर कोसलापुरी में जन्मे पदम प्रभु भगवान ॥

पद्धड़ी छंद ।

माघ वदी छट को सो जान, चित्रा नक्षित्र पहुंचो आन ।
ग्रैवेयक से आये सुजान, सुसीमा देवी के गर्भ आन ॥
फिर चतुर निकाय के देव आय, कल्यान करी स्थान जाय ।
षटकुमारी करैं गर्भ सोध, छप्पन कुमारियाँ करैं सेव ।२।
फिर कार्तिक वदी तेरस सो जान, चित्रा नक्षत्र पहुंचो सो आन
माता सुसीमा ने जनम दीन, राजा पिता धारन सु कीन ।३।
फिर चारों प्रकार के देव आय; पांडुक सिला पर नहवन कराय
पहिराए आभूषन सब जिनाय, फिर माता गोद में धरे जिनाय ४
तिन का शरीर है लाल वर्ण, पग में कमल का चिन्ह जान ।
अढ़ाई सौ धनुष ऊँची काय जान, तीस लाख पूर्व की आयु जान ५
साढ़े सात लाख पूर्व साल जान, कुमार काल बीते सो जान ।
फिर कछु दिनन के बाद जान, पायौ राज नहिं हर्ष मान ॥६॥

मंडलेसुर पद पायो जिनाय, साड़े इकईश लाख पूर्व राज भोय
सोला पूर्वांग और अधिक जान, कीनी रक्षा पिता पुत्र जान ।७।
तिनको वंश इक्ष्वाकु आन, है उत्तम सब में सिरीमान ।
जनम स्मरण तें वैराग आन, लौकांतक आए हर्ष पाय ।८।
कार्तिक वदी तेरस तिथि आय, चित्रा नाक्षित्र पहुंचो सो आय ।
कोसंवी नगरी है महान, देवन कीनों कल्यान मान ॥९॥
निर्वती पालकी दई सजाय; प्रभु को पालकी में बिठाय ।
फिर कुटुंबी जन काँधे धराय, देवन ने लीनी फिर उठाय ।१०।
कोसलपुर आम्र बन मझार, प्रयंगु वृक्ष तर दई उतार ।
संध्या समय दीक्षा विचार, लीनी हजार राज के साथ ।११।
फिर बेला धर उपवास सोय, पूरो करी नेम आहार भी होय ।
मंगलापुर नगर में आये सोय, सोमदत्त राजा ने लये सोय ।१२।
पड़ गाहे गऊ दुग्ध खीर देय; देवन ने रतन वर्षा करेय ।
बेला धर धर पारने करेय; ऐसा करते २ छह मास होय ।१३।
तिथि चैत्र सुदी पूने सो होय, चित्रा नक्षित्र पहुंचो सो आय ।
कोसंवी नगर मनोहर बाग सोय; प्रयंग वृक्ष के तले होय ।१४।
बेला उपवास को नेम धार, शुक्ल ध्यान का लियो आधार ।
पिछलो पहर दिन को सो होय, केवल ज्ञान जगो प्रभु कें नो सोय १५
फिर चतुर निकाय के देव आय, समोशरन रचना कराय ।
साड़े नौ योजन विस्तार जान, बारा कोठा तामें रहान ।१६।

दिव्य ध्वनि खिर है जिनेश; चारों टेम ध्वनि खिरै अशेष ।
सोला पूर्वांग छह मास घाट, एक लाख पूर्व तक कर विहार ।१७।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, आनंद बड़ो सबको सुभाय ।
जब आऊ रही एक मास शेष दिव्य ध्वनि नहिं खिरेश ।१८।
सब समोशरन रचना विलाय, कर जोड़ खड़े देव मनुष्य आय
फागुन वदी आई चौथ सोय, चित्रा नक्षत्र पहुंचो सो होय ।१९।
पिछली पहर दिन की सो होय, देव विद्याधर जुर आए वोय ।
खडगासन से मोक्ष गये सोय, तीन हजार आठ सौ मुनी होय ।२०
पुद्गल परमानू खिरे जान, नख केश रहे शेष जान ।
देवन रची माया मई शरीर, मुकटों से अग्नि उठी गहीर ।२१।
इनके जी तीर्थ में अखंड धर्म, चलतो रहो नहिं कोई फर्क ।
कबहूँ मुनि कबहूँ केवली ज्ञान, कबहुं अर्जका कबहुं छुल्लक मान २२

दोहा--जो पूजैं पदमाप्रभु सो पावै सुख दैन ।
रिद्धि सिद्ध सब आन के रिषभचन्द सुख चैन ॥
ॐ ह्रीं श्री पदम प्रभु जिनेन्द्राय जयमाला महार्घं ॥२३॥

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय ।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधि होय ॥

। इत्यादि आशीर्वादः ।

❀ श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजा ❀

सोरठा—श्री सुपार्श्वनाथ भगवान आज काज मेरो करौ।
सुनौ अरज प्रभू आज भव बाधा मोरी हरौ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

ढार नन्दीश्वर पूजा।

खीरौ दधि को भर नीर कंचन के कलसा।
तुम चरनन देत चढ़ाय आवागमन नसा॥
श्री सुपार्श्वनाथ जिन देव चरनन बलहारी।
देव सिद्ध सिला के मध्य बैठन की बारी॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं॥१॥

मलयागिर और कपूर केसर संग घसौं।
प्रभु भव आताप मिटाय तुम चरनन पर सौं॥
श्री सुपार्श्व॰ सुगंधं॥२॥

तंदुल उज्वल धोय कनक थार में भर लाऊँ।
तुम सनमुख देऊं चढ़ाय, अक्षय पद पाऊँ॥
श्री सुपार्श्व॰ अक्षतं॥३॥

बेला मचकुंद गुलाब चम्पा चुन लाऊं।
जे काम बान कर नाश तुम ढिग भेंट धरूं॥
श्री सुपार्श्व॰ पुष्पं॥४॥

फैनी गूजा पकवान मोदक ले ताजे ।
कर क्षुधा रोग निर वार तुम सनमुख काजे ॥
श्री सुपार्श्व० नैवेद्यं ॥५॥
घृत में करपूर मिलाय दीपक में जारौं ।
कर मोह तिमिर को दूर तुम सनमुख वारौं ॥
श्री सुपार्श्व० दीपं ॥६॥
दश विध लै धूप बनाय तामै गंध मिला ।
तुम सनमुख खेऊं आय आठौं कर्म नसा ॥
श्री सुपार्श्व० धूपं ॥७॥
पिस्ता किसमिस बादाम श्रीफल लौंग सजा ।
जिन चरनन देव चढ़ाय पाऊं मोक्ष पदा ॥
श्री सुपार्श्व० फलं ॥८॥
लै जल गंधाक्षित पुष्प चरूवर जोर करौं ।
वर दीप धूप फल अष्ट लाकर अर्घ करौं ॥
श्री सुपार्श्वर्व० अर्घं ॥९॥

सोरठा—श्री सुपार्श्वनाथ जिनराय पंचकल्यानक के धनी ।
गरम जनम तप ज्ञान केवल पाशिव के धनी ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पंच कल्याण प्राप्तये अर्घं ।

नाराच छंद ।

समौशरन को दर्स के सुपार्श्वनाथ अवलोकिये ।
केवल ज्ञान के सहित बारा सभा को देखिये ॥

नमन करत अष्टाँग मैं आठौं द्रव्य से पूजिये ।
आतम अनुभव पायकें मोक्ष लक्ष्मी पाइ ॥
ॐ ह्रीं समोशरन स्थित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।

समोशरन में आपके गनधर महाराज पाइये ।
बल गनधर को आदि दै पंचानवै गनधर पाइये ।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में बल गनधर को आदि देय पंचानवे गनधर विराजमानाय अर्घं ॥१॥

समोशरन में आपके सामान केवली पाइये ।
ग्यारह हजार तीन सौ गिनती में इतने पाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली ग्यारह हजार तीन सौ विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में आपके श्रुत केवली सबरे पाइये ।
दो हजार तीन सौ गिनती इतनी ही पाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके आपके समोशवन में श्रुत केवलीं दो हजार तीन सौ विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में आपके सूत्र अभ्यासी पाइये ।
दो लाख चवालीस हजार नौ सौ बीस पाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी दो लाख चवालीस हजार नौ सौ बीस उपाध्याय विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके अवधि ज्ञानी साधू पाइये ।
नौ हजार गिनती तिन की और अधिक नहिं पाइये ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन अवधि ज्ञानी साधू नौ हजार विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में आपके मनः पर्य्यय ज्ञानी पाइये।
नौ हजार छह सौ गिनती सुदृष्टि तरंगनी देखिये॥

नमन० ॐ ह्रीं समोशरन में आपके मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू नौ हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में आपके वैक्रियक साधू पाइये।
पन्द्रह हजार एक सौ पचास आगम से जानिये॥

नमन० ॐ ह्रीं वैक्रियक रिद्धि धारी पन्द्रह हजार एक सौ पचास साधू विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में आपके वादित्य रिद्धि पाइये।
आठ हजार गिनती तिनकी आगम में बताइये॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धि धारी आठ हजार मुनि अर्घ ॥८॥

समोशरण में आपके अर्जका माता पाइये।
मीना को आदि दे तीन लाख तीन हजार पाइये॥
वंदामि करूं आपको अर्घ सबै देत हूं।
कल्याण कारी भावना सदैव में पात हूं॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में तीन लाख तीन हजार अर्जका सहिताय अर्घं ॥९॥

समोशरन में आपके छुल्लका माता पाइये।
पांच लाख गिनती में सबै मोक्ष मार्गी पाइये॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता पांच लाख विरासानाय अर्घं ॥१०॥

आपके समौशरन में ऐलक छुल्लक पाइये ।
तीन लाख गिनती है अर्घ सबै दीजिये ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एलक छुल्लक तीन लाख विराजमानाय अर्घं ॥११॥

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान जी साँतिया का चिन्ह है ।
प्रभास कूट तें मोक्ष गये हजार मुनी साथ है ॥

नमन० ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र प्रभास कूट तें हजार मुनि सहित मोक्ष पधारे अर्घं ॥१२॥

तीर्थ आपके में प्रभु दस साधु ऐसे पाइये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली हूजिये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दस साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली भये अर्घं ॥१३॥

आपके तीर्थ में दश साधू ऐसे पाइये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद पाइये ॥

नवन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद प्राप्तये अर्घं ॥१४॥

निरवान भूमि आपकी प्रभास कूट तैं गये ।
उनचास कोड़ा कोड़ी चौरासी कोड़ जानिये ॥
बहत्तर लाख सात हजार सात सौ व्यालीस मुनी ॥
सभी मोक्ष को गये सम्मेद शिखर तैं सुनी ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके निर्वान भूमि सम्मेद शिखर के प्रभास कूट ते उनचास कोड़ा कोड़ी चौरासी कोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ व्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिन को अर्घं ॥१५॥

सुपार्श्वनाथ भगवान जी अर्जी मोरी लीजिये।
समोशरन के साधू जी अर्जी चित में दीजिये॥
सकल तीर्थ के साधूजी अर्जी मोरी लीजिये।
विषमचन्द घबड़ाय है हस्तावलंवन दीजिये॥
मोक्ष न जब लग है नहीं तब लग मुझे भव भव में सही।
चारों आराधना आराध कर मरन समाधि होवै सही।

इत्यादि आशीर्वादः।

जयमाला-दोहा

पद्मप्रभ को मोक्ष गये नव हजार कोड़ सागर जान।
ग्रैवेयक स्वर्ग तें आयके भये सुपार्श्वनाथ॥

पद्धिड़ी छंद।

भादों सुदी छट जब तिथी आय विसाखा नक्षित्र पहुंचो सो आय
प्रथ्वी माता के गर्भ आय, काशीपुरी में देव आय॥१॥
माता की सेवा काज जान छप्पन कुमारी आई मान।
फिर जेठ वदी बारस सो आय विसाखा नक्षित्र लागो सो आय २
प्रथवी माता ने जनम दीन सुपरनिष्ठ पिता कहे प्रवीन।
फिर देवन आय कल्यान कीन पाँडुक शिला पधराय दीन।३।
सांतिया का चिन्ह पग में सुजान, बैडूर्य मणि हरत शरीर जान
दो सौ धनुष शरीर जान; वंश लक्षत सिरोमनी कहो प्रमान।४।

बीस लाख पूर्व की आयु जान, पाँच लाख पूर्व काल कुमार जान
सुरगन तें आये वस्त्र सोय, देवन संग क्रीड़ा करत होय ।५।
फिर राज कियो प्रभु ने जो सोय, मंडलेश्वर पदवी पाई होय।
राज किया चौदा लाख पूर्व, बीस पूर्वांग और अधिक खूब ।६।
वन लक्ष्मी विनास वैराग आय लौकाँतिक पहुंचे ततक्ष छाय।
तिथि जेठ सुदी बारस सो जान, विशाखा नक्षत्र पहुंचो सो जान ७
फिर चतुर निकाय के देव आय; मनोरमा पालकी दई सजाय।
तामें प्रभु को बैठार लीन, कुडंबी जन कांधे धरीन ॥८॥
फिर लीनी देवन हर्ष पाय, कोसंवीपुर आम्र वन जाय।
शिखरी वृक्ष तर दई उतार संध्या समय दीक्षा जो धार ।९।
राय हजार संग दीक्षा लीन, बेला उपवास धरे प्रवीन।
उपवास का पूरा नेम होय, भिक्षा के काज चलन होय ॥१०॥
पाटली खण्डपुर नगर जाय; महादत्त राय ने लियो पड़गाय
गो दुग्ध क्षीर आहार देय, देवन ने पंचाचार करेय ॥११॥
मौन लीनो दीक्षा बाद सोय, ऐसा करते नव वर्ष होय ॥
फाल्गुण वदी छटमी जो आय, विसाषा नक्षत्र पहुंचो सो आय १२
काशीपुरी मनोहर बाग सोय, शिखरी वृक्ष के तले होय।
पिछले पहर में जानो सोय बेला उपवास धरे जो होय।१३।
पिछले पहर केवल ज्ञान पाय फिर चतुर निकाय के देव आय
फिर समोसरन रचना कराय, नौ योजन का विस्तार भाय।१४।
बारा सभा के जीव होय, उपदेश सुनो सबने जो सोय।

बीस पूर्वांग नव वर्स घाट इक लाख पूर्व उपदेश पाट ।१५।
फ़िर भ्रमन करत मधुवन में आय; सबही जन के बहु हर्ष आय
फ़िर पहुंचे कूट प्रभास सोय, इक माह की बाकी आयु होय ।१६।
दिव्य ध्वनि को बंद कीन; समोसरन रचना विलीन ।
फाल्गुन वदी दोज आय सोय अनुराधा नक्षत्र जब पहुंचो सो आय
पहिलो पहर दिन को जो होय खड़गाशन मुक्ति भई सोय।
तिनके संग राय हजार मोक्ष पायो जिनने अनंत सौख्य ।१८।
पुद्गल पर मानू बिखर जाय नख केश रहे कछु और नाहिं ।
माया मई देवन रचो शरीर मुकटों से अग्नि भई प्रवीन।१९।
प्रगटी अग्नि अर्थी जलाय, देवन कीनों कल्यान माय ।
इनके तीर्थ में अखंड धर्म, चलतो रहो शतत मार्ग शर्म ।२०।

धत्ता–अडिल्ल छंद ।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान अरज मैं करत हूँ ।
दीजो आतम ज्ञान सो पायन परत हूं ॥
पूजत हूं मैं हर्ष धार मन में सही ।
मेरे को सुख आतम शान्ति में रही ॥
बार बार पुकार सो सुपार्श्वनाथ सों कही ।
रिषभचन्द पुकार पुकार सिर धर लई ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ॥२१॥

जब लग इस संसार में भ्रमण हमारा होय ।
तब लग मुझे सम्यक्त मरन समाधी होय ।२२।

इत्यादि आशीर्वादः ।

❀ श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा ❀

सोरठा—चन्दाप्रभ भगवान सिद्धि करौ पुरुषार्थ की।
मॉरी बुद्धि बढ़ाओ सिद्धि करौ सत्यार्थ की॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

ढार--नन्दीश्वर।

गंगा द्रह निरमल नीर कंचन कलश भरा।
तुम चरन चढ़ाऊं वर वीर मैटो जनम जरा॥
श्री चन्द्रप्रभ जिनराय चरनन चन्द्र दिपै।
मैं पूजों मन वच काय संचित कर्म खिपै॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनाय जलं॥१॥

चन्दन कर्पूर विसाय केशर संग धरौ।
प्राशुक नीर गहीर तन की ताप हरौ॥
श्री चन्द्र० सुगंधं॥२॥

तंदुल अक्षत शुचि लाय सुन्दर मन प्यारे।
किये पुंज मनोहर लाय तुम पद तल धारे॥
श्री चन्द्र० अक्षतं॥३॥

लै गुलाब चमेली फूल वेला अति प्यारे।
कर काम बान को नाश जिन चरनन में डारे॥
श्री चन्द्र० पुष्पं॥४॥

लै भाँति भांति पकवान सुरससद्य बने ।
पूजों श्री जी के पांव पूजत विथा हने ॥
श्री चन्द्र० नैवेद्यं ॥५॥

रतनन की दीप बनाय तुम ढिग जोवत हों ।
सब कर्म व्यथा नश जाय यह वर माँगत हों ॥
श्री चन्द्र० दीपं ॥६॥

अगर तगर कुटवाय मलयागिर लाओ ।
धूप दशांग बनाय जिन चरनन में खेओ ॥
श्री चन्द्र० धूपं ॥७॥

बादाम सुपारी ल्याय श्रीफल मन भावन ।
तुम पद तल देहुं चढ़ाय पूजों मैं शिव पावन ॥
श्री चन्द्र० फलं ॥८॥

जल फल आठौं द्रव्य पुनीत लेकर अर्घ करौं ।
पूजों अष्टम जिन मीत अष्टम अवनि वरौं ॥
श्री चन्द्र० अर्घं ॥९॥

सोरठा—शिव वासी प्रभू शिव सुखी सुखदायक भरपूर ।
मोरे हृदय में वसौ पांच कल्यान से पूर ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ के गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण कल्याणक प्राप्ताये अर्घं ॥१॥

अडिल्ल छंद ।

श्री चन्दाप्रभ महाराज समौशरन में विराजहीं ।
केवल ज्ञान प्रकाश उद्योत करावहीं ॥

नमन करूं अष्टाँग मैं मन वच काय सौं।
आठौं द्रव्य सो धौय अष्टम भू में जा बसौं ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहित समोशरर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में आपके गनधर विराजहीं ।
दत्तसेन को आदि तेरानवे विराजहीं ॥

नम० ॐ ह्रीं आपके समोशरन मे दत्तसेन गनधर को आदि तेरानवे गनधर अर्घं ॥३॥

समोशरन में आपके सामान केवली विराजहीं ।
दश हजार की गिनती तिनकी पावहीं ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली दस हजार विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके श्रुत केवली विराजहीं ।
दो हजार की गिनती सुदृष्टि तरंगनी गाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली दो हजार विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में आपके सूत्र अभ्यासी विराजहीं ।
दोय लाख दश हजार चार सौ विराजहीं ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय दो लाख दश हजार चार सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में आपके अवधि ज्ञानी पाइये ।
गिनती में आठ हजार जिनागम में गाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में आठ हजार अवधि ज्ञानी साधू विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में आपके मनः पर्य्यय ज्ञानी पाइये ।
गिनती में तीन हजार हैं अधिक नहिं पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू तीन हजार तिन को अर्घं ॥८॥

समोशरन में आपके वैक्रियक साधू पाइये ।
गिनती में चार हजार हैं आगम देख बताइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरव में वैक्रियक रिद्धि धारी चार हजार साधू विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में आपके वादित्य रिद्धि धारी पाइये ।
गिनती सात हजार छह सौ साधू पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धि धारी साधू सात हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके एकत्र साधू पाइये ।
अड़ाई लाख की गिनती तिनकी पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संघ के साधू एकत्र अड़ाई लाख विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में आपके मोक्ष साधू पाइये ।
दोय लाख चौतीस हजार गिनती पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातो संग में से मोक्ष जाने वाले साधू दो लाख चौतीस हजार तिन सबको अर्घं ॥१२॥

समोशरन में आपके माता अर्जका पाइये ।
धारना वरून को आदि दे तीन लाख पाइये ॥

नमन० (वंदामि) ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मातेश्वरी अर्जका आई तीन लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में आपके छुल्लका माता त्राजहीं ।
पांच लाख की गिनती आगम में पावहीं ॥

नमन० इच्छामि० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता पांच लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक पाइये ।
तीन लाख की गिनती जिनकी है मोच्च मार्गी पाइये ॥

नमन० इक्षाकार० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक तीन लाख विराजमानाय अर्घं ॥१५॥

श्री चन्द्रप्रभ भगवान चन्द्र चिहन पग पाईये ।
ललित कूट तें शिव गये संग हजार मुनि पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर के ललित कूट तें श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र एक हजार मुनि संग मोक्ष पधारे अर्घं ॥१६॥

चन्द्रप्रभ भगवान भूमि निर्वान की ।
ललित कूट तें सिद्ध भये सब साधु की ॥
नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर कोड़ असी लाख है ।
चौरासी हजार पांच सौ मुनिवर गिनती में कहे ॥

नमन० ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र की निर्वान भूमि सम्मेद शिखर के ललित कूट से नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर कोड़ असी लाख चौरासी हजार पांच सौ मुनि मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं ॥१७॥

चन्द्रप्रभ भगवान अरज सुन लीजिये ।
समोशरन के साधू अरजी लीजिये ॥

सकल तीर्थ के साधू अरजी लीजिये ।
रिषभचन्द घबडाय हस्तालंवन दीजिये ॥
जब लग मोक्ष न मोकों होवे सही ।
तब लग भव भव में समाधी होती रहे ॥

। इत्यादि आशीर्वादः ।

सातवें भगवान को मोक्ष गये नौ सौ क्रोड़ सागर जान ।
चन्द्रप्रभु आते भये मध्य लोक के माह ॥

पद्धड़ी छंद।

तिथि चैत्र वदी पांचे सो आय, जेष्ठा नक्षत्र पहुंचो सो आन।
वैजयंत विमानहि छोड़ आय, रानी सुलक्षना के गर्भ आय।१।
फिर चतुर निकायी देव आय, कल्यानक कर निज थान जाय
चन्द्रपुरी नगरी में सोय, महासेन राजा पिता होय ।२।
पौष वदी ज्ञारस सो आय, अनुराधा नक्षत्र पहुंचो आय ।
माता सुलक्षना ने जन्म दीन, जन्म महोत्सव देवन सु कीन।३।
इन्द्रानी जाय प्रसूत थान, प्रभु को उठाय लै गोद मान ।
पाँडुक शिला पर नहवन कोन वस्त्रा भूवन पहिराय दीन।४।
पग चिन्ह चन्द्रमा कहो सोय, तन वर्ण सुकल प्रभु का जु होय
ऊँचाई डेढ़ सौ धनु प्रमान इक्ष्वाक वंश में जन्म मान ।५।

दश लाख पूर्व की आऊ जान, ढाई लाख पूर्व कुमार आन।
साड़े छह लाख पूर्व राज जान, चौवीस पूर्वांग और अधिक मान ६
इतने दिन राज्य कियो जिनाय, महामंडलेश्वर की पदमी सो पाय
न्याय नीति से करह राज, सब पुत्र समान प्रजा को सुपाल ।७।
बिजली देख वैराग आय, लौकांतिक देव ततच्छ आय ।
तिथि पौष सुदी परमा सो आय अनुराधा नक्षत्र पहुंचो सु आय ८
फिर चतुर निकायी देव आय, मनोहर पालकी लई सजाय।
कुटुंबी जन कांधे धराय, फिर देव चले लै कंधा लगाय ।९।
चन्द्रपुरी आम वन मझार, नाग वृक्ष तले दीनौ उतार ।
संध्या समय दीक्षा सो धार, संग में एक हजार राय ॥१०॥
बेला उपवास धरो जिनाय, फिर नियम पूर्ण पर चर्य्या कराय
पदम खंडपुर पहुंचे जिनाय; पधराय लिये सोमदेव राय ११
गो दुग्ध खीर आहार दीन, बेला अंतर से आहार लीन ।
तीन माह संयम धरे जिनाय, मौन सहित भ्रमन कियो जिनाय १२
चन्द्रपुरी मनोहर वन मझार, नाग वृक्ष तल प्रभु ध्यान धार
फालगुण कृष्ण सातें सो आय, अनुराधा नक्षत्रि सो पहुंचो आय १३
दिन के पिछले पहर जान, भयो केवल ज्ञान प्राप्त आन ।
चार घातिआ नाश करो जिनाय, तब चराचर पदार्थ दशो सुआय
फिर चतुर निकाय देव आय, समोशरन रचना कराय ॥१४॥
साड़े आठ योजन विस्तार जान बारा कोठा तामें रचान ।१५।

चौबीस पूर्व तीन माह घाट: इक लाख पूर्व विहार वाट ।
सब देशन में प्रभु कर विहार भव्यन को लागो उपदेश सार।१६।
फिर भ्रमण करत मधुवन में आय सबही के मन में हर्ष आय ।
आयु को जानी अल्प काल, ललत कूट पै गये हाल ।१७।
इक माह आयु बाकी सो जान, तब दिव्य ध्वनि खिरनबंद जान
फाल्गुन वदी सातें सु आय, जेष्ठा नक्षत्र पहुंचो सो आय ।१८।
दिन के प्रथम पहर निर्वान होय खड़गाशन से प्रभु मोक्ष होय।
संग में हजार मुनि मोक्ष होय, नर देव खड़े सब हाथ जोड़।१९।
पुद्गल परमाणु बिखर जाय नख केश बाकी रहाय ।
देवन ने माया मई शरीर चन्दन कपूर अर्थी करीर ॥२०॥
फिर अगनकुमार ने शीश नाय, प्रगटी अग्नि अर्थी जलाय ।
इनके तीर्थ में धर्म सोय चलतो रहो नहिं कमी होह ।२१।

घत्ता सोरठा ।

चन्द्रनाथ महाराज दीन जान करुना करौ ।
दीनबंधु जिनराज भव सागर से पार कर ॥२२॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ।

दोहा—जब लग इस संसार में भ्रमण हमारा होय ।
तब लग मो सम्यक्त सहित मरण समाधि होय ॥

इत्यादि आशीर्वादः ।

❀ श्री पुष्पदन्त जिनपूजा ❀

सोरठा–पुष्पदंत महाराज कर्म कलंक निवार कैं।
सों प्रभु हमको तार सेवक अपनों जानकैं॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

चीरो दधि उज्वल नीर प्राशुक गंध भरा।
भर कंचन झारी धीर दीनी धार धरा॥
श्री पुष्पदंत महाराज चरनन सेव करूं।
मेरी मेटो हो भव ताप चरनन पुज करूं॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जलं॥१॥

चन्दन केशर करपूर मिश्रित गंध धरौ।
शीतलता के हित देव भव आताप हरौ॥
श्री पुष्प॰ सुगंधं॥२॥

लै तंदुल अमल अखंड थारी पूर्ण भरौ।
अक्षय पद पावन हेतु हे प्रभु व्यथा हरो॥
श्री पुष्प॰ अक्षतं॥३॥

लै कमल केतकी फूल चम्पा काम हरैं।
प्रभु सुनौ हमारी टेर कामकला भागै॥
श्री पुष्पं॥४॥

नैवेद्य सद्य बनवाय देखत मन मोहे ।
मम क्षुधा रोग नस जाय पूजत सुख पावै ॥
श्री पुष्प० नैवेद्यं ॥५॥

हो जगमग २ ज्योति रत्नों की जारी ।
हटे मोह अंध की पीर आतम ज्यौति जगै ॥
श्री पुष्प० दीपं ॥६॥

लै अगर कपूर सुगंध चन्दन गंध महां ।
खेवत हूँ प्रभु ढिग आन, आठौं कर्म दहा ॥
श्री पुष्प० धूपं ॥७॥

बादाम सुपारी लेय केला नारंगी ।
जिन चररन देहु चढ़ाय शिव पुरकी बारी ॥
श्री पुष्प० फलं ॥८॥

जल चन्दन अक्षित पुष्प नेवज दीप जला ।
लै धूप फलादि लयाय पूजो अर्घं मिला ॥
श्री पुष्प० अर्घं ॥९॥

सोरठा—श्री पुष्पदंत महाराज पंचकल्याणक शोभते ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पदारथ पायकें ॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पंच कल्याण प्राप्तये अर्घं ।

सुन्दरी छंद ।

श्री पुष्पदंत महाराज विराजे जू ।
केवल ज्ञान प्रकाश करेय जू ।

समोशरन के मध्य विराजे जू ।
भव्यन को उपदेश करेय जू ॥
मैं नमन करूं अष्टांग प्रभू को अबै ।
आठौं द्रव्य सो पूजत मैं अबै ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्प जिनेन्द्राय केवल ज्ञान सहित समोशरन में विराजमानाय अर्घं ॥१॥

समोशरन में विराजे महाराज जी ।
विदर्भ आदि गनधर कहाय जी ॥
अठासी गनधर विराजैं सबै ।
नमन पूजन मैं करों सबै ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में विदर्भ गनधर को आद दै अठासी गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में आपके विराजे जी ।
सामान केवली सात हजार जी ॥
पाँच सौ केवली और विराजही ।
नमन पूजन सबहि करावी ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली साडे सात हजार विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में आपके विराजही ।
श्रुत केवली डेढ़ हजार ही ॥
नमन करूं पंचाँग सब को अबै ।
आठ द्रव्य सो पूजत मैं सबै ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली डेढ़ हजार विराजमानाय अर्घं ४

समोशरन में आपके महाराज जी ।
सूत्र अभ्यासी शिक्षक विराजे जी ॥
एक लाख हैं पैंसठ हजार जी ।
पाँच सौ अधिक और विराजही ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी एक लाख पैंसठ हजार पांच सौ विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समौसरन में आपके महाराजजी ।
अवधि ज्ञानी साधू विराजे जी ॥
आठ हजार चार सौ जानिये ।
नमन पूजन सब को कीजिये ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू आठ हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समौसरन में आपके विराजहीं ।
मनः पर्य्यय ज्ञानी मन की सब बतावहीं ।
छह हजार और पांच सौ जानिये ॥
नमन पूजन सबको करानी चाहिये ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू साढ़े छह हजार विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समौशरन में आपके महाराजजी ।
वैक्रियक रिद्धिधारी साधू विराजहीं ॥
गिनती तीन हजार और चार सौ ।
नमन पूजन सबकी कराव हों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी तीन हजार चार सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समौशरण में वादित्य रिद्धि साधू विराजहीं।
सात हजार और दो सौ विराजहीं ॥

वमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी साधू सात हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में आपके महाराज जी।
सातौं संग के साधू विराजे जी॥
गिनती है दो लाख तिन की सवै।
नमन पूजन०

ॐ ह्रीं आपके समोशरण में सातों संग के साधू एकत्र दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके महाराज जी।
मोक्ष साधू सबरे विराजे जी॥
एक लाख उन्यासी हजार हैं।
छह सौ और अधिक बताये हैं॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष जाने वाले साधू एक लाख उन्यासी हजार छह सौ मुनि विराजमानाय अर्घं ॥११॥

आपके समोशरन में अर्जिका माता विराजहीं।
तीन लाख और असी हजार प्रमाण है॥

वंदामि० ॐ ह्रीं आपके समोशरण में अर्जिका माताजी तीन लाख अस्सी हजार विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में आपके छुल्लका माता विरोजहीं।
चार लाख की गिनती है इच्छामि कह अर्घ चढ़ावही ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता चार लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक विराजहीं।
गिनती है दो लाख इच्छामि कह अर्घ चढ़ावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

पुष्पदंत महाराज मगर का चिन्ह जी।
शंभू कूट तें हजार मुनी संग गये मोक्ष जी ॥

नमन० ॐ ह्रीं शंभू कूट तें हजार मुनि संग सहित श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घं ॥१५॥

आपके तीर्थ में महाराजजी दश साधू ऐसे कहाय जी।
आठ प्रकार उपसर्ग सहके सबै अंतः कृत केवली भये जी ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे तिन को अर्घं ॥१६॥

तीर्थ आपके में महाराजजी दश साधू ऐसे कहाये जी।
आठ प्रकार उपसर्ग सह के अहमेन्द्र पद पायजी ॥

ॐ ह्रीं आदके तीर्थ में दश साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अनुत्तर विमान में अहमेन्द्र भये अर्घं ॥१७॥

तीर्थ आपके में महाराजजी सामान केवली नव्वे विराजे जी।
अननुबंध अनेक विराजही नमन पूजन सब को करते ही ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में नव्वे अनुबंध केवली भये और अननुबंध जितने भये तिन सबको अर्घं ॥१८॥

तीर्थ आपके में महाराजजी मोक्ष साधू जितने होंय जी ।
नमन करूं अष्टांग सब को अवै आठ द्रव्य सों पूजत मैं सवै

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधु मोक्ष पधारे होवें तिन सबको अर्घं ॥१९॥

तीर्थ आपके में महाराज जी निरग्रंथ दिगम्बर जितने विराजैं जी
नमन करूं पंचाग सबको अवै आठ द्रव्य सो पूजौं मैं सवै

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निर्ग्रन्थ साधू विराजे हों उनको अर्घं ॥२०॥

तीर्थ आपके में महाराजजी अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका ।
वंदामि इच्छामी मैं करूं आठ द्रव्य का अर्घ सबको धरूं ।

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका जितने हों तिन सबको अर्घं ॥२१॥

निरवान भूमि है सुप्रभ कूट जी मोक्ष गये वहाँ से साधूजी ।
एक कोड़ा कोड़ी जानिये । निन्यानवे लाख सात हजार मानिये
चार सौ असी साधू और हैं नमन पूजन सबकी करात हैं ।

ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर के सुप्रभु कूट वें एक कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ असी साधु मोक्ष पधारे अर्घं ॥२२॥

श्री पुष्पदंत प्रभू महाराज जी ।
मोरी विनती सुनिये आपजी ॥
सकल तीर्थ के साधू महाराज जी ।
अरजी चित में दीजे आप जी ॥
रिषभचन्द ब्रह्मचारी घबड़ात है ।

हस्ता लंवन दीजे आप है ॥
जब लग मोक्ष न मीरों होय है ।
तब लग भव भव में वर मांग है ॥
चारों आराधना आराध के मैं प्रभु ।
मरते समय समाधि लों प्रभु ॥
नमोक्कार को जपते जाय है ।
पुद्गल को छोड़ आतमा चले जाय हैं ।

इत्यादि आशीर्वादः ।

जयमाला ।

दोहा—आठवें भगवान को मोक्ष गये नव कोड़ सागर जान ।
बाद में जन्म लीन आयके श्री पुष्पदन्त भगवान ॥

पद्धड़ी छंद ।

तिथि फागुन वदी नौमी सुजान, मूल नक्षत्र पहुंचो सो आन ।
माता रामा के गर्भ आय, देवन कीनों कल्यान आय ॥१॥
किष्कंधो नगरी कही बखान, सुग्रीम पिता राजा सो जान ।
तिथि अगहन सुदी परमा सो जान मूल नक्षत्र पहुंचो सो आन २
रामा देवी ने जनम दीन, सुग्रीम पिता आनंद कीन ।
फिर चतुर निकाय के देव आय, प्रभु को उठा लै चले भाय।३।
पांडुक शिला अभिशेष कीन, कपड़ा गहना पहराय दीन ।
जिन शुकल वर्ण शरीर जान, पग चिन्ह मगर का कहो बखान ४

सौ धनुष शरीर ऊँचाई जान, दो लाख पूर्व की आऊ मान।
पचास हजार पूर्व कुमार जान, वंश इक्ष्वाक में जनम जान।५।
फिर राज पाट बांदो सिरान, पचास हजार पूर्व भये जान।
और अठारस पूर्वांग अधिक जान, इतने दिन राज्य कीयो जान ६
महामंडलेश्वर पदवी सुजान सबही पर करुणा भाव मान।
उल्का पात देख वैराग्य आय, लौकांतिक देव पहुंचे सु आय ७
तिथि अगहन सुदी परमा सुजान अनुराधा नक्षत्र पहुंचो सो आन
फिर चतुर निकायिक देव आय सूर्यप्रभा पालकी लई सजाय।८।
प्रभु को बैठार पालकी उठाय, आकाश देव लै चले आय।
किष्कंधापुरी आम्र वन मझार, शाल वृक्ष तर दीनो उतार।९।
संजा समय दीक्षा धरेय, राजा हजार संग तप करेय ।
बेला उपवास लै धरो ध्यान; नेम पूरा कर इच्छा करान।१०।
चरिया को चले श्री जिनाय, संकेत नगर पहुंचे सु जाय।
राजा पहुप पड़ गाय सोय, गौ दुग्ध खीर का आहार होय ११
बेला उपवास पारना करेय, ऐसा करते चार मास होय।
किष्कंधापुर के बाग आय, मनोहर वन का नाम आय।१२।
तिथि कार्तिक चौदस आई सोय, मूल नक्षत्र पहुंचो तबै सोय
शाल वृक्ष तलै प्रभु ध्यान लीन, बेला उपवास करे प्रवीन।१३।
पिछलो पहर दिन को सो होय, केवल ज्ञान प्रभु को प्रगट होय
फिर चतुर निकाय के देव आय; शुभ समोशरन रचना कराय १
आठ योजन का विस्तार जान, बारह कोठा तामै रहाय।

दिव्य ध्वनि प्रभु की खिराय, भव्यन को लागू उपदेश भाय १५
अठाईस पूर्वांग चार माह घाट, एक लाख पूर्व बिहार वाट।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सब जीवन के आनंद पाय १६
आयु एक मास को रही जान; सुप्रभ कूट पै गये भगवान।
मन वचन काय की क्रिया बंद समोशरन रचना मिटंत।१७।
भादों वदी आठें सो आय, मूल नक्षत्र पहुंचो सो आय।
पिछलो प्रहर दिन का सो होय, खड़गासन से मुक्ति होय।१८।
प्रभु संग राय हजार मोक्ष, पायो निजातम अनन्त सौख्य।
पुद्गल परमानु बिखर जांय, रहे केश नख और सब विलाय १९
देवन ने माया रच शरीर, चन्दन कपूर अर्थी करीर।
फिर अगनकुमार ने नाय शीश अगनी प्रगटी भई भसम अर्थीस२०
इनके तीरथ में धर्म बिछोह, पल्ल पाव धर्म का रहो बिछोह।
जैन धर्म चलो नाहिं सोय, इतने दिन अधर्म रहो सो होय।२१।

घत्ता-सोरठा।

पुष्पदन्त महाराज जनम रोग निवारिये;
आयो तुम दरबार तुम सहाय सब जग विषैं॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं।

रिषभचन्द गुन गाय पुष्पदन्त महाराज कै।
भव भव होय सहाय समाधि मरन होता रहे॥

इत्यादि आशीर्वादः।

❀ श्री शीतलनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा—शीतलनाथ भगवान रिद्धि अनूपम दीजिये ।
पाऊं स्वगुन महान, वास मिटै संसार का ॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट ।

गीतका छंद ।

नित तृषा पीड़ा करत अधिको दाव अब के पाइयो ।
शुभ कुंभ कंचन जड़त गंगा नीर भर ले आइयो ॥
तुम नाथ शीतल करो सीतल मोह भव को ताप सों ।
मैं जजों पद जुग जोडकर मो काज सरसी आप सों ।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलं ॥१॥

जाको महक सों नीम आदिक होत चन्दन जानिये ।
सूक्ष्म घिस के मिलाय केशर भर कटोरी आनिये ॥
तुम• ॐ ह्रीं• सुगधं ॥२॥

मैं जीव संसारी भयो अर मरौ ताको पारना ।
प्रभु पास अक्षत लाय धारे अक्षय पद के कारना ॥
तुम अक्षतं ॥३॥

इन्ह मदन मोरी शक्ति थोरी रहो सब देह छायकें ।
ता नाश कारन सुमन ल्यायो महाशुद्ध चुनाय कें ॥
तुम• पुष्पं ॥४॥

क्षुधा रोग मोरें पिड लागो देत मॉगेना धरी ।
ताके नशावन काज स्वामी लै नई वेद आंगे घरी ।
तुम नैवेद्यं ॥५॥
मिथ्या तिमर अज्ञान अंधा कार कर रक्खा मुझे ।
निज पर सु भेद प्रधान कारन दीप लायो मैं अवै ॥
तुम० दीपं ॥६॥
जे अष्ट कर्म महान अतबल घेर मुझ चेरा किया ।
तिन की मैं नाश विचार के ले धूप प्रभु ढिग खेइया ॥
तुम० धूपे ॥७॥
शुभ मोक्ष मिलन अभिलाष मेरे रहत कब की नाथ जू।
फल मिष्ट नाना भरी थारी प्रभु के चरन चढ़ाय जू ॥
तुम० फलं ॥८॥
जल गंध अक्षित फूल नेवज दीप धूप फल ले महा ।
सुन्दर अर्घ बनाय के प्रभु चरनन के ढिग धर महा ॥
तुम० अर्घ ॥९॥
मिटै चेचक रोग पूजन सों शीतलनाथ की ।
चौर ढोर तबला बजावें हारमोनिया धुन लायकी ॥
तुम० ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय पंचकल्याण प्राप्ताये अर्घं ।

ढार नन्दीश्वर पूजन की ।

शीतलनाथ महाराज समोशरन में बैठे ।
लहैं केवल ज्ञान प्रकाश बारह सभा में बैठे ॥

मैं नमन करूं अष्टांग पूजों वसु विधि सों ।
आतम अनुभव में पाग मोक्षपुरी जासों ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहित समोशरन स्थिताय अर्घं ॥१॥

समोशरन में महाराज गनधर सब बैठे ।
अनागार को आदि देय इक्यासी बैठे ॥

मैं नमन करूं पंचांग० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अनागार को आदि देइ गनधराय अर्घं ॥२॥

समोशरन में महाराज केवली सब बैठे ।
गिनती में सात हजार सुदृष्टि तरंगनी देखे ॥

मैं नमन करूं अष्टांग० ॐ ह्रीं समोशरन में सात हजार केवली स्थिति अर्घं ॥३॥

समोशरन में महाराज श्रुत केवली बैठे ।
एक हजार चार सौ द्वादशांग में बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं समोशरन में स्थित एक हजार चार सौ श्रुत केवली जिनको अर्घं ॥४॥

समोशरन में महुाराज सूत्र अभ्यासी बैठे ।
दीक्षा लेते प्रभु पास उनसठ हजार दो सौ बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं समोशरन मे सूत्र अभ्यासी उपाध्याय साधू उनसठ हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरण में महाराज अवधि ज्ञानी बैठे ।
सात हजार दौ सौ जान और नहिं बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं समोशरन में आवद्य ज्ञानी साधू सात हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में महाराज मनः पर्य्यय ज्ञानी बैठे।
सात हजार पांच सौ जान सुदृष्टि तरंगनी देखै ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं समोशरन में स्थित मनः पर्य्यय साधू सात हजार पांच सौ विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में महाराज वैक्रियक साधू बैठे।
गिनती में बारह हजार ग्यारह प्रकार के होते ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं समोशरन स्थित वैक्रियक रिद्धिधारी साधू बारह हजार विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में महाराज वादित्य रिद्धिधारी बैठे।
पाँच हजार सात सौ जान वाद विवाद में जीते ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादि रिद्धिधारी साधू पांच हजार सात सौ विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में महाराज एकत्र साधू बैठे।
हैं सातों संग के माहि एक लाख सब बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र साधू सातों संघ के एक लाख हैं तिनको अर्घं ॥१०॥

समोशरन में महाराज मोक्ष साधू बैठे।
असी हजार छै सौ जान एकत्र में से बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष जाने वाले साधू असी हजार छह सौ हैं सबको अर्घं ॥११॥

समोशरन में महाराज अर्जिका माता बैठीं।
धारना को दे आदि तीन लाख असी हजार बैठीं ॥

वंदामि करूं अर्घ देऊं मन में हर्ष लाकै ।
मिलै शान्ति मुझे बकशीस आतम अनुभव में ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में माता अर्जका तीन लाख अस्सी हजार विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में महाराज ऐलक छुल्लक बैठे ।
दो लाख गिनती जान कर अर्घ देतै ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में महाराज छुल्लका माता बैठीं ।
चार लाख की गिनती जान इच्छामि कह अर्घ देते ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता चार लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

दशवें तीर्थंकर महाराज कल्पवृक्ष पग में ।
विद्वत कूट तैं मोक्ष पधारे हजार साधू संग में ॥
शीतलनाथ महाराज शीतलता देते ।
चेचक का जिस के रोग मोतीझला ऐते ॥
फुंसी वाले सब रोग गंदोदक लग जाते ।
इसकी ऐसी विधि होय सूर्य किरण आते ॥
शीतलनाथ प्रतिबिंब पांडुक शिला पर धारे ।
थाली में चन्दन से बनाय प्रतिमा पधरावै ॥
ऊपर से तीन छत्र बाँध हांत में चौर लेवै ।
दसों दिशा के दश कल्प प्रतिमा घेर लेवै ॥

शिर पर धारा को छोड़ एक सौ आठ गिन लेवै।
फिर मंत्र पढ़ै एक सौ आठ धूप घड़े में खेवै॥
(मंत्र - ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ शीतल कराये स्वाहा।)
धूप खेय चढ़ावै अर्घ पूजे वसु विधि सों।
दीपक की ज्योति लगाय ढोरे चौर विधि सों॥
फिर पूजन करै समस्त दश दिन ऐसी विधि सों।
गंधोदक लैके जाय रोगी को लागत क्रम २ सौं॥
रोग पलाय रोगी मन भावत रोग दूर हो जाय।
दश पूजन व्रत रावै चौबीसो विधान कराय॥
दश व्रती को भोजन देवै अतिशय धवल में देख।
भूवलय में देख मैं नमन करूं अष्टाँग॥
पूजौं वसु विधि सों शीतलता शांती होय।

एह विध पूजन सो ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ विद्वत कूट तें हजार मुनि सहित मोक्ष पधारे तिन सहित अर्घं ॥१४॥

आपके तीर्थ में महाराज दश साधू ऐसे भये।
आठ प्रकार उपसर्ग सह मोक्षपुरी जाते भये॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे जिनको अर्घं ॥१५॥

आपके तीर्थ में महाराज दश साधू ऐसे भये।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पदवी पाते भये॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र हुए अर्घं ॥१६॥

आपके तीर्थ में महाराज अनुवध केवली बैठे।
चौरासी गिननी होय अननुवध और बैठे।

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध मान जो एक केवली को निरवान हुए उस समय में दूसरे को केवल ज्ञान होवे (अननुवध माने) अन्य समय में केवल ज्ञान होवै अनुवध केवली चौरासी अननुवध केवलो बहुत ऐसे सब केवली को अर्घं ॥१७॥

आपके तीर्थं में महाराज मोक्ष साधू होते हैं।
तिनको नमन करूं अष्टांग पूजों वसु विधि से॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में जितने साधू मोक्ष भये होवें तिन सब को अर्घं ॥१८॥

आपके तीर्थ में महाराज दिगम्वर निर्ग्रंथ बैठे।
तिनको नमन करूं पंचाग पूजौ वसु विधि से॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्वर निरग्रथ साधू हों तिन सबका अर्घं ॥१९॥

आपके तीथ में महाराज अर्ज़का ऐलक छुल्लक हों।
छुल्लका माता जितनो हों वंदामि इच्छामि अर्घ धरूं।

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका माता जितनी हों तिन सबको अर्घं ॥२०॥

निर्वान भूमि महाराज विद्युत कूट सो है।
ताही सै मोक्ष पधार अठारा कोड़ा कोड़ी है॥
व्यासी कोड़ बत्तीस लाख वियालीस हजार।
नौ सौ पाँच भये मैं नमन करूं अष्टाँग॥

ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर विद्युत कूट तें श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अठारा कोड़ा कोड़ी व्यासी कोड बत्तीस लाख व्यालीस हजार नौ सौ पांच मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घं ॥२१॥

शीतलनाथ भगवान अरजी सुन लीजै ।
समोशरन के साधू महाराज अरजी चित दीजै ॥
सकल तीर्थ के महाराज विनती सुन लीजै ।
ऋिषभचन्द घबड़ाय हस्तालंबन दीजै ॥
मोक्ष न जब लग हो तब लग भव भव में ॥
आराधन चारौ आराध मरते समय पावै ।

इत्यादि आशीर्वादः ।

जयमाला ।

दोहा–पुष्पदन्त जिनदेव की मोक्ष गये दिन जान ।
नव कोड़ सागर जानिये शीतलनाथ तब आन ॥

पद्धड़ी छंद ।

तिथि चैत्र वदी नौमी सो जान, पूर्वाषाढ़ वर नक्षत्र आन ।
भद्रशालपुरी नगरी सो जान, दिढ़नाथ राजा राज मान ।१।
अच्युत स्वर्ग को तज जिनाय, सुनन्दा देवी के गर्भ आय ।
फिर चतुर निकाय के देव आय, माता की सेवा देवी कराय ।२।
तिथि चैत्र बदी दशमी सो जान, पूर्वाषाढ़ सु नक्षत्र जान ।
सुनन्दा माता ने जन्म दीन, पिता दृढ़रथ ने आनंद लीन ।३।

फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिशेष करी जिनाय।
सुवरण वरन शरीर जान; पग कल्पवृक्ष का चिन्ह जान ।४।
नव्वे धनुष ऊँचाई जान, एक लाख पूर्व की आयु मान ।
पचीस हजार पूर्व कुमार काल जान, इक्ष्वाकु वंश में जनम जान ५
फिर राज पाय जिनराज सोय, महामंडलेश्वर पदवी सो होय।
पचास हजार पूर्व राज कीन प्रजा को पालै नाय नीत ।६।
हेम के नाश देख वैराग आय, लौकाँतिक पहुंचे देव आय।
तिथि माघ वदी बारस सु आन; पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पहुंचो सु आय ७
फिर चतु निकाय के देव आय, विवला प्रभ पालकी लई सजाय
जा में बैठाय प्रभु को जु लीन, कुटुंबी जन काँधे धरेय ।८।
फिर देवन लेय आकाश जाय, भद्रशालपुरी आम्र वन में आय
शाल वृक्ष जलैं वहां दई उतार, संध्या समय प्रभु दीक्षा धार।९।
राजा हजार संग दीक्षा लेय, बेला उपवास धर मौन लेय ।
उपवास हुओ पूरो नेम सोय, आहारन की इच्छा सो होय १०
पहुंचे अरिष्टपुर नगर सोय, पुनर्वसु राजा ने पड़गाय सोय।
गो दुग्ध खीर आहार दीन, पंचाचार इनके घर सुरन कीन ११
धर बेला संजम माह तीन, तप करते प्रभु ने मौन लीन ।
तिथि पौष वदी चौदश सु आय, शुभ पूर्वाषाढ़ नक्षत्र आय ।१२।
भद्रशालपुरी मनोहर बाग आय, धूल वृक्ष तलैं प्रभु ध्यान लाय
बेला उपवास धरे जिनाय; पिछलौ पहर दिन का सो आय १३
पंचम ज्ञान जगो जिनाय; प्रभु केवल ज्ञान प्रकाश भाय।

देवन कीनों कल्यान आय, समोशरन रचना कराय ।१४।
साढ़े सात योजन विस्तार जान, बारह कौठा तामैं रहान ।
दिव्य ध्वनि प्रभु की खिरेय, भव्यन कौ प्रभु उपदेश देय ।१५।
तीन माह घट जानौ सोय, पच्चीस हजार पूर्व विहार होय।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सब जन मन के आनंद भाय १६
तिथि कुंवार वदी आठें सो आय, पूर्वाषाढ़ सो नक्षित्र पाय।
बाकी रही आयु एक माह; विद्युत कूट पै पहुंचे जाय ।१७।
खड़गाशन से प्रभु मोक्ष जाय; रात्रि के समय में जानों सुभाय
मुनि हजार संग मोक्ष पाय, देवन कीनों कल्यान आय ।१८।
पुद्गल परमानु बिखर जांय, नख केश रहे और कुछ न रहाय
देवन ने माया रच शरीर; चन्दन कपूर की अर्थी करेन १९
फिर अगनकुमार ने नाय शीश, प्रगटी अग्नि भई भसम ईश।
इनके तीर्थ में विछोह धर्म, आधा पल्ल नहिं रहियो धर्म २०

घत्ता-सोरठा।

शीतलनाथ भगवान सीतल करो संसार में।
रिषभचन्द शिर नाय शान्ति शीतल दे मुझे ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र जयमाला अर्घं।

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधि होय॥

इत्यादि आशीर्वादः।

❀ श्रेयांसनाथ जिन पूजा ❀

सोरठा—श्रेयांसनाथ महाराज करो सुबुद्धि निज भाव की।
सरो हमारो काज यह विनती सुन लीजिये॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

नाराच छंद।

मनोग नीर लेय कैं सुकुंभ में भराय कैं।
सो जन्म जरा नाश नै जिनेन्द्र धार देय कैं॥
श्रेयांसनाथ पाद पूज जनम सफल कर दीजिये।
सु गाय बजाय पूजिये, सु द्रव्य को खर्चाइये॥
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथाय जलं ॥१॥

सुकुम कुमादि गंधकादि लेय सर्व मेल के।
घिसायकें मिलायकें भव आताप मिटायकें॥
श्रेयाँस० सुगंधं ॥२॥

सु इन्द्र कुंद हारतें मनोग सार सेत ही।
शाल लेय शुद्ध योय पूज शुद्ध देत ही॥
श्रेयांस० अक्षतं ॥३॥

गुलाब कुन्द ले अमदं पुष्प सार सोम ही।
सु कामवान दुख नशान सु पुष्प कों चढ़वहीं॥
श्रेयांसनाथ० पुष्पं ॥४॥

सो घेवराद मीद काद सद्य स्वाद ले आइये ।
चढ़ाइये नशाइये क्षुधादि रोग जाइये ॥
श्रेयाँसनाथ० नैवेद्यं ॥५॥
सो दीप ज्योति को उद्योत सु धूप होत न कहा ।
जगाय पाय जिनेश्वराय मोह अंध हो विदा ॥
श्रेयाँसनाथ० दीपं ॥६॥
गंधवान चन्दनादि धूप दशांग ल्याइये ।
खेइये जिनेन्द्र चन्द्र पाद अग्र कीजिये ॥
श्रेयांसनाथ० धूपं ॥७॥
आम्र पुंग ले अरुण थाल माहि धारिये ॥
चढ़ाइये जिनेन्द्र चन्द मोक्ष फल पाइये ॥
श्रेयांसनाथ० फलं ॥८॥
नीर फलादि आदि लेय सु अर्घ को संजोइये ।
सु चढ़ाइये जिनेन्द्र चन्द्र मोक्ष लक्ष्मी पाइये ।
श्रेयांसनाथ० अर्घं ॥९॥

सोरठा—दीनबंधु भगवान पांच कल्याणक के धनी ।
गरम जनम तप ज्ञान, मोक्ष लक्ष्मी आत्म निधि ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र पंचकल्यान प्राप्तये अर्घं ।

जोगी रायसा छंद ।

श्रेयाँसनाथ महाराज जिनेश्वर समोशरन में बैठे ।
केवल ज्ञान प्रकाश करैं प्रभु बारह सभा लगाये ॥

नमन करूं अष्टांग प्रभुजी आठ द्रव्य से पूजौं।
ताके फल में शान्ति पाऊं इन बिन मोक्ष न पाऊं॥
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथ समोशरन में विराजे तिन को अर्घं ॥१॥

समोशरन में गनधर बैठे कुंथसेन दे आदि।
सतत्तर गनधर बैठे प्रभुजी मैं करों नमन पूजनादि।
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में कुंथ सेन आदि सतत्तर गनधराय अर्घ २।

समोशरन में सामान केवली छह हजार पांच सौ बैठे।
नमन करौं अष्टांग प्रभू को आठ द्रव्य से पूजों॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली छह हजार पांच सौ विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समौशरन में श्रुत केवली बैठे तेरासी गिनती जानौं।
नमन करूं पंचाग मुनी को आठ द्रव्य सों पूजौं॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में तेरा सौ श्रुत केवली विराजमानाय अर्घ ४

समोशरन में सूत्र अभ्यासी अड़तालीस हजार दो सौ बैठे।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय अडतालीस हजार दो सौ व्राजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में अवध ज्ञानी बैठे छह हजार सब जानौ।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू छह हजार विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी पाँच हजार चार सौ जानौ।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधु पांच हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में वैक्रियक रिद्धि ग्यारह हजार साधू जानो ।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ग्यारह हजार वैक्रियक रिद्धि-धारी साधू विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में वादित्य रिद्धि छह हजार साधू बैठे ।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी साधू छह हजार विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में एकत्र साधू चौरासी हजार सब बैठे ।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र साधू चौरासी हजार राजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में मोक्ष साधू पैसठ हजार छह सौ बैठे ।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष जाने वाले पैसठ हजार छह सौ साधु विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में अर्जका बैठीं एक लाख बीस हजार ।
वंदामि० ॐ ह्रीं समोशरन में एक लाख बीस हजार अर्जका जी विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में ऐलक छुल्लक दोय लाख हैं बैठे ।
इच्छामि कहकर अर्घ चढ़ाऊं शांति ही शाँति पाऊं ।
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एलक छुल्लक दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में छुल्लका माता चार लाख हैं बैठीं ।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता चार लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्रेयांसनाथ महाराज प्रभूजी चिन्ह है गैंड़ा हाथी ।
सांकुल कूट तैं निर्वान पधारे हजार मुनी संग जानौ ॥

नमन० ॐ ह्रीं सांकुल कूट तें श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र हजार मुनी साथ मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

आपके तीर्थ में दश साधू बैठे आठ प्रकार उपसर्ग सह मोक्ष पधारे

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दस साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह अन्तः कृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

आपके तीर्थ में दश साधू बैठे आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र भयो

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरण में दस साधू उपसर्ग सह अहमेन्द्र भये तिनको अर्घं ॥१७॥

आपके तीर्थ में अनुवध केवली बहत्तर हजार साधू बैठे।
अननुवध संख्यान केवली मैं नमन पूजन कर ली ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनवद्ध केवली बहत्तर विराजमान हैं अननुद्ध संख्यान विराजे तिनको अर्घं ॥१८॥

आपके तीर्थ में मोक्ष साधू विराजे जितने होवें नमन करूं अष्टाँग

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने मोक्ष साधू होवें तिन सब को अर्घं ॥१९॥

तीर्थ आपके में दिगम्बर निरग्रंथ गिनतो जितनी होवे।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दिगम्बर साधू विराजमान होवें तिन सबको अर्घं ॥२०॥

तीर्थ आपके अर्जिका माता ऐलक छुल्लक जानौ ।
छुल्लका माता जितनी होवें वंदामि इच्छामि अर्घ देवै ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लका जितने होवें उनको अर्घं ॥२१॥

निरवान भूमि है आपकी प्रभुजी साँकुल कूट जानौं ।
मोक्ष गये मुनी गिनती तिनकी छयनावे कोड़ाकोड़ी छयानवे कोड़ है
छयानवे लाख प्रभु नौ हजार पांच सौ व्यालीस हैं ।

नमन• ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर के साँकुल कूट से श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र छयानवे कोड़ा कोड़ी छयानवे कोड छयानवे लाख नौ हजार पांच सौ व्यालीस मुनि मोक्ष पधारे अर्घं ॥२२॥

आपके तीर्थ में प्रथम बल भद्र है विजय नाम सो जानौ ।
गज पंथा से मोक्ष पधारे नमन पूजन कर हों ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में प्रथम बलभद्र गज पंथा से मोक्ष पधारे तिन के तांही अर्घं ॥२३॥

श्रेयांसनाथ महाराज प्रभुजी अरजी मोरी लीजे ।
सकल तीर्थ के साधू महाराज विनती मोरी लीजै ॥
सकल समोशरन के साधू अर्जी चित में दीजे ।
रिषभचन्द घबड़ात प्रभूजी हस्तावलंबन दीजे ॥
जब लग मुझ संसार भ्रमन है तब लग भव २ भागों ।
चारों आराधन आराधै मरन समाधी होवै ॥२४॥

इत्यादि आशीर्वादः ।

जयमाला दोहा।

दशवें तीर्थंकर को मोक्ष गये छयासठ लाख बीस हजार ।
इतने घट एक कोड़ सागर भये फिर ग्यारहवें जन्मे आय ॥

पद्धड़ी छंद ।

तिथि जेठ वदी छटमी सो आय श्रवन नक्षत्र पहुंचो सो आय ।
बारवें स्वर्ग को छोड़ आय विमला देवी के गर्भ आय ।१।
फिर चतुर निकाय के देव आय, कल्यानक कर निज थलहि जाय
तिथि फागुन वदी ग्यारस सो आय, श्रवन नक्षत्र पहुंचो सो आन२
विमला देवी ने प्रभु जन्म दीन, पिता विमल राजा आनद कीन
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिशेप कीन्हों बनाय ।३।
गैंड़ा हाथी पग चिन्ह जान, सुवर्ण समान शरीर जान ।
असी धनुष ऊँचा शरीर, इक्ष्वाक वंश में धर शरीर ॥४॥
चौरासी लाख पूर्व आयु जान, इकईश वर्ष कुमार काल मान ।
फिर राज पाट शिर बाँध मार मंडलेश्वर पदवी को सम्हार ।५।
वियालीस वर्ष राज्य कीन, दया धर्म मई मजा कीन ।
वन लक्ष्मी नशत वैराग आय, लौकांतक देव पहुंचे सो आय ।६।
तिथि फाल्गुन वदी तेरस सो आय, श्रवन नक्षत्र पहुंचो सो आय
फिर चतुर निकाय के देव आय पुष्प प्रभा पालकी लई सजाय ७
प्रभु को बैठार काँधे धरेय, आकाश मार्ग लै चले देव ।
फिर सिंगपुरी आम्र बाग माह, तेंदू वृक्ष तले धरी जाय ।८।
पूर्वान्ह समय दीक्षा सो लेय, बेला उपवास धरो जिनेय ।
राजा हजार संग दीक्षा लेय, पंच मुष्ठ कच लुंच करेय ।९।
पूरो उपवास का नेम होय; आहारन की इच्छा सो होय ।
इष्टपुर नगर में पहुंचे जाय, सुनंदाराय ने लये पड़गाय ।१०।

गौ दुग्ध खीर दीनौ अहार, देवन ने रतन वर्षा कराय।
प्रभु संजम काल दो मास होय, मौन सहित प्रभु का विहार होय ११
फिर सिंगपुरी मनोहर वन मझार, पलाश वृक्ष तर ध्यान लगाय
तिथि माघ वदी अमावस जान श्रवण नक्षत्र पहुंचो सो आन १२
प्रभात समय केवल ज्ञान पाय फिर चतुर निकायी देव आय
तब समोशरन रचना कराय, सात योजन का विस्तार आय १३
दिव्य ध्वनि प्रभु खिरी सोय; लागू भव्यन उपदेश होय।
दो मास घाट इकईश लाख पूर्व, केवल विहार में लागो पूर्व १४
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सब जीवन ने आनंद पाय
आयु बाँकी रही एक मास जान, सांकुल कूट पर पहुंचे सु आन १५
दिव्य धुनी जब बंद होन समोसरन रचना भई विलीन।
तिथि सावन सुदी पूनो सो आय, श्रवन नक्षत्र पहुंचो सो आय १६
पहलो पहर आया सो होय दिन में खड़गासन मुक्ति होय।
हजार मुनी संग मोक्ष होय, पुद्गल परमानू उड़ गये सोय।१७।
देवों ने माया मय रच शरीर, चन्दन कपूर की अर्थी कीर।
अगनकुमार ने शीश नाय, अग्नि प्रगटी अर्थी जलाय।१८।
देवन कीनों कल्यान सोय, सब हो के मन में शोक होय।
इनके तीर्थ में धर्म सोय, पल्य पौन का बिछोय होय ॥१९॥

घत्ता-सोरठा।

श्रेयाँस महाराज तुम स्वामी त्रैलोक्य के।
करो मुझे भव पार अर्जी को सुन लीजिये ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ॥२०॥

जब लग इस संसार में भ्रमण हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरण समाधी होय ॥

इत्यादि आशीर्वादः।

❀ श्री वासुपूज्य जिनपूजा ❀

सोरठा—वासुपूज्य भगवान शिव मग साधक साज दे।
प्रभु इतनों जस लेहु तुम दाता सिरताज हो ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर। संवौषट।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

नाराच छंद।

गंगादि नीर सार वीर भृंग में भराय कें।
जजों जिनेन्द्रदेव इन्द पूज हैं मनाय कें।
वासुपूज्य नाथ के अनेक गुण गावहीं।
नाचिये बजाइये सुफल जन्म पावहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जलं ॥१॥

सो कुम कुमादि गंधकादि हेम पात्र धारिये।
सुगंध हैं अमंद तै घिसाय शुद्ध सारिये ॥
वासुपूज्य नाथ के अनेक गुण गावहीं।
नाचिये वजाइये सुफल जन्म करावही। सुगंधं।

मनोग शाल इन्द्र ज्वाल ले आइये विशालही।
सुधाये मनोग पुंज पंच कर शालही ॥
वासु० अक्षतं ॥३॥

सुगंध तैं भरे हैं पुष्पं भृंग सार ले आइये।
वेल पुष्प केतकी गुलाब आदि ले आइये ॥
वासु पूज्य० पुष्पं ॥४॥

मिलाय सर्व मोदकादि थाल में भराय कैं;
क्षुधादि रोग कौ सुजोग भेंट में चढ़ायकैं ॥
वासु पूज्य० नैवेद्यं ॥५॥

सु दीप ज्योति को उद्योत धार हों अनूपही।
तमो महान सोन वान धारिये जिनेशही ॥
वासु पूज्य० दीपं ॥६॥

सो धूप कर्म धूमकौ प्रभात नित्य लै आवही।
सो खेप हों जिनेन्द्र चन्द्र अष्ट कर्म घात हों ॥
वासु पूज्य० धूपं ॥७॥

सु आम नीबू केला अनार नारंगी सेव फल ले आइये।
सु चढ़ाइये जिनेन्द्र देव मोक्ष सुख पाइये ॥
वासु पूज्य० फलं ॥८॥

सु नीर आदि धार सर्व द्रव्य शुद्ध थाल में।
अनर्घ थान पावने बनाय अर्घ थाल में ॥
वासु पूज्य० अर्घं ॥९॥

सोरठा—वासुपूज्य महाराज कर्म कलंक मिटाय दे।
पाँच कल्याण धार सबको आनंद दे ॥

ॐ ह्रीं श्री वासु पूज्य जिनेन्द्र पांच कल्याण प्राप्ताय पूर्ण अर्घं १०

सुन्दरी छंद

समोशरन के दर्शन कीजिये;
वासुपूज्य महाराज की महिमा देखिये ॥
केवल ज्ञान सहित जो विराजहीं ।
नमन पूजन हम ही करावहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहित समोशरन स्थिताय अर्घं ॥१॥

समोशरन में आपके ब्राजहीं ।
पदम धर्म आदि गनधर पावहीं ॥
छयासठ गनधर गिनती पाइये ।
नमन पूजन हम ही करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में पदम गनधर धर्म गनधर आदि छयासठ गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में आपके विराजहीं ।
सामान केवली छह हजार विराजहीं ॥

नमन० ॐ ह्रीं समोशरन में छह हजार केवली को अर्घं ॥३॥

समोशरन में आपके विराजहीं श्रुत केवली बारह सौ पावहीं।

नमन० ॐ ह्रीं समोशरन में बारह सौ श्रुतकेवली विराजमानाय अर्घं४

समोशरन में आपके ब्राजहीं शिक्षक सूत्र अभ्यासी पावहीं।
उनतालीस हजार दो सौ ब्राजहीं नमन पूजन हम ही करावहीं।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उनतालीस हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में आपके विराजहीं अवधि ज्ञानी साधू पावहीं।
गिनती पांच हजार और चार सौ नमन पूजन करैं भाव सौं।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधु पांच हजार चार सौ विरांजमानाय अर्घं ।६।

समोशरन में आपके विराजहीं मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू पावहीं।
छह हजार गिनती तिनकी पाइये नमन पूजन हम ही कराइये॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू छह हजार तिन को अर्घं ।७।

समोशरन में आपके विराजहीं वैक्रियक साधू दस हजार विराजहीं
नमन करूं पंचांग गुरु को अबै आठ द्रव्य सों पूजत मैं सबै

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधु दस हजार विराजमानाय अर्घं ८।

समोशरन में आपके विराजहीं वादित्त रिद्धिधारी पावहीं।
चार हजार दो सौ गिनती पाइये नमन पूजन सब की कराइये

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी साधु चार हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ।९।

समोशरन में आपके विराजहीं सातौं संग के साधू पावहीं।
बहत्तर हजार गिनती पाइये नमन पूजन सब की कराइये॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संग के साधु एकत्र बहत्तर हजार विराजमानाय अर्घं ।१०।

समोशरन में आपके विराजहीं मौक्ष जाने वाले पावहीं ।
चऊवन हजार छह सौ जानिये नमन पूजन सबकी कराइये ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष जाने वाले साधु चऊवन हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में अर्जका विराजहीं सेना अर्जका को आद दै पावहीं
एक लाख बीस हजार जानिये वंदामि कह अर्घ चढ़ाइये ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सेना अर्जका को आदि देय एक लाख बीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में आपके विराजहीं ऐलक छुल्लक सबरे पावहीं ।
दो लाख गिनती तिनकी जानिये इच्छामि कह अर्घ चढ़ाइये ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में आपके विराजहीं छुल्लका माता सब ही पावहीं
चार लाख की गिनती पाइये इच्छामि कह अर्घ चढ़ाइये ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका चार लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्री वासुपूज्य भगवान महाराज जी पग में भैंसा चिन्ह सो पाइये
मंदार गिरि से मौक्ष पधारे हैं हजार मुनि संग बताये हैं ।
चरचा सागर में चौरासी कहे नमन पूजन सबही को करें ।

ॐ ह्रीं मंदार गिरि से श्री वासुपूज्य आदि एक हजार मुनि मोक्ष पधारे तिन को अर्घं ॥१५॥

तीर्थं आपके दश साधू पाइये आठ प्रकार उपसर्ग सो जीते जानिये
नमन करूं अष्टाँग सब को अबै आठ द्रव्य से पूजत हों मैं सबै

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधु आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतःकृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ॥१६॥

तीर्थ आपके में दश साधू पाइये आठ प्रकार उपसर्ग सहे पाइये
आऊ पूरन कर अनुत्तर में जाय हैं नमन पूजन सबको कराय हैं

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दश साधु आठ प्रकार उपसर्ग सह अनुत्तर विमान में उपजे है। अर्घं ।१७।

तीर्थ आपके में केवली पाइये चवालीस हजार केवली पाइये।
अनुबंध संख्याते जानिये नमन पूजन सब ही कराइये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध सामान केवली चवालीस अननुवध बहुत विराजे तिन को अर्घं ।१८।

तीर्थ आपके में प्रभु जानिये दूसरा अचल बलभद्र प्रमाणिये ।
गज पंथा से मोक्ष पधार हैं नमन पूजन हम ही कराय हैं ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दूसरा बलभद्र अचल गज पंथा से मोक्ष पधारे तिन को अर्घं ॥१९॥

तीर्थ आपके में प्रभु पाइये मोक्ष साधू सबरे पाइये ।
नमन अष्टांग मैं करौं सबको अबै आठ द्रव्य से पूजों मैं सबै ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधु मोक्ष पधारे उन सबको अर्घं २०

तीर्थ आपके में प्रभु पाइये दिगम्बर निर्गंथ साधू पाइए ।
नमन करूं पंचाग सबको अबै आठ द्रव्य सों पूजत मैं सबै ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में जितने दिगम्बर निर्गंथ साधू हैं तिन सब को अर्घं ।२१।

तीर्थ आपके में प्रभू पाइए अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लक ।
वंदामि इच्छामि अर्घं सबै देत हों शान्ति में अब बूढ़ा लेत हों

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका विराजमानाय अर्घं ।२२

निरवान भूमि मंदार गिरि आपकी जमधर आदि मुनी मोक्ष पधारे एक हजार मुनि मोक्ष पधारे हैं नमन पूजन सबका करत हैं।

ॐ ह्रीं आपकी निर्वाण भूमि से गनधर आदि मुनि एक हजार मुनि मोक्ष पधारे तिन को अर्घं ।२३।

श्री वासुपूज्य महाराज अरजी सुन लीजिए ।
समोशरन के साधू विनती सुनों ॥
सकल तीर्थ के साधू सुन लीजिए ।
रिषभचन्द को माँगे दीजिए ॥
जब लग मोक्ष न मेरो होय है ।
तब लग भव भव में समाधि होय है।

इत्यादि आशीर्वादः ।

जयमाला दोहा ।

मोक्ष गये श्रेयांस को चौवन सागर बीते जान ।
ता पीछे जन्मे प्रभु श्री वासुपूज्य भगवान ॥

पद्धड़ी छंद ।

तिथि अषाढ़ वदी छटमी सो आय सतभिषा नक्षत्र पहुंचो सो आय
महा शुक्र विमान को छोड़ आय पाटल देवी के गर्भ आय १

चम्पा नगरी में देव आय, गर्भ कल्यानक कर हर्ष पाय।
तिथि फागुन वदी चौदस सो जान, सतभिषा नक्षत्र पहुंचो सो जान
पाटल देवी माता जन्म दीन सह कुटुम्ब जन आनंद लीन।
फिर चतुर निकाय के देव आय वसु देव पिता घर आनंद छाय ३
जन्माभिशेप कर देव सोय भैंसा का पग में चिन्ह होय॥
छेवला के फूल सम शरीर जान सत्तर धनुप ऊंचाई काय जान ४
वंश इक्ष्वाकु में जन्म लीन, बहत्तर लाख वर्ष आयु लीन।
कुमार काल अठारा लाख वर्ष हुए बाल ब्रह्मचारी सहर्ष ५
नहि राज्य कियो प्रभु ने जो सोय न व्याह कियो मन वैराग होय
जनम मरन तैं वैराग्य आय लौकाँतिक देव पहुंचे सु आय ६
तिथि फागुन वदी चौदस सो आय विशाषा नक्षत्र का उदय आय
फिर चतुर निकाय के देव आय देव दत्ता पालकी लई सजाय ७
प्रभु को पालकी बैठार लीन कुटुम्बी जन कांधे धरीन।
फिर देव लियो आकाश जाय चम्पा नगरी क्रीड़ो उद्यान बाग ८
जम्बू वृक्ष तल दीनी उतार संध्या समय दीक्षा को धार।
दीक्षा छह सौ राजा संग धार उपवास धरे काँतर विचार ९
सिद्धारथ पुर के नगर जाय राजा ने लीनो पड़गाय।
गो दुग्ध खीर आहार दीन दाता के घर रत्न वर्षा प्रवीन १०
तप करते भयो एक मास सोय एकान्तर के उपवास होय।
चम्पापुर के मनोहर बाग आय पाटल वृक्ष तल ध्यान भाय ११

तिथि माहु वदी दीज आय ज्ञान विशाखा नक्षत्र सो लागो आन
उपवास कियो प्रभू ने सो एक पिछलो सो पहर दिन को सो एक१२

प्रभु पायो केवल ज्ञान सोय देवन कीनौ कल्यान होय।
साढ़े छह जोजन जानौ सोय समोशरन रचना जो होय १३

उपदेश देय प्रभु विहार कीन भव्यन को लागू कर प्रवीन।
इक मास घाट चऊवन लाख वर्ष केवल विहार जानों सो हर्ष १४

फिर भ्रमन करत चम्पापुर बाग आय आऊ बाँकी रही एक मास भाय
मंदारगिर परवत पर जाय दिव्य ध्वनि नहिं खिराय।१५।

समोशरन रचना विलाय हाथ जोड़े खडे देव नर सुहाय।
तिथि आई भादौ चौदस सुदी जान असनी नक्षत्र पहुंचो सो आन

रात्रि समय में मोक्ष होंय पद मासन सैं जानों जो सोय।
हजार मुनि संग मोक्ष होय इनके तीर्थ में धर्म विछोह इक पल्ल होय

सोरठा—वासुपूज्य भगवान शरन सहाई हो सही।
भवदधि माहि जिहाज रिपव को पार करो सही॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ॥१८॥

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब तक मुझ सम्यक्त सहित मरण समाधि होय॥

इत्यादि आशीर्वादः।

❀ श्री विमलनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा–विमलनाथ महाराज विमल बुद्धि मोहि दीजिये।
मेरी शक्ति नाहिं भक्ति से पूजन करूं ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र। अत्र अवतर अवतर। संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

गीतका छंद।

सुभग नीर अभंग सीर सो कुंभ कंचन लै भरूं।
जर मरन जनम निवार कारन धार तीन सदा करूं॥
श्री विमलनाथ जिनेन्द्र पूजों अर्ज मोरी लीजिये।
जनम रोग मिटाय दो प्रभु मोक्ष लक्ष्मी दीजिये॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जलं।

कस्मीर कृष्णा गुरु सों चन्दन लेय सर्व मिलाइये।
घिस सब संयुक्त गंध बहल सु जिनही चरन चढ़ाइये॥
श्री विमलनाथ जिनेन्द्र पूजों अर्ज मोरी लीजिये॥
जन्म रोग मिटाय दो प्रभु मोक्ष लक्ष्मी दीजिये।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय सुगंधं।

तंदुल अखंडित सरल परमल इन्दु कुन्द तुसार से।
दुति धरै मुक्ता फल समान ही अक्षय पद करतार से॥
श्री विमल० अक्षतं ॥३॥

कमल केतकी मालती अर जाई आदि सुगंध तें।
इनके कुसम तैं पूज जिन पद होत काम सो नास ते।
श्री विमल पुष्पं० ॥४॥

नाना सुरस घृत दुग्ध आदिक लेय साथ पचाइये।
करिये नैवेद्य मनोग रोग सौं क्षुधा ताह नशाइये॥
श्री विमल० नैवेद्यं ॥५॥

दीपक कपूर मई सो जोती जलाय जिन पद धारिये।
तम मोह पटल विलात ऐसो दीप दीपत कारिये॥
श्री विमल० दीपं ॥६॥

मलयागिर अगर कपूर मेल सौं धूप गन्ध मनोहरं।
लेकर खेइए जिनचग्न आंगे अष्ट कर्म जले वरं॥
श्री विमल० धूपं ॥७॥

नारंग कदली फल तथा निंबू श्रीफल ले आइए।
फल मोक्ष कारन लेय सुन्दर थाल माह संजोइए॥
श्री विमल० फलं ॥८॥

जल गंध तंदुल पुष्प चरु लै दीप धूप फलावही।
कर अर्घ कंचन थाल में लै प्रभु के चरन चढ़ावही॥
श्री विमल अर्घं ॥९॥

सोरठा—श्री विमलनाथ महाराज पंचकल्याणक के धनी।
गरम जनम तप ज्ञान केवल ज्ञान महा मनी॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय पंचकल्याण प्राप्ताय पूर्णं अर्घं।

जोगी रायसा छंद ।

विमलनाथ भगवान विराजे समोशरन में देखो ।
केवल ज्ञान प्रकाश करै प्रभु बारह सभा को देखो ॥
नमन करूं अष्टाँग प्रभू को आठ द्रव्य से पूजौं ।
शान्ति से सुख होत सबै को शान्ति मुझ में हूजौ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहिताय अर्घं ॥१॥

समोशरन में आपके प्रभुजी मेररुमंदिर गनधर ।
पचवन गनधर एकत्र होत हैं नमन पूजन करों हों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोसरन में मेर गनधर दूजे मंदिर गनधर को आदि दै पचवन गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में आपके प्रभुजी सामान केवली विराजे ।
पांच हजार और पाँच सौ गिनती नमन पूजन करों हों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली पांच हजार पांच सौ विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में श्रुत केवली विराजे ग्यारह सौ साधू जानौ ।
नमन करूं पंचाँग गुरु को आठ द्रव्य सों पूजों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली ग्यारह सौ विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके प्रभुजी सूत्र अभ्यासी बैठे ।
अड़तालीस हजार और पाँच सौ जानौ नमन० ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय साड़े अड़तालीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में आपके प्रभुजी अवधि ज्ञानी बैठे।
चार हजार है आठ सौ गिनती नमन पूजन करों हों॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवध ज्ञानी साधू चार हजार विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में आपके प्रभुजी मनः पर्य्यय साधू।
पांच हजार और पांच सौ गिनती में नमन पूजन करों हों॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू पांच हजार पांच सौ विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में आपके प्रभुजी वैक्रियक साधू बैठे।
नौ हजार है गिनती तिनकी मैं नमन पूजन करों हों॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधू नौ हजार विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में आपके प्रभुजी वादित्य साधू बैठे।
तीन हजार और छह सौ गिनती मैं नमन पूजन करों हों॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्त रिद्धिधारी साधू तीन हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में आपके प्रभुजी सातों संग के साधू बैठे॥
अड़सठ हजार है गिनती तिनकी नमन पूजन करों हों।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संग के एकत्र साधू अडसठ हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके प्रभुजी मोक्ष साधू बैठे।
इक्यावन हजार हैं तीन सौ गिनती में नमन पूजन करों हों॥

ॐ ह्रीं समोशरन में सातों संग में से मोक्ष जाने वाले इक्यावन हजार तीन सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में आपके प्रभुजी अर्जका माता बैठीं ।
वंदामि करों मैं सबको वसु विधि अर्घ चढ़ाऊं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में पदमा अर्जका को आदि दे एक लाख बीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक बैठे ।
दोय लाख है गिनती तिनकी इच्छाकर अर्घ देहों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में आपके प्रभुजी छुल्लका माता बैठीं ।
चार लाख है गिनती जिनकी इच्छाकार अर्घ देवैं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता चार लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्री विमलनाथ भगवान प्रभूजी सूकर का चिन्ह है जिनके ।
मोक्ष पधारे सुवीर कूट तैं सात सौ बारा संग में ॥

नमन करूं० ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र सुवीर कूट तें सात सौ बारह मुनियों सहित मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

तीर्थ आपके में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सहे ।
अन्तर मुहूर्त में कर्म नाश कर शिवपुर जाय वसे ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह अन्तर मुहूर्त में कर्म काट मोक्ष पधारे अर्घं ॥१६॥

तीर्थ आपके में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सहे ।
आयु पूर्ण कर अनुत्तर पहुंचे नमन पूजन कर अर्घ चढ़ाये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सहकर अहमेन्द्र हुए अर्घं ॥१७॥

तीर्थ आपके अनुवध केवली चालीस प्रभुजी व्राजे ।
अननुवध की गिनती वहुत है सब नमन पूजन करों हों ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में सामान केवली अनुवध चालीस अननुवध जितने होवें उन सबको अर्घं ॥१८॥

तीर्थ आपके बलभद्र तीसरे धर्म नाम के जानौ ।
गज पंथा से मोक्ष पधारे नमन पूजन जानौ ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में तीसरे बलभद्र गज पंथा से मोक्ष पधारे अर्घं ॥१९॥

तीर्थ आपके में मोक्ष साधू जितने विराजे होवें ।
नमन करूं अष्टांग प्रभू को आठ द्रव्य से पूजौं मैं ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधु मोक्ष पधारे होवें तिन सबको अर्घं ॥२०॥

तीर्थ आपके साधू जितने निरग्रंथ दिगम्बर जानौ ।
नमन करूं पवाग गुरु को आठ द्रव्य से पूजौं ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निरग्रंथ साधु भये होवें तिनको अर्घं ॥२१॥

तीर्थ आपके में हैं अर्जका ऐलक छुल्लक जानौ ।
छुल्लका माता जितनी होवें वंदामि इच्छामि कह पूजौं ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका जितने होवें सबको अर्घं ।२२।

निर्वाण भूमि है सुवीर कुल कूट तें मोक्ष गये साधु जानौं ।
सत्तर कोड़ी सत्तर लाख छै हजार सात सौ व्यालीसौं ॥
नमन करू अष्टांग प्रभू को आठ द्रव्य से पूजौं ।

ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर के सुवीर कूट तें श्री विमलनाथ जिनेन्द्र सत्तर कोड़ी सत्तर लाख छह हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ।२३।

श्री विमलनाथ महाराज प्रभुजी अरजी मोरी लीजै ।
समोशरन के सबरे साधू विनती मोरी लीजै ॥
सकल तीर्थ के साधू सबही अरजी चित में दीजै ।
रिषवचन्द वर मांगत सब सों हस्तावलंबन दीजै ॥
जब लग मोक्ष न मेरो होवे तब लग समाधी होवै ।

इत्यादि आशीर्वादः ।

जयमाला दोहा ।

वासुपूज्य को मोक्ष गये तेतीस सागर होय ।
मध्य लोक में आयकैं विमलनाथ जो होय ॥

पद्धडी छंद ।

तिथि जेठ वदी दशमी सो आय उत्तरा नक्षत्र पहुंचो सो आय
ग्रैवेयक स्वर्ग को छोड़ आय रमा देवी के गर्भ आय ॥१॥
फिर चतुर निकाय के देव आय कल्याणक कर घर कों सो जाय
तिथि माघ सुदी चौदस सु आय उत्तरा नक्षत्र पहुंचो सो आय २

रमादेवी माता जनम दीन पिता जयती ने आनंद कीन ।
कंपला नगरी में जनम भूमि आनंद सहित कुछ दान भूम ३।
फिर चतुर निकाय के देव आय जन्म महोत्सव कर्के सो जाय
पद में सूकर का चिन्ह जान सुवर्न वर्ण शरीर मान ।४।
साठ धनुष तन की ऊँचाई जान साठ लाख वर्ष आयु प्रमान
इक्ष्वाक वंश में जनम लीन देवन के संग क्रीड़ा करीन ।५।
पन्द्रह लाख वर्ष कुमार काल खेलन कूदन में बितायो काल
फिर राज पाय भये प्रजापाल मंडलेश्वर पदवी भये दया पाल ६
तीस लाख वर्ष राज कीन आनंद सहित घर धर्म कीन ।
मेघ विनाश देख वैराग्य आय लौकाँतिक पहुंचे तुरत आय ७
मिती माघ सुदी चौथ आय सोय उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र होय
फिर चतुर निकाय के देव आय सागर दत्ता पालकी लई सजाय ८
प्रभु को बैठार कांधे धराय कम्पला नगरी रसाल वन आय ।
जम्बू वृक्ष तल दई उतार बेला उपवास लियो जिनाय ।९।
संध्या समय दीक्षा सो धार राजा सहश्र संग संयम को धार ।
फिर गमन कियो आहार काज महांपुर को गमन आज ।१०।
राजा विसाखा लये पड़गाय गौ दुग्ध खीर आहार पाय ।
तप कीनों महीना तीन होय मौन सहित प्रभु विहार होय ११
बेला उपवास धरे जिनाय पिछलो पहर दिन का सो आय ।
तिथि माघ सुदी छटमी कहाय उत्तरा भाद्र पद नक्षित्र आय १२

प्रभु केवल ज्ञान भयो प्रकाश फिर चतुर निकायक देव आय
समौशरन रचना जो होय छह योजन का विस्तार होय ।१३।
तीन माह घाट पन्द्रा लाख वर्ष भव्यन दीनों उपदेश हर्ष ।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय सब जीवन ने आनंद पाय १४
आयु बाकी रहो एक मास होय सुबीर कुल कूट पर गये सोय
दिव्य ध्वनि को बंद कीन समोशरन रचना विलीन ।१५।
तिथि अषाढ़ सुदी आठें सु आय भरनी नक्षत्र पहुंचौ सो आय
रात्रि के समय प्रभु मोक्ष होय खड़गासन से जानों सो होय १६
छह हजार मुनि संग होय केवल ज्ञान के समय तै निरवान तक होय
निरवान कल्यानक कर स्थान जाँय नर देव को कुछ शोक होय १७
इनके तीर्थ में विछोह होय पौन पल्ल धर्म का रहो सोय ।

सोरठा–विमलनाथ भगवान आयो तुम दरबार में ।
जनम रोग निरवार तुम सहाय सब जग विषैं ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र जयमाला महा अर्घं ॥१८॥

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय ।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधि होय ॥

इत्याशीर्वाद ।

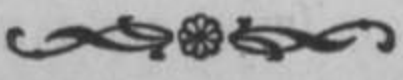

❀ श्री अनन्तनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा—श्री अनन्तनाथ महाराज अनन्त शक्ति दीजिये।
करों अंतराय का नाश अनन्त बल प्रभु दीजिये॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

नाराच छंद।

क्षीर नीर हीर गौर सोम सीत धार आ।
मिश्र गंध रत्न भृंग पाप नाश कारया॥
अनंतनाथ पाय सेव मोक्ष सौख्य दाय है।
अनंतकाल का भ्रमन पूजते नशाय है॥
ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जलं॥१॥

कुमकुमादि, चन्दनादि, गंध शीत कारया।
सम्यक्वेन अन्तकेन भूर ताप हारयां॥
अनन्तनाथ० सुगंधं॥२॥

सेत इन्द्र कुंद हार खंडना अखंड ही।
द्रुतं खण्डकार पुंज धारिये पवित्र ही॥
अनन्तनाथ० अक्षतं॥३॥

सुर पुनीत पुष्प सार पंच वर्ण लाइये।
गंध लुब्धि भृंग विन्द्र शब्द धार आवहीं॥
अनन्त० पुष्पं॥४॥

मोद कादि घेवरादि मिष्ट स्वाद सारही ।
हेम थाल धार भव्य दुष्ट भूख टारही ॥
अनन्त० पुष्पं ॥५॥
रत्न दीप तेज भानु हेम पात्र धारिये ।
भवाधि दुःख भार मूल तैं निवारिये ।
अनन्त० दीपं ॥६॥
देव दारु कृशन सार चन्दनादि ल्यावहीं ।
दशांग धूप धूम गंध अग्नि संग जलावहीं ॥
अनन्त० धूपं ॥७॥
श्री फलादि खारकादि हेम थाल में भरै ।
सुष्ट मिष्ट गंध सार श्रीजी के आगे धरै ॥
अनन्तनाथ० फल ॥८॥
नीर गंध अक्षतान पुष्प नैवेद्य लीजिये ।
दीप धूप श्री फलादि अनन्तनाथ पूजिये ॥
अनन्त० अर्घं ॥९॥

दोहा—पंच कल्यानक के धनी अनन्तनाथ जिनराज ।
पंच परावर्तते मुझे निन वारौ महाराज ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष कल्यानक प्राप्ताय पूर्णं अर्घं ॥१०॥

अडिल्ल छंद ।

अनन्तनाथ भगवान समोशरन में विराजहीं ।
केवल ज्ञान प्रकाश बारा सभा लगावहीं ॥

नमन करूं अष्टाँग पूज वसु विध सही ।
आतम ज्ञान प्रकाश मोक्ष पदवी लही ॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ केवल ज्ञान सहित विराजमानाय अर्घं ।१।

समोशरन में महाराज गनधर विराजहीं ।
जय मुनि आदि पचास गनधर विराजहीं ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में जय मुनी गनधरादि पचास विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में महाराज सामान केवली विराहीं ।
गिनती में पांच हजार सुदृष्टि तरंगनी देखही ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली पांच हजार विराजमान हैं तिन सबको अर्घं ॥३॥

समोशरन में महाराज श्रुत केवली विराजहीं ।
गिनती एक हजार नमन पूजन करावहीं ॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन मे श्रुत केवली एक हजार विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके सूत्र अभ्यासी विराजहीं ।
उनतालीस हजार और पाँच सौ पावहीं ॥ नमन०
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय साड़े उनतालीस हजार विराजमानाय अर्घं ।५॥

समोशरन में महाराज अवधि ज्ञानी विराजहीं ।
गिनती में चार हजार सुदृष्टि तरंगनी गावहीं ॥
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधु चार हजार विराजे हैं तिनको अर्घं ॥६॥

समोशरन में महाराज मनः पर्य्यय ज्ञानी विराजहीं ।
गिनती में पांच हजार और नहीं पावहीं ।।

नमन० ॐ ह्रीं समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू पांच हजार विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में महाराज वैक्रियक साधू विराजहीं ।
गिनती में आठ हजार नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधू आठ हजार विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में आपके वादित्त रिद्धिधारी विराजहीं ।
गिनती तीन हजार दोय सौ पावहीं नमन पूजन करावहीं ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्त रिद्धिधारी साधू तीन हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में महाराज मोक्ष साधू विराजहीं ।
गिनती इंक्यानवे हजार नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष जाने वाले साधु इंक्यानवे हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में माता अर्जका विराजहीं ।
सर्व श्री को आदि दे एक लाख आठ हजार ही ॥
वंदामि कह अर्घ सबको चढ़ावही ।
शाँति में वास करूं आतम अनुभव पावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अर्जका माता एक लाख आठ हजार विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में ऐलक छुल्लक विराजहीं ।
दोय लाख की गिनती तिनकी पावहीं ॥
इच्छाकार कह अर्घ सबको देत ही ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक दोय लाख विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में छुल्लका चार लाख हैं सही ।
इच्छामि कह सबको अर्घ देते सही ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता चार लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

श्री अनन्तनाथ महाराज चिन्ह सेही का है सही ।
स्वयंभू कूट तें मोक्ष प्रभूजी ने लही ।
संग में सात हजार पाँच सौ जानिये ॥
नमन करूं अष्टांग पूजकै मानिये ।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ भगवान स्वयं कूट तें साडे सात हजार मुनि सहित मोक्ष पधारे सबको अर्घं ॥१४॥

तीर्थ आपके में दश साधू ऐसे भये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह शिवपुर को गये ॥
नमन करूं अष्टांग पूज वसु विध सही ।
आतम अनुभव पाय मोक्ष जासों सही ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधु ऐसे भये आठ प्रकार उपसर्ग सह कर अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

तीर्थ आपके में दश साधू ऐसे भये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहिमेन्द्र होते भये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में १० साधु ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अहिमेन्द्र हुए अर्घं १६।

आपके तीर्थ में अनुबध केवली होते भये।
छत्तीस गिनती तिनकी ही होते भये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनवध केवली छत्तीस विराजमानाय अर्घं १७

तीर्थ आपके में चौथे सुप्रभ बलभद्र होते भये।
गज पंथा से मोक्ष गये अनन्त सुख लेते भये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में सुप्रभ बलभद्र गज पंथा से मोक्ष पधारे अर्घं ॥१८॥

तीर्थ आपके में दिगम्बर निरग्रंथ साधू होते भये।
नमन करत पंचांग आठ द्रव्य से पूजत भये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निरग्रंथ साधू भये होवें तिन सबको अर्घं ॥१९॥

तीर्थ आपके में अर्जका माता पाइये।
ऐलक छुल्लक और छुल्लका पाइये ॥
वंदामि करौं इच्छामि करूं मैं भाव सौं।
वसु विध अर्घ चढ़ाय शान्ति आदरौं।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में जितने अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका हों उनको अर्घं ॥२०॥

निरवान भूमि है आपकी स्वयंभू कूट जू।
मोक्ष गये हैं जहाँ से करमन छूट जू ॥
छयानवे कोड़ा कोड़ी सत्तर कोड़ हैं।
सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ और हैं ॥

नमन• ॐ ह्रीं आपकी निर्वान भूमि सम्मेद शिखर के स्वयंभू कूट तें छयानवे कोड़ा कोडी सत्तर कोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥२१॥

श्री अनन्तनाथ महाराज अरज सुन लीजिये ।
समोशरण के साधू अरजी लीजिये ॥
सकल तीर्थ के साधू विनती लीजिये ।
विषयचन्द घबड़ाय हस्तावलंवन दीजिये ॥
जब लग मोक्ष न मेरो होवे सही ;
तब लग भव भव में समाधि होवै सही ॥

इत्याशीर्वाद ।

जयमाला दोहा ।

विमलनाथ को मोक्ष गये नौ सौ सागर जान ।
तिन पीछे पैदा हुए अनन्तनाथ भगवान ॥

पद्धड़ी छंद ।

तिथि जेठ वदी बारस सौ आय, भाद्रपद नक्षत्र पहुंचो सो आय
बारवें सुर्ग को छोड़ आय, सूर्जा देवी के गर्भ आय ॥१॥
अजुध्या नगरी में रतन वर्षाय, देवों ने कीनों कल्यान सहर्षाय
तिथि जेठ वदी बारस सो आय, भाद्रपद नक्षत्र पहुंचों आय ।२।
सूर्जा देवी ने जनम दीन; सिंह सेन नृप आनन्द कीन ।
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिशेष कर सुरगहि सुजाय ३

सेही का चिन्ह पग में सो जान, सुवर्ण समान शरीर जान।
इक्ष्वाक कुल में जनम होय, पचास धनुष का शरीर होय ।४।
तीस लाख वर्ष की आऊ जान, साड़े सात लाख कुमार काल जान।
फिर राज्य कियो पन्द्रह लाख वर्ष, महामंडलेश्वर पद लियो सहर्ष ५
उल्का पात लाख वैराग्य आय, लौकान्तक पहुंचे तत्क्षण धाय।
तिथि जेठ वदी बारस सो आय, रेवती नक्षत्र पहुंचो सो आय ।६।
फिर चतुर निकाय के देव आय, नाग दत्ता पालकी लई सजाय।
अभिषेक कर पालकी बैठार, देवन ने पालकी लई उठाय ॥७॥
अजुध्या के आम्र बाग माह, पीपल वृक्ष तल दई उतार।
संध्या समय दीक्षा सु धार, बेला उपवास धरे जिनाय ।८।
राजा हजार संग दीक्षा धार, केशन का लुंच कियो जिनाय।
फिर भोग भये आहार काज, ध्यानपुर में पहुंचे जिनाय ।९।
धर्म वर धन नृत्य लीयो पड़गाय, गो दुग्ध खीर दीनी जिनाय।
तप कियो खूब दो माह सोय; बेला पारना का नाम होय।१०।
साकेत नम उपवन मझार; दधि पर्ण वृक्ष तल ध्यान धार।
बेला उपवास धरे जिनाय, सुकल ध्यान दूजा पाय ध्याय।११।
मिती चैत्र वदी अमावश्य सो जान; रेवती नक्षत्र पहुंचो सो आन
पिछलो पहर दिन का सो होय, केवल ज्ञान की प्राप्ति सो होय १२
फिर चतुर निकाय के देव आय, समोशरन की रचना कराय।
साड़े पांच योजन विस्तार जान, बारह जु सभा लागी महान १३

दिव्य ध्वनि खिरै चार बार, महापुरुष के पुन्य से अन्य बार।
दो मास घाट साढ़े सात लाख वर्ष; केवल विहार प्रभु को एक वर्ष १४

फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सब जीवन के मन हर्ष भाय।
फिर जानी आऊ रही एक माह, स्वयंभू कूट पै पहुँचे जाय १५

दिव्य ध्वनि को बंद कीन, अरु समीशरन रचना विलीन।
मिती चैत्र वदी अमावस सु जान, भाद्रपदा नक्षत्र पहुंचो सो आन १६

रात्रि के समय में मोक्ष जान, खड़गाशन से जानो प्रयान।
सात हजार पाँच सौ सात जान, इतने साधू संग मोक्ष आन।१७।

देवन ने आय कल्यान कीन, कछु वदन भयो उनको मलीन।
इनके तीर्थ भयो धर्म विछोह, आधा पल्ल नहिं रहो धर्म सोय १८

घत्ता-सोरठा

अनन्तनाथ भगवान अनंत चतुष्टय के धनी।
देहु अनंत पद मोहि, सेवक अपनो जानके ॥१९॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं।

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधि होय।२०।

इत्याशीर्वादः।

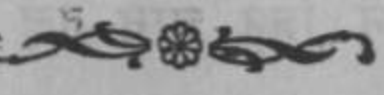

❀ श्री धर्मनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा–धर्मनाथ भगवान, धर्म बुद्धि मोहि दीजिये।
निज धर्म की चाह है, ऐसी रिद्धि दीजिये॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

गीतका छंद।

शुचि नीर निरमल कनक झारी छीर दधि सै लै आइये।
जन्मादि नाशन पाद जिनके धार तीन चढ़ाइये॥
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र प्रभु के सरन में कर भ्रमन है।
जौलो न मोरो रोग नासै तौलौं चरन की आस है॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथ जिनेन्द्राय जलं॥१॥

चन्दन सो कुमकुम मेल घिस कर कनक पात्रहि धार कैं।
भव ताप नासन पाद जिनके जजूं कर मद टार कैं॥
श्री धर्म० सुगंधं॥२॥

तंदुल अखंडित गंध मंडित धौय जल तै लै धरौ।
पद अखय कारन पुंजजिन पद पै सदा निरमल करौ॥
श्री धर्म० अक्षतं॥३॥

केवड़ा गुलाब सो केतुकी मह कँध जामै अति घनी।
सर काम नाशन कारने जिन चरन तल सोभा बनी॥
श्री धर्म पुष्पं॥४॥

नेवज मनोज्ञ सो मोद कारन मोदकं खाजा करौ ।
पुन फैनी रस झीनी चढ़ाओ क्षुधा रोग सबै हरौ ॥
श्री धर्म० नैवेद्यं ॥५॥
शुभ दीप ज्योती नोय घृत मय बात कपूर जलाइये ।
तम मोह नाशन आरती जिन पद अग्र चढ़ाइये ॥
श्री धर्म० दीपं ॥६॥
श्री खण्ड अगर सुलेय चन्दन धूप कर जिन पद अगै ।
खेवो सुगंध करै दशों दिश अष्ट कर्म सबै भगै ॥
श्री धर्म० धूपं ॥७॥
फल आम दाडिम आदि लैकर कनक थाल भराइये ।
फल मोक्ष कारन नेत्र मन हर फल अनेक चढ़ाये ॥
श्री धर्म० फलं ॥८॥
जल गंध अक्षित पुष्प चरुवर दीप धूप मनोहरं ।
फल मेल अर्घं बनाय जिन पद पूजते अघ नट करं ॥
श्री धर्म अर्घं ॥९॥
सोरठा–धर्मनाथ महाराज सिद्ध करो पुरुषार्थ की ।
मोरी बुध बढ़ाओ सिद्ध करो सत स्वार्थ की। पूर्णार्घं।

सुन्दरी छंद ।

समोशरन के मध्य विराजहीं ।
श्री धर्मनाथ के गुन हम गावहीं ॥
केवल ज्ञान प्रकाश करैं प्रभु ।
नमन अष्टाँग कर कै पूजौं प्रभु ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहित समोशरन विराजमानाय अर्घं ॥१॥

समोशरन में गनधर विराजहीं अरिष्ट सेनानी तेतालीस पावहीं
नमन करूं पंचांग गुरु को अबै आठ द्रव्य सों पूजत मैं सबै ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अरिष्ट गनधरादि तेतालीस विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में आपके विराजहीं, सामान केवली चार हजार ही।
पांच सौ और अधिक विराजें प्रभू सबै नमन पूजन करते हम अबै

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली साड़े चार हजार विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में आपके विराजहीं, श्रुत केवली नौ सौ पावहीं।
नमन करूं अष्टांग प्रभु को अबै, आठ द्रव्य सों पूजत मैं सबै।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली नौ सौ विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके विराजहीं सूत्र अभ्यासी चालीस हजार ही।
अधिक सात सौ और विराजहीं नमन पूजन हम ही करावहीं॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सूत्र अभ्यासी चालीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में आपके विराजहीं, अवधि ज्ञानी तीन हजार ही।
अधिक सात सौ और विराजहीं, नमन पूजन हम ही करावहीं।

ॐ ह्रीं समोशरन में अवधि ज्ञानी तीन हजार सात सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में आपके विराजहीं मनः पर्य्यय ज्ञानी चार हजार ही।
अधिक और पाँच सौ विराजही नमन पूजन सबकी करावही॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साडे चार हजार साधू विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में आपके विराजही वैक्रियक साधू सात हजार ही।
नमन करूं पंचांग गुरु की अबै आठ द्रव्य सों पूजत मैं सबै॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी सात हजार साधू विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में आपके विराजही वादित्य रिद्धिधारी दोय हजारही
अधिक आठ सौ और विराजही नमन पूजन हम ही करावहो॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी दो हजार आठ सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में आपके महाराजजो एकत्र साधू चौसठ हजार नी।
नमन करूं अष्टाँग सब कों अबै आठ द्रव्य सों पूजत मैं सबै॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र साधू सातों संघ के चौसठ हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके विराजही मोक्ष साधू उनचास हजार ही।
अधिक सात सौ और विराही नमन पूजन हम ही करते सही।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातो संग में से मोक्ष जाने वाले साधू उनचास हजार सात सौ विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में अजंका विराजहीं, सुव्रतादि बासठ हजार ही।
अधिक चार सौ ऊपर जानिये वंदामि कह अर्घ चढ़ाइये॥

ॐ ह्रीं आपके समीशरन में अर्जका माता बासठ हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समौशरन में ऐलक छुल्लक जानिये दोय लाख की गिनती मानिये
इच्छामि कह अर्घ देत हूँ, ताके फल में शान्ति चाह हूँ ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक दो लाख विराजमान य अर्घं ॥१३॥

समौशरन में छुल्लका मातहीं चार लाख की गिनती पावहीं।
इच्छामि कह अर्घ देत हों ताके फल में शांति चाह हों ॥

ॐ ह्रीं आपके समीशरन में छुल्लका माता चार लाख हैं तिनको अर्घं ॥१४॥

श्री धर्मनाथ के वज्रदंड चिन्ह है सुदत्त वर कूट तैं मोक्ष पधार हैं
आठ सौ एक मुनि हैं संग में नमन पूजन हम ही करावं हैं ॥

ॐ ह्रीं सुदत्त वर कूट तें धर्मनाथ जिनेन्द्र आठ सौ एक मुनि सहित मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

तीर्थ आपके दश साधू ऐसे भये आठ प्रकार उपसर्ग सहित भये।
अन्तर मुहूर्त में कर्म सब नाशकैं नमन पूजन हम ही कराय कैं ॥

ॐ ह्रीं आपके तार्थ में दश साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह कर अन्तः कृत केवली होय मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१६॥

तीर्थ आपके में दश साधू भये आठ प्रकार उपसर्ग सहते भये।
आऊ पूर्ण कर भये अहिमेन्द्र जू नमन पूजन हम ही करत जू ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू ऐसे भये आठ प्रकार उपसर्ग सह आयु पूर्ण कर अनोत्तर विमान में अहमेन्द्र होते भये ऐसे साधू अर्घ १७

तीर्थ आपके अनुवध केवली भये बत्तीस गिनती में होते भये।
अननुवध केवली बहुत से जानिये नमन पूजन हम ही करानीये

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध केवली बत्तीस भये अननुवध केवली बहुत भये तिनको अर्घं ॥१८॥

तीर्थ आपके में पाँचवाँ बलभद्र होते भये नर बस नाम गज-
पंथा से शिवपुर गये।
नमन करूं अष्टांग को अबै आठ द्रव्य सों पूजत मैं सबै ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में पांचवें बलभद्र नरवस नाम के गज पंथा से मोक्ष पधारे तिनके ताहीं अर्घं ॥१९॥

तीर्थ आपके में महाराजजी तीसरे नरपति चक्री होय जी।
ज्ञान दिगम्बर दीक्षा धारी जू नमन पूजन हम ही करेत जू॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में नरपत नाम का चक्रवर्ती दि॰म्बर नगन साधु को अर्घं ॥२०॥

तीर्थ आपके में महाराज जी सनत्कुमार चक्री चौथे भाईजी।
दीक्षा धार सीधे मोक्ष पधारे जी नमन पूजन हम ही करते जी

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ मे सनतकुमार चक्री सिद्धवर कूट तें मोक्ष पधारे अर्घं ॥२१॥

तीर्थ आपके में महाराज जी मोक्ष साधु जितने विराजें जी।
नमन अष्टांग प्रभु को अबै करौ आठ द्रव्य सों पूजत मैं अबै

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधु मोक्ष पधारे तिनको अर्घं २२

तीर्थ आपके में महाराज जी, दिगम्बर निरग्रंथ साधू विराजे जी
नमन करूं पंचांग गुरु को अबै आठ द्रव्य से पूजत मैं अबै।

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निर्ग्रंथ साधु विराजमान होवें तिन सबको अर्घं ॥२३॥

तीर्थ आपके में महाराज जी अर्जका ऐलक छुल्लक आए जी।
और छुल्लका जितने विराजही वंदामि इच्छामि कह अर्घ देत जी

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका जितने विराजमान हों उन सबको अर्घं ॥२४॥

श्री धर्मनाथ सुदत्त वर कूट हैं निरवान भूमि आपकी पवित्र है
जहां से मोक्ष मुनिराजजी उनईस कोड़ा कोड़ी उनईश कोड़ जी
नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवै नमन पूजन हम ही करात हैं

ॐ ह्रीं आपकी निर्वाण भूमि से उनईश कोड़ा कोडो उनईश कौड नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिन सब को अर्घं ॥२५॥

श्री धर्मनाथ भगवान महाराज जी ।
अरजी मोरी सुनिये महाराज जी ॥
समोशरन के साधू महाराज जी ।
मोरी विनती सुनिये महाराज जी ॥
सकल तीर्थ के साधू महाराज जी ।
अरजी मोरी चित में दीजे महाराज जी ॥
जब लग मोक्ष न मोरो है प्रभु ।
तब लग भव भव मैं मांगत प्रभु ॥
चारों आराधन कर आराध हूँ ।
मरते समय जे सब विधि चाहत हूँ ॥

इत्याशीर्वादः ।

जयमाला दोहा।

चौदवें भगवान को मोक्ष गये आधा पल्ल सो जान।
मध्य लोक में आयकें जन्में धर्मनाथ भगवान ॥

पद्धरी छंद।

तिथि वैसाख वदी तेरस सो आय, रेवती नक्षत्र पहुंचों सो आय
सर्वार्थ रिद्धि को छोड़ आय, रेवती रानी के गर्भ रहाय ॥१॥
रतनपुरी नगरी सो जान, देवन कीनो कल्यान आन।
तिथि माघ सुदी तेरस सो आय, पुष्प नक्षत्र लागो सो आन २
रेवती माता ने जन्म दीन, सिद्ध सेन पिता आनंद लीन;
फिर चतुर निकाय के देव आय, कल्यानक कर आनंद पाय ३।
पग में वज्र दंड का चिन्ह होय, सुवर्न समान शरीर होय।
इक्ष्वाक वंश में जनम होय, पैतालीस धनुष ऊँचाई होय ।४।
दश लाख वर्ष की आऊ जान, अढ़ाई लाख वर्ष कुमार काल जान।
फिर राज्य कियो पांच लाख वर्ष, महामंडलेश्वर पदवी जो हर्ष ५
उलका पात देख वैराग आय; लौकान्तिक पहुंचे तुरत आय।
तिथि माघ सुदी तेरस आय, पुष्प नक्षत्र पहुँचो सो आय।६।
फिर चतुर निकाय के देव आय, सिद्धार्थ पालकी लई सजाय।
प्रभु को बैठार आकाश जाय, रतनपुरी आम्र बाग जाय।७।
दूध पर्न वृक्ष तल धरी जाय, बेला उपवास धरे जिनाय।
संध्या समय दीक्षा जो धार, राजा हजार संग दीक्षा धार ।८।
फिर भाव भये हैं आहार काज, वर्धमानपुरी को करो वास।
राजा सुमत ने लये पड़गाय, गौ दुग्ध खीर दीनी जिनाय ।९।

बेला पारना कर जिनाय, एक मास मौन लै तप जिनाय।
फिर रतनपुरी मनोहर बाग आय, बेला उपवास धरो जिनाय १०
तिथि पौष सुदी पूनै सो आय; पुष्प नक्षत्र पहुंची सी आय।
नन्दी वृक्ष तलै ज्ञान पाय, फिर चतुर निकाय के देव आय ११
दिन के पिछले पहर जान, प्रभु पंचम ज्ञान लहो महान।
समोशरन रचना जौ कीन, पांच योजन का विस्तार लीन १२
बारह सभा के मध्य सोय, तीर्थंकर प्रभु का उपदेश होय।
एक मास घाट अढ़ाई लाख वर्ष, केवल ज्ञान सहित बिहार हर्ष १३
फिर भ्रमण करत मधुबन में आय, सब जन के मन आनंद भाय
जब आऊ रही एक मास सोय, सुदत्त वर कूट पै पहुंच होय १४
दिव्य ध्वनि को बंद कीन्ह, समोशरन रचना विलीन।
तिथि जेठ वदी चौथ होय, रेवती नक्षत्र पहुंचो सी होय।१५।
सूर्य उदय तब होय सोय, काउत सर्ग आसन मोक्ष होय।
साथ में आठ सौ मुनी मोक्ष, अन्त रहित सुख लयो मोक्ष।१६।
फिर चतुर निकाय के देव आय; कल्यानक कर घर को सो जाय।
इनके तीर्थ में धर्म विछोह; पाव पल्ल कों नहिं रहो होय।१७।
घत्ता–दोहा श्री धर्मनाथ भगवान, कृपा प्रभूजी कीजिये।
फिर न परौं भव कूप वह समाज मोहि दीजिये ॥

ॐ ह्रीं श्रीं धर्मनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं।

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधि होय ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

❀ श्री शान्तिनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा–शान्तिनाथ महाराज शान्ति लाभ मोहि दीजिये।
शान्ति करन के काज शान्तिनाथ जिन पूजिये ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

छंद।

शुभ तीर्थ उद्भव जल अनूपम मिष्ट शीतल ल्याय कें।
भव त्रषा कन्द निकंद कारन शुद्ध घट भरवाय कें॥
श्री शान्तिनाथ अनाथ मैंटौं मोह फ़ौज बचाइये।
कर जोड़ जौ वरदान मांगूं मुक्ति रमनी सों रमाइये॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जलं।

श्री खंड कदली नंद केशर मंद मंद घिसाय कैं।
तस गंध प्रसरित दिग दिगंतर भर कटोरी ल्याय कैं॥
श्री शान्ति० सुगंधं ॥२॥

अति धवल अक्षित खंड वरजित मिष्ट राजन भोग के।
कल धौत थारा भार सुन्दर चुनत सब उपजोग के॥
श्री शान्ति० अक्षतं ॥३॥

बहु वर्ण सुवर्न आछे अमल कमल गुलाब के।
केतुकी चम्पा चार मरुवा चुने निज कर चाव के॥
श्री शान्ति० पुष्पं ॥४॥

पकवान नाना भाँति के चतुर रचित शुद्ध नये नये।
सद मिष्ठ लाडू आदि भर बहु सुवरन के थारन लये ॥
श्री शान्ति० नैवेद्यं ॥५॥

कल धौत दीपक जड़ित नाना भरत बाहु घृत सार सों।
अति ज्वलत जग मग जोत नाकी तिमिर नाशन हार सों॥
श्री शान्ति० दीपं ॥६॥

द्रक चक्र गंधिक होत जाकर दश विधि धूप बनाय ही।
सो ल्यांय मन वच काय सुध लगांय कर खेहू सही ॥
श्री शान्ति० धूपं ॥७॥

बादाम खारक अमृत प्यारे मिष्ठ शुद्ध लै आय कैं।
आम नीबू केला लै आओ दाख थाल भराय कैं ॥
श्री शान्ति० फलं ॥८॥

जल गंध अक्षित पुष्प नेवज दीप धूप फल लीजिये।
थाल भरकें रतन के सुच प्रभुजी के चरन चढ़ाइये ॥
श्री शान्ति० अर्घं ॥९॥

सोरठा—श्री शान्तिनाथ महाराज शान्ति के भंडार हो।
अपनी निधि मुझे देव, कमी न पड़ भंडार में ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र पंच कल्याण प्राप्ताये अर्घं।

ढार नन्दीश्वर पूजा की।

श्री शान्तिनाथ जिनराज समोशरन में बैठ रहे।
लहि केवल ज्ञान प्रकाश बारहा सभा के देख रहे ॥

मैं नमन करूं अष्टाँग पूजों वसु विधि सों ।
मैं आतम अनुभव पाय मोक्षपुरी जासों ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ भगवान समोशरन में विराजमानाय केवल ज्ञान सहिताय अर्घं ॥१॥

समोशरन में महाराज गनधर सब बैठे ।
चक्र आऊध को दे आदि छत्तीस बैठे ।
मैं नमन करूं अष्टाँग पूजों वसु विधि सों ॥
मैं आतम अनुभव पाय मोक्षपुरी जासौ ।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में चक्र आऊध गनधर को आदि हैं छत्तीस गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में महाराज सामान केवली बैठे ।
गिनती है चार हजार सुदृष्टि तरंगनी में देखौ ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली चार हजार विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में महाराज श्रुत केवली बैठे ।
गिनती में आठ सौ जान सुदृष्टि तरगनी देखै ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में आठ सौ श्रुत केवली विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में महाराज सूत्र अभ्यासी देखै ।
गिनती में इकतालीस हजार आठ सौ और बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी इकतालीस हजार आठ सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में महाराज अवधि ज्ञानी बैठे ।
गिनती में तीन हजार सुदृष्टि तरंगनी देखै ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में तीन हजार अवधि ज्ञानी साधु विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में महाराज मनः पर्य्यय ज्ञानी बैठे ।
गिनती में चार हजार सुदृष्टि तरंगनी देखै ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी चार हजार साधु विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में महाराज वैक्रियक साधू बैठे ।
गिनती में छह हजार और नहीं बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन मे वैक्रियक रिद्धिधारी साधू छह हजार विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में महाराज वादित्य रिद्धिधारी बैठे ।
गिनती में दो हजार चार सौ और बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धधारी साधू दो हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में महाराज एकत्र साधू बैठे ।
गिनती में बासठ हजार सातौं संघ के बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र सातौं संघ के बासठ हजार साधू विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में महाराज मोक्ष साधू बैठे ।
गिनती में उनचास हजार चार सौ और बैठे ॥
मैं नमन करूं अष्टांग पूजों वसु विधि सों ।
मैं आतम अनुभव पाय मोक्षपुरी जासों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष जाने वाले साधु उनचास हजार चार सौ साधु विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समौशरन में महाराज अर्जका माता बैठीं।
हरसेना को देके आदि साठ हजार तीन सौ बैठीं॥
वंदामि करूं मैं सोय समौशरन के अन्दर ।
मैं देहों सबको अर्घ अपने भावन अन्दर॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में हरसेना अर्जका को आद देव साठ हजार तीन सौ विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में महाराज ऐलक छुल्लक बैठे ।
श्रुत कीर्ति को देकें आदि दो लाख ही बैठे॥

इच्छामि करों० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत कीर्त को आदि देय ऐलक छुल्लक दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में महाराज छुल्लका माता बैठीं।
अरह दासी को देके आद चार लाखही बैठीं॥

इच्छामि० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अरह दासी छुल्लका को आदि देय चार लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्री शान्तिनाथ महाराज हिरन का चिन्ह पग में।
श्री शान्ति कूट तैं मोक्ष नौ सौ साधु संग में॥

मैं नमन करूं अष्टांग० ॐ ह्रीं शान्ति कूट तैं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नव सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१५॥

तीर्थ आपके में महाराज दश साधू ऐसे भये।
आठ प्रकार उपसर्ग सह मुक्तिपुरी जाते भये॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अन्तः कृत केवली होय मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१६॥

तीर्थ आपके में महाराज दश साधू ऐसे भये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह महेन्द्र जो होते भये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अनुत्तर विमान में उत्पन्न भये ऐसे साधू को अर्घं ॥१७॥

आपके तीर्थं में महाराज अनुवध केवली भये ।
गिनती के आठ और बीस अननुवध केवली ज्यादा भये ॥

मैं नमन करूं अष्टांग० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध केवली अठाईश विराजमानाय अननुवध केवली ज्यादा विराजे अर्घं ॥१८॥

श्री शान्ति महाराज सोलह तीर्थंकर ।
पंचम चक्री हैं सोय बारम काम देव कर ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आप सोलम तीर्थंकर पांचवा चक्री और बारम काम देव होते भये आपको अर्घं ॥१९॥

तीर्थं आपके में महाराज मोक्ष साधू बैठे ।
गिनती में जितने होंय सब ही मन भासे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने लाख साधू मोक्ष पधारे होवें तिन सब को अर्घं ॥२०॥

तीर्थं आपके महाराज दिगम्बर निर्ग्रंथ भये ।

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधु मोक्ष पधारे होंय तिनको अर्घं ॥२१॥

तीर्थं आपके में महाराज अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका ।
वंदामि करूं इच्छाकार सब ही को अर्घ धरूं ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका जितने बैठे तिनको अर्घं ॥२२॥

आपकी निर्वान भूमि से महाराज साधू मौक्ष गये।
शान्ति प्रभ कूट तैं जान नौ कोड़ा कोड़ी भये॥
नौ लाख नौ हैं हजार नौ सौ निन्यानवे भये।

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपकी निर्वान भूमि से नौ कोड़ा कोडी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे अर्घं ॥२३॥

श्री शान्तिनाथ महाराज अरज सुन लीजे।
समौशरन के महाराज अरज चित दीजे॥
सकल तीर्थ के महाराज विनती सुन लीजे।
रिषभचन्द घवड़ाय हस्तावलंवन दीजे॥
जब लग मौक्ष न होय तब लग भव भव में।
चारों आराधन आराध पुद्गल छोडन में॥

इत्याशीर्वाद।

दोहा—पन्द्रहमें तीर्थंकर को मौक्ष गये पौन पल्य घट जान।
तीन सागर होते भये मध्य लोक में आन॥

पद्धडी छन्द।

तिथि भादों सुदी सातें सो आय, भरनी नक्षत्र पहुंचो सों आय
सर्वार्थ सिद्धि को छोड़ आय, ऐला देवी के गर्भ आय॥१॥
फिर चतुर निकाय के देव आय, कल्यानक कर घर कों सी जाय
फिर जेठ वदी चौदस सो आय, भरनी नक्षत्र पहुंचो सो आय २

ऐला देवी ने जन्म दीन, भान राजा पिता आनंद लीन।
फिर चतुरन काय के देव आय; हस्तनापुर में आनंद भाय।३।
जन्माभिशेष कर प्रभू सोय, माता सेवा को देवी होय।
पग चिन्ह हिरन का प्रभु होय, सुवर्ण समान शरीर होय।४।
कुरु वंश में प्रभु जनम होय, चालीस धनुष ऊँचाई होय।
आऊ कही एक लाख वर्ष, कुमार काल पचीस हजार वर्ष।५।
पदवी चक्री कामदेव जान, तीनों पदवी भगवान मान।
पचास हजार वर्ष राज्य कीन, दया धरम में हैं प्रवीन ॥६॥
जनम इस मरन तें वैराग्य आय, लौकाँतिक पहुंचे देव आय।
तिथि जेठ वदी तेरस सो आय, भरनी नक्षत्र पहुंचो सो आय ७
फिर चतुर निकायक देव आय, विजया पालकी लई सजाय।
प्रभु को बैठार आकाश जाय, हस्तनापुर आम्र वनहि जाय।८।
नन्द वृक्ष तल दई उतार, संध्या के समय पहुंचो सो आय।
राजा हजार संग दीक्षा धार, वेला उपवास धरे जिनाय।९।
फिर आहारन के कुछ भाव होय, सोमपुर नगरी गये सोय।
धर्म मित्र राजा ने लये पड़गाय, गो दुग्ध खीर दीनी जिनाय १०
सोरा बरस तप कियो जिनाय, मोन सहित प्रभु ने भ्रमन भाय।
हस्तनापुर के मनोहर बाग आय, त्रिलू वृक्ष तल ध्यान लाय ११
वेला उपवास धरे जिनाय, पिछलो पहर दिन का सो आय।
प्रभु पंचम ज्ञान भयो जिनाय, फिर चतुर निकाय के देव आय १२

फिर समौशरन रचना कराय; साड़े चार जोजन कही जिनाय
उपदेश दियो प्रभु ने बताय, भव्यन के मन आनंद आय।१३।
सोरा वर्ष कम भई जान, पचीस हजार वर्ष केवल आन।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सब जीवन मन आनंद भाय १४
जब आयु रही एक मास जान; शान्त प्रभ कूट पै पहुंचे आन।
दिव्य ध्वनि कौ बंद कीन, समोशरन रचना विलीन।१५।
तिथि जेठ वदी चौदश सौं आय, पुष्प नक्षित्र पहुंचो सो आय
प्रथम पहर दिन का सो होय, खड़गाशन से प्रभु मोक्ष होय १६
संग में नौ सौ साधू शिव पाय, सबके मन आनंद थाय।
फिर चतुर निकाय के देव आय; कल्यानक कर निज थलहि जाय
इनके तीर्थ में धर्म सोय, चलतौ रहो नहीं अंतर सोय;।
कबहुं मुनि कबहुं केवली जान, कबहुं अर्जका श्रावक जान १८

धत्ता--सोरठा।

शान्तिनाथ प्रभु पूज, आतम शान्ति कराइये।
शान्ति से मिले मोक्ष, रिषभचन्द शान्ति चाहिये॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ॥१९॥

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित; मरन समाधि होय ॥२०॥

इत्याशीर्वाद।

❀ श्री कुन्थुनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा—श्री कुंथुनाथ महाराज कुंथ जीवों की रक्षा करैं।
हमें देव बल रिद्धि तातें हम पूजन करैं॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

नाराच छंद।

मनोग जोग कुंभ मैं सो जोग नीर लै आइये।
जिनेन्द्र चन्द्र पाद अग्र धार तीन चढ़ाइये॥
कुंथुनाथ देव की सो सेव पाद की करूं।
मिटाइये कर्म कलंक मोक्ष सुख आदरूं॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जलं॥१॥

कुम कुमादि चन्दनादि गंध सार ल्याइये।
चढ़ाय कें जिनेन्द्र चन्द भवा ताप निवारिये॥
कुंथुनाथ० सुगंधं॥२॥

सो कुंद इन्दु तुल्य सार तंदुलं अखंडतं।
जजों जिनेन्द्र धौय सार गंध रूप मंडतं॥
कुंथुनाथ० अक्षतं॥३॥

सो केतकी कमोद चंप जुक्त पुष्प लीजिये।
काम वान नाश को प्रभुजी को चढ़ाइये॥
कुंथुनाथ० पुष्पं॥४॥

सो मोद कांद घेवराद सार सद्य ल्याइये ।
नैवेद्य तें क्षुधादि रोग दूर ही कराइये ॥
कुंथुनाथ० नैवेद्यं ॥५॥
बातका कपूर बार ज्योति रूप लै धरूं ।
चढ़ाय प्रभु के समीप मोह को विदा करूं ॥
कुंथुनाथ देव की सो सेव पाद की करूं ।
मिटाइये कर्म कलंक मोक्ष सुख अदारूं । दीपं ।६।
धूप दशाँगी लेय कै रकेबी मध्य में धरूं ।
सो खेइये जिनेन्द्र अग्र अष्ट कर्म लै बरूं ॥
कुंथुनाथ० धूपं ॥७॥
बादाम नीबू आद लेय थाल को भराइये ।
चढ़ाइये जिनेन्द्र पाद मोक्ष फल पाइये ॥
कुंथुनाथ० फलं ॥८॥
जल फलादि अष्ट द्रव्य सो लेय के मनोहरं ।
हेम पात्र धार कै जिनराज के आगे धरूं ॥
कुंथुनाथ० अर्घं ॥९॥

दोहा—गरभ जनम तप ज्ञान युत केवल ज्ञान महान ।
पंचकल्यानक के धनी नमहुं कुंथुनाथ भगवान

ॐ ह्रीं पंचकल्याक प्राप्ताये श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।

जोगी रायसा ।

श्री कुंथुनाथ महाराज प्रभूजी समोशरन में बैठे ।
केवल ज्ञान प्रकाश करें प्रभु बारह सभा विच बैठे ॥

नमन करूं अष्टांग प्रभु को आठ द्रव्य सों पूजौं।
शान्ति लाभ मिलती है तासों निरमल भाव सो हूजो।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥१॥

समोशरन में गनधर बैठे स्वयभू आदि पैतिस जानौ।
नमन करूं पंचांग गुरु को आठ द्रव्य से पूजों ॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में स्वयंभू गनधर आदि को देय पैतीस गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में केवली बैठे दो हजार आठ सौ जानौ।
नमन करूं अष्टाँग प्रभू को आठ द्रव्य से पूजौं ॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली दो हजार आठ सौ विराजमानाय अर्घ ॥३॥

समोशरन में श्रुत केवली बैठे सात सौ गिनती जानौ।
नमन करूं अष्टांग प्रभू को आठ द्रव्य से पूजों ॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली सात सौ विराजमानाय अर्घ ४

समोशरन में शिक्षक सूत्र बैठे तेतालीस हजार सौ जानौ।
एक सौ पचास और ऊपर जानौ नमन पूजन करानौ ॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी तेतालीस हजार एक सौ पचास साधू विराजमाना अर्घं ॥५॥

समोशरन में अवधि ज्ञानी बैठे दो हजार पांच सौ जानों।
नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू दो हजार पांच सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साढ़े सात सौ बैठे।
नमन करूं पंचांग गुरु को आठ द्रव्य से पूजैं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू साड़े सात सौ विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में वैक्रियक साधू पाँच हजार एक सौ बैठे ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक साधू पांच हजार एक सौ विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में वादित्य साधू दो हजार सब बैठे ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन मे वादित्य रिद्धिधारी साधू दो हजार विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में एकत्र साधू साठ हजार सब बैठे ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र सातों संग के साधू साठ हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में मोक्ष साधू छयालीस हजार आठ सौ जानौ ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संघ के मोक्ष साधू छियालीस हजार सात सौ विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में अर्जका बैठीं साठ हजार तीन सौ जानौ ।
बंदामि कह अर्घ चढ़ाऊँ शान्ति लाभ मैं पाऊँ ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अर्जका साठ हजार तीन सौ विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में ऐलक छुल्लक दोय लाख सब जानौ ।
इच्छामि कहकर अर्घ चढ़ाऊँ शांति लाभ मैं पाऊँ ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में छुल्लका बैठीं चार लाख सब बैठीं ।
इच्छामि कह अर्घ चढ़ाऊँ शान्ति लाभ मैं पाऊँ ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका बाई चार लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्री कुंथुनाथ जिनराज प्रभू बकरा का चिन्ह पग में।
ज्ञान धर कूट तें मोक्ष पधारे एक हजार मुनि संग में॥

नमन० ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर के ज्ञान धर कूट तें श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र एक हजार मुनियों के संग मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

तीर्थं आपके दश साधू होते आठ प्रकार उपसर्ग सह के।
अन्तः कृत केवली हो मोक्ष पधारे नमन पूजन करैं हैं॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में १० साधू उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ॥१६॥

तीर्थ आपके दश साधू होते आठ प्रकार उपसर्ग सहकै।
आयु पूरन कर अहिमेन्द्र होते नमन पूजन करकै॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह अनोत्तर विमान में अहमेन्द्र होते भये अर्घं ॥१७॥

तीर्थ आपके अनुवध केवली चौबीस गिनती होते।
अननुवध केवली बहुत से होते नमन पूजन करते॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध केवली चौबीस होते हैं अननुवध बहुत से होते हैं तिन सबको अर्घं ॥१८॥

सतरम तीर्थंकर कुंथनाथ जी चक्री छटम होते।
तेरवें होत कामदेव जी नमन पूजन हम करते॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जी महाराज तीर्थंकर चक्रवर्ती कामदेव इन तीन पदवी सहिताय अर्घं ॥१९॥

तीर्थ आपके मोक्ष साधू बैठे गिनती जितनी होवै।
नमन करूं अष्टांग प्रभू को आठ द्रव्य से पूजों॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधु मोक्ष पधारे होवें उन सब को अर्घं ॥२०॥

तीर्थ आपके दिगम्बर निरग्रंथ बैठे गिनती जितनी होवै।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निर्ग्रंथ साधु बैठे होवें तिन सब को अर्घं ॥२१॥

तीर्थ आपके अर्जका बैठीं ऐलक छुल्लक बैठे।
छुल्लका माता जितनी बैठीं वंदामि इच्छामि अर्घं देते॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका जितने विराजे हों उन सब को अर्घं ॥२२॥

श्री कुंथुनाथ महाराज प्रभुजी निर्वान भूमि है आपकी।
मोक्ष गये जितने साधू छियानवे कोड़ा कोड़ी॥
छियानवे कोड़ बत्तीस लाख छियानवे हजार सात सौ वियालीस

नमन करूं० ॐ ह्रीं सम्मेद शिख के ज्ञान धर कूट सें श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्रादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे कोड़ बत्तीस लाख छियानवे हजार सात सौ वियालीस मुनि मोक्ष पधारे अर्घं ॥२३॥

श्री कुंथुनाथ अर्जी सुन लीजे समोसरन के साधू सकल तीर्थं के साधू ऋिषभचंद वर मांगे जब लग मोक्ष न मेरो होवे तब लग भव २ में चारों आराधन आराध मरन समय मरनसमाधी होवे।

इत्यादि आशीर्वादः।

जयमाला दोहा।

सौलवें भगवान को मोक्ष गये आधा पल्ल सो जान।
तब मध्य लोक में आए कुंथुनाथ भगवान॥

पद्धड़ी छंद।

तिथि सावन वदी दशमी सो आय, कृतका नक्षित्र पहुंचौ सो आय
सर्वार्थ सिद्धि को छोड़ आय, श्रीमती देवी के गर्भ आय ।१।
हस्तनापुर नगर आनंद होय, गर्भ कल्यानक कर देव सोय।
तिथि वैसाख सुदी परमा सो आय, भरनी नक्षत्र पहुंचो सो आय २
श्रीमती माता ने जन्म दीन, विश्वसेन पिता आनंद लीन।
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिषेक कर चले जाय ३
सुवर्ण समान शरीर जान, पग चिन्ह कहो वकरा सो जान।
कुरवंश कुल में जनम लीन, पैतीस धनुष काया प्रवीन ।४।
पंचानवे हजार वर्ष आयु जान, कुमार काल तामें सो जाम।
पौने चौवीस हजार वर्ष खेलन कूंदन में गये वर्ष ।।५।।
फिर राज पाय दिग्विजय कीन चक्री कामदेव भये प्रवीन।
सैंतालीस हजार वर्ष राज्य कीन, दया धर्म सहित प्रजा पालीन।६
जनम इस मरन तें वैराग्य आय, लौकांतिक पहुंचे देव आय।
तिथि वैसाख सुदी परमा सो आय, कृतका नक्षत्र पहुंचो सो आय ७
फिर चतुर निकाय के देव आय, विजयंती पालकी लई सजाय
प्रभु को बैठार कांधे धराय. आकाश गमन देवन कराय ।८।
हस्तनापुर आम्र वन सो आय तिलक वृक्ष तल दीनी उतार।
संध्या समय दीक्षा सो लेय, राजा हजार संग दीक्षा लेय ।९।
बेला उपवास धरे जिनाय, केश लुंच कीयो प्रभु जिनाय।
फिर मास भये हैं आहार काज, मंदिरपुर में पहुंचे जिनराज १०
राजा अपराजित ने पडगाय लीन, गो दुग्ध खीर दीनी प्रवीन

संयमकाल सोलह वर्ष जान, मौन सहित प्रभु का भ्रमन जान ११
हस्तनापुर मनोहर बाग जाय, सेतांम वृक्ष तल ध्यान भोय।
बेला उपवास धरे जिनाय, शुक्ल ध्यान का ध्यान भाय १२
तिथि चैत्र सुदी तृतीया सु आय, कृतका नक्षत्र पहुंचो सो आय
पिछलो पहर दिन का सो जान, प्रभू केवल ज्ञान भयो सो जान १३
फिर चतुर निकाय के देव आय, समोशरन रचना कराय।
चार योजन रचना करी बनाय; बारह सभा तामें लगाय १४
फिर भ्रमन कियो प्रभू ने जो सोय, सोलह वर्ष घाट जाये जो होय
चौबीस हजार अढ़ाई वर्ष जान, इतने दिन प्रभु का भ्रमन जान १५
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सब ही जन को आनंद भाय
फिर जानी आयु रही मास, ज्ञान धर कूट पै पहुंचे आय।१६।
दिव्य ध्वनि को बंद कीन, समोशरन रचना विलीन।
तिथि बैसाख वदी परमा सो आय, भरनी नक्षित्र पहु चो सो आय
रात्रि के समय मोक्ष होय; खडगासन से जाने जो सोय।
हजार साधू संग मोक्ष जान, केवल ज्ञान समय से मोक्ष जान १८
फिर चतुर निकाय के देव आय, निरवान कल्यानक लयो मनाय
इनके तीर्थ में धर्म सोय; चलतो रहो नहिं फर्क होय।१९।

घत्ता-सोरठा।

कुंथुनाथ महाराज मैं अनाथ चिरकाल का।
कर धर नाऊं माथ रिषभचन्द वर माँगता॥

ॐ ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ॥२०॥

जब लग या संसार में भ्रमन हमारा होय,।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरण समाधी होय॥

इत्याशीर्वादः।

❀ श्री अरहनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा—अरहनाथ महाराज अरी वैरी को मगाइये ।
अरी माने हैं मोहनी इस का नाश कराइये ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट ।

ढार नन्दीश्वर पूजा की ।

लै शीतल प्रासुक वार सुवरन भृंग भरौं ।
प्रभु चरनन तट दै धार जन्मन मरन हरौं ॥
श्री अरहनाथ महाराज चरनन पूज करौं ।
मैटो भव दुख का वास पाइन वास करूं ॥
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जलं ॥१॥

चन्दन केशर करपूर घिस कर जल माही ।
प्रभु पद तट धार निकार भव आताप नहीं ॥
श्री अरहनाथ सुगंधं ॥२॥

लै तंदुल अमल अखंड भर कर कैं थारी ।
तुम पूज करी सुख कन्द भव्यन सुखकारी ॥
श्री अरहनाथ० अक्षतं ॥३॥

तिहुं जग के लै बहु फूल तुमरी भेंट कियो ।
कियो काम विथा निरमूल इन बहु दुख दीयो ॥
श्री अरहनाथ० पुष्पं ॥४॥

नई वेद लई शुचि सार रसना का रंजन ।
तुम चरनन दई चढ़ाय हौ तुम दुख भंजन ॥
श्री अरहनाथ० नैवेद्यं ॥५॥
कपूर बाती ज्योति जगाय तुम को ध्यावत हूँ ॥
कर कर्म नाश दुख दाय तुम गुन गावत हूं ॥
श्री अरहनाथ० दीपं ॥६॥
दश धूप आगन के माह में तुम ढिग खेई ।
रहे दुष्ट कर्म कोई नाँहिं शिवपुर वास लई ॥
श्री अरहनाथ धूपं० ॥७॥
फल पिस्ता आदिक ल्याय बाजे अधिक बजा ।
प्रभु पद भेंट चढ़ाय सब पर माद भजा ॥
श्री अरहनाथ० फलं ॥८॥
लै आठों द्रव्य सम्हाल अर्घ किया प्यारा ।
प्रभु आठों कर्म निवार पाऊँ शिव धारा ॥
श्री अरहनाथ० अर्घं ॥९॥

सोरठा—भव दधि तारन हार पांच कल्यानक के धनी ।
तातें तारो नाथ अरहनाथ भगवान जो ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र पंच कल्याण प्राप्ताय पूर्णं अर्घं ।

छंद ।

समोशरन में महाराज अरहनाथ स्वामी बैठे ।
लहै केवल ज्ञान प्रकाश बारा सभा के देखें ॥

मैं नमन करूं अष्टाँग पूजों वसु विधि सों ।
मैं आतम अनुभव पाऊँ मोक्षपुरी जासों ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ भगवान केवल ज्ञान सहिताय समोशरन में विराजमानाय अर्घं १॥

समोशरन में महाराज गनधर सब बैठे ।
कुंभ्य गनधर आदिक तीस नमन पूजन सब को कीनै ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में कुंभ्य गनधर आदि तीस गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में महाराज सामान केवली बैठे ।
गिनती में दोय हजार आठ सौ और बैठे ॥

मैं नमन करूं० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली दो हजार आठ सौ विराजमानाय अर्घं ॥३॥

आपके समोशरन में महाराज श्रुत केवली बैठे ।
गिनती में छह सौ दस जान साधू बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छह सौ दश श्रुत केवली विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में महाराज शिक्षक अभ्यासी साधु ।
गिनती में पैंतीस हजार आठ सौ पैंतीस साधु ।

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशर में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय पैंतीस हजार आठ सौ पैंतीस साधू विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में महाराज अवधि ज्ञानी बैठे ।
गिनती में दो हजार आठ सौ और बैठे ॥

मैं नमन करूं पंचांग० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू दो हजार आठ सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में महाराज मनः पर्य्यय बैठे ।
गिनती में दो हजार पचवन और बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी दो हजार पचवन साधु विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में महाराज वैक्रियक साधु बैठे ।
गिनती में चार हजार तीन सौ और बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधू चार हजार तीन सौ विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में महाराज वादित्त रिद्धिधारी बैठे ।
गिनती में एक हजार छह सौ और बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्त रिद्धिधारी साधू एक हजार छह सौ विराजमानाय तिन सबको अर्घं ॥९॥

समोशरन में महाराज एकत्र साधू बैठे ।
गिनती में पचास हजार सातौं संघ के बैठे ॥

मैं नमन करूं अष्टांग० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र सातों संघ के साधू पचास हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में महाराज मोक्ष साधू बैठे ।
गिनती सैंतालीस हजार एकत्र में से बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष जाने वाले साधू सैंतालीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में महाराज अर्जका माता बैठीं ।
यक्षला माता आदि साठ हजार सब बैठीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में यक्षला अर्जका को आदि देय साठ हजार अर्जकायें विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में महाराज ऐलक छुल्लक बैठे ।
एक लाख हैं सबरे जान इच्छामि कह अर्घ धरूं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक एक लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में महाराज छुल्लका माता बैठीं ।
गिनती में दोय लाख इच्छामि कह अर्घ देते ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता दो लाख विराजमानाय अर्घं । १४॥

श्री अरहनाथ महाराज मछली का चिन्ह पग में ।
नाटक कूट तें मोक्ष हजार मुनिवर संग में ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपकी निर्वाण भूमि नाटक कूट तें एक हजार साधू मोक्ष पधारे तिन सहित आपको अर्घं । १५॥

आपके तीर्थ में महाराज दस साधू ऐसे भये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह मोक्षपुरी जा बसे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दस साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अन्तः कृत केवली होय मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं १६

आपके तीर्थ में महाराज दस साधू ऐसे भये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पदवी पाये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू ऐसे होते भये आठ प्रकार उपसर्ग सह अनुत्तर विमान में उपजे हैं ऐसे साधुन को अर्घं १७

आपके तीर्थ में महाराज अनुवध केवली भये ।
गिनती में सोलह जान अननुवध ज्यादा भये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध केवली सोरा और अननुवध ज्यादा होते भये अर्घं ॥१८॥

आपके तीर्थ में महाराज छटवें बलभद्र भये ।
नंदसेन ताको नाम गज पंथा से मोक्ष गये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में छटवां बलभद्र नंदसेन गज पंथा से मोक्ष पधारे तिर के ताहीं अर्घं ॥१६॥

अठारहवें तीर्थंकर भये आय चक्रवर्ती सातवें कहे ।
चौदह में कामदेव जान मोक्षपुरी नासे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आप अठारहवें तीर्थंकर सातवें चक्रवर्ती और चौदहवें कामदेव ये तीन पद पाय मोक्ष पधारे अर्घं ॥२०॥

आपके तीर्थं में महाराज मोक्ष जाने वाले साधू भये ।
गिनती में जितने होंय मोक्षपुरी जाते भये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधू मोक्ष पधारे होवें उन सबको अर्घं ॥२१॥

आपके तीर्थ में महाराज दिगम्बर निरग्रंथ भये ।
गिनती में जितने होंय मोरे मन भाये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निरग्रंथ साधू विराजमान होंय तिन सबको अर्घं ॥२२॥

आपके तीर्थ में महाराज अर्जका माता बैठीं ।
ऐलक छुल्लक छुल्लका जान वंदौं इच्छामि अर्घ धरूं ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका माता ऐलक छुल्लक छुल्लका विराजमानाय अर्घं ॥२३॥

श्री अरहनाथ भगवान निरवान भूमि नाटक कूट ।
वहाँ से मोक्ष गये वे साधु निन्यानवे कोड़ कहे ॥

ॐ ह्रीं आपकी निर्वान भूमि नाटक कूट से निन्यानवे कोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार मुनि मोक्ष पधारे तिन को अर्घं ॥२४॥

आपके तीर्थ में महाराज अंजन चोर भये।
दीक्षा धर तप कर सोय कैलाश गिरि से मोक्ष भये॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अंजन चोर दीक्षा धर तप कर कैलाशगिरि से मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥२५॥

श्री अरहनाथ भगवान अरजी चित में दीजे।
समोशरन के साधू महाराज अरजी सुन लीजे।
सकल तीर्थ के महाराज विनती सुन लीजे।
रिषभचन्द घबड़ाय हस्तालंबन दीजे॥
चारों आराधन आराध मरते समय पाऊँ।
नमोकार जपते जपते पुद्गल को छोड़ूं॥

इत्याशीर्वाद।

जयमाला दोहा।

सतरहवें भगवान को मोक्ष गये हजार (कोट वर्ष छाट)।
पल्ल पाव पीछूं भये अरहनाथ भगवान॥

पद्धड़ी छंद।

तिथि फागुन सुदी तेरस सो आय, रेवती नक्षत्र पहुंचो सो आय
वैजिअन्त विमान को छोड़ आय, सुमित्रा देवी के गर्भ आय।१
फिर चतुर निकाय के देव आय, कल्यानक कर घर को सो जाय
तिथि अगन सुदी चौदस सो जान; रोहनी नक्षित्र पहुंचो सो आन २
सुमित्रा माता ने जनम दीन, सूर्य पिता ने आनंद लीन।

हस्तनागपुर में आय देव, जन्माभिषेक कर जाय देय ॥३॥
सुवर्ण समान शरीर जान, पग चिन्ह कहो मछली सो जान।
तीस धनुष ऊँचा शरीर मान, कुरु वंश कुल में जनम जान।४।
चौरासी हजार वर्ष आऊ जान, इकईश हजार वर्ष कुमार काल मान
चक्रवर्ती कामदेव पदवी पाय, व्यालीस हजार वर्ष राज पाय।५।
मेघ विनाश वैराग्य आय; लौकाँतिक पहुंचे देव आय।
तिथि अगन वदी दशमी सो आय, रेवती नक्षत्र पहुंचो सो आय ६
फिर चतुर निकाय के देव आय, विजयंती पालकी लई सजाय।
प्रभु को बैठाय कांधे धराय, हस्तनापुर आम्र बाग आय।७।
आम्र वृक्ष तलैं धारी सो जाय, संध्या समय दीक्षा विचार।
बेला उपवास धरे जिनाय; राजा हजार संग दीक्षा को धार।८।
केश लुंच कीयो सबने जिनाय, आहारन के कुछ भाव आय।
हस्तनापुर में गमन जान, नंदसेन राजा पड़गाय मान।१९।
गौ दुग्ध खीर दीनी जिनाय, दाता के घर पंचाचार माय।
संजम काल सोलह वर्ष कीन, मौन सहित प्रभु ने भ्रमन कीन १०
फिर भ्रमन करत हस्तनापुर आये, मनोहर बाग में ध्यान लगाय।
कंकोल वृक्ष तल ध्यान कीन, बेला उपवास का नेम लीन।११।
तिथि कातक सुदी बारस सो जान, रेवती नक्षत्र पहुंचो सो आन
पिछलो पहर दिन का सो होय; प्रभु केवल ज्ञान भयो सोय।१२।
फिर चतुर निकाय के देव आय, समोशरन रचना कराय।
साड़े तीन योजन विस्तार होय, बारह कोठा नामों जो सोय १३

उपदेश देय चार समय होय, भव्यन के हिरदै वास होय।
सोलह वर्ष घट जानो सोय, इकईश हजार वर्ष उपदेश होय १४
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सबके मन आनंद छाय।
फिर जानी आयु एक मास, बाकी रही सो प्रभु विचार।१५।
प्रभु नाटक कूट पहुंचे सु आय दिव्य ध्वनि की बंद कीन।
समोशरन रचना विलीन, सब देव मनुष्य हाथ जोड़ लीन।१६।
तिथि चैत्र वदी अमावस सो आय, कृतका नक्षत्र पहुंचो सो आय
सूर्योदय समय मुक्ति सु होय, खड़गाशन से मुक्ति सोय।१७।
साधु हजार सग मोक्ष जान, केवल ज्ञान से अभी तक जान।
फिर चतुर निकाय के देव आय. निर्वान कल्यानक कियो आय१८
इनके तीर्थ में धर्म सोय, चलतो भी रहो नहिं फर्क होय।
कभी मुनि कहुं केवली होय, कबहूँ अर्जका कबहुं श्रावका होय१९

सोरठा-धत्ता।

अरहनाथ भगवान अर्जी सुन लीजे प्रभु।
भव भव के अघ नाश परम पदवी दीजिये॥
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र जयमाला अर्घं ॥२०॥
जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधी होय॥

इत्याशीर्वाद।

❀ श्री मल्लिनाथ जिनपूजा ❀

सौरठा–मल्लिनाथ भगवान भव दधि तारन आप हो।
और न दूजा सार निमित बली इस लोक में॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

सुन्दरी छंद।

द्रह कुंडन का जल लायकें, बावडी समुद्र को सब ही मिलायकें
हेम कटोरी में भर लै आयकें, प्रभुजी के चरनन देत चढ़ायकें।
श्री मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजिये, जनम जनम के पाप भगाइये।
भक्त भाव बड़ा कर पूजिये, नमन अष्टांग प्रभु को कीजिये।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जलं॥१॥

बावन चंदन घिस कैं लै आइये, कपूर लायची लौंग मिलाइये।
केशर के संग घिसके ल्याइये: प्रभुजी के चरनन देत चढ़ाइये।
मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजिये, जनम जनम के पाप भगाइये।
भक्त भाव बडा कर पूजिये, नमन अष्टांग प्रभु को कीजिये।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय सुगंधं॥२॥

भांति २ के तंदुल लै आइये, बिन टूटे सब देखकर भर लीजिये
कंचन थारी भरकैं लै धरै, प्रभुजो के चरनन भेंट करकें धरै।
श्री मल्लिनाथ• अक्षतं॥३॥

केवड़ा गुलाब चमेली लै आयकैं; प्रभुजी के चरनन देत चढ़ायकैं
श्री मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजिये, काम अंध का नाश कीजिये।
श्री मल्लिनाथ० पुष्पं ॥४॥

नेवज ले लौ भांतन भाँत के; प्रभुजी के चरनन देत चढ़ायकें।
क्षुधा वेदनी नाश कराइये, श्री मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजिये।
श्री मल्लिनाथ० नैवेद्यं ॥५॥

मरकत मन को दीप बनाइये, प्रभुजी के चरन हेत चढ़ाइये।
मिथ्या दर्शन नाश कराइये, श्री मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजिये।
श्री मल्लिनाथ० दीपं ॥६॥

दश प्रकार के धूप बनाइये, अग्नि संग में धूप जराइये।
अष्ट करम का नाश करीजिए, श्री मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजिए
श्री मल्लिनाथ० धूपं ॥७॥

श्रीफल और बादाम मँगाइए, प्रभुजी के चरनन देत चढ़ाइए
अन्तराय का नाश कराइए, श्री मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजिए।
श्री मल्लिनाथ० फलं ॥८॥

जल फलादिक द्रव्य बनायकें, प्रभुजी के चरनन देत चढ़ायकें
राग द्वेष का नाश करीजिए, श्री मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजिए
श्री मल्लिनाथ० अर्घं ॥९॥

सोरठा—श्री मल्लनाथ भगवान ज्ञान मल्ल मोहि दीजिए।
अज्ञान मल का नाश आतम मल्ल प्रकासिए। पूर्णार्घं।

नाराच छंद।

मल्लनाथ जिनेश जी समोशरन में विराजे जी।
केवल ज्ञान प्रकाशजी बारह सभा लगायइए जी॥
नमन करूं अष्टांग जी आठ द्रव्य सों पूजों जी।
शान्ति वास कराय जी मोक्षपुरी बसाय जी॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहित विराजमानाय समोशरन स्थित अर्घं॥१॥

समोशरन में आपके गनधर महाराज पाइए।
विशाखा चार्य आदि दै अठाईश गनधर पाइए॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में विसाखा चार्य गनधर को आदि देकर अठाईश गनधर विराजमानाय अर्घं॥२॥

समोशरन में आपके सामान केवली पाइए।
छह सौ पचास विराजमानाय नमन पूजन कराइए॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली छह सौ पचास विराजमानाय अर्घं॥३॥

समोशरन में आपके श्रुत केवली विराजमान।
पांच सौ पचास गिनती नमन पूजन कराइए॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली साड़े पांच सौ विराजमानाय अर्घं॥४॥

समोशरन में आपके सूत्र अभ्यासी पाइए।
उनतालीस हजार गिनती तिनकी नमन पूजन कराइए॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में उनतालीस हजार शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय विराजमानाय अर्घं॥५॥

समोशरन में आपके अवधि ज्ञानी पाइए ।
दो हजार दो सौ गिनती नमन पूजन कराइए ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू दो हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ।।६॥

समोशरन में आपके मनः पर्य्यय ज्ञानी पाइए ।
दो हजार दो सौ हैं नमन पूजन कराइए ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू दो हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में आपके वैक्रियक साधू पाइए ।
एक हजार चार सौ नमन पूजन कराइए ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधू एक हजार चार सौ विराजमानाय अर्घं ।।८।

समोशरन में आपके वादित्य रिद्धिधारी पाइए ;
दो हजार गिनती तिनकी नमन पूजन कराइए ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी साधू दो हजार विराजमानाय अर्घं ::९॥

समोशरन में आपके एकत्र साधू पाइए ।
चालीस हजार गिनती जिनकी नमन पूजन कराइए ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संग के एकत्र साधू चालीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके मोक्ष साधू पाइए ।
अट्ठाईश हजार आठ सौ नमन पूजन कराइए॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र साधू में से मोक्ष जाने वाले साधु अट्ठाईश हजार आठ सौ विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में आपके अर्जका माता पाइए ।
बंधू सेन आदि दै पचवन हजार पाइए ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में बंधु सेना अर्जका को आदि देय पचवन हजार विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक पाइए ।
एक लाख गिनती तिनकी इच्छामि अर्घ चढ़ाइए ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक एक लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में आपके छुल्लका माता पाइए ।
दोय लाख गिनती तिनकी इच्छामि अर्घ चढ़ाइए ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्री मल्लिनाथ जिनेश जी निर्वान भूमि संबल कूट ।
मोक्ष गये पाँच सौ साथ निर्वान भये आपके साथ ॥

ॐ ह्रीं आप संबल कूट तें पाँच सौ मुनो के साथ मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

तीर्थ आपके में प्रभु दस साधू ऐसे पाइए ;
आठ प्रकार उपसर्ग सह मोक्ष सुख को पाइए ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ मे दस साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह कर अंताकृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ॥१६॥

आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पदवी पाइये ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दस साधू आठ प्रकान उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद प्राप्ताय अर्घं ॥१७॥

तीर्थ आपके में प्रभु अनुवध केवली पाइए ।
चौदा केवली गिनती में अननुवध बहुत पाइए ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध केवली चौदा और अननुवध बहुत से विराजमानाय अर्घं ॥१८॥

तीर्थं आपके में प्रभु बलभद्र सातवां पाइए ।
नन्द मित्र नाम है गज पंथा से मोक्ष पाइए ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में सातवां बलभद्र नंदमित्र गज पंथा से मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१९॥

तीर्थं आपके में प्रभु चक्रवर्ती नौमा पाइए ।
पदम जिनका नाम है मोक्ष लक्ष्मी पाइए ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में नौवें पदम नाम का चक्रवर्ती मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥२०॥

विजय राज कामदेव पन्द्रहवें नम्बर जानिए ।
रेवानदी सिद्ध वर कूट मोक्ष वहां से पाइए ॥
इन्द्रनन्दी आचार्य ने प्रायश्चित ग्रंथ में बताया है ।
नमन करूं अष्टाँग मैं आठ द्रव्य से पूजहौं ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में नौवां चक्रवर्ती पदम और पन्द्रहवें कामदेव विजयराज सिद्धवर कूट रेवा नदीं के तट से मोक्ष पद प्राप्ताय अर्घं २१

तीर्थं आपके में प्रभु मोक्ष साधू पाइए ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधू मोक्ष पधारे होवें तिनको अर्घ ॥२२॥

तीर्थ आपके में प्रभु दिगम्बर निर्ग्रंथ पाइये ।
नमन करूं पंचाँग मैं आठ द्रव्य से पूजिये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दिगम्बर निर्ग्रंथ साधू विराजमान हों अर्घं २३

तीर्थ आपके में प्रभु अर्जका माता पाइए ।
ऐलक छुल्लका वंदामि इच्छामि अर्घ चढ़ाइये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लका जितने विराजमान होवें तिन सबको अर्घं ॥२४॥

श्री मल्लिनाथ भगवान जी निर्वान भूमि संवल कूट ।
मोक्ष गये जितने साधू छयानवे कोड कर्म छूट ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपकी निर्वान भूमि संबल कूट से छयानवे कोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं ॥२५॥

श्री मल्लिनाथ भगवान जी अर्जी मोरी लीजिये ।
समोशरन के साधूजी अर्जी चित में दीजिये ॥
सकल तीर्थ के साधूजी विनती मोरी लीजिये ।
रिषभचन्द घबड़ात है हस्तालंबन दीजिये ॥
चारों आराधन आराध मरते समय चाहिये ।
नमोकार जपते जपते पुद्गल छोड़ना चाहिये ॥

। इत्याशीर्वाद ।

जयमाला दोहा ।

अरहनाथ को मोक्ष गये हजार क्रोट वर्ष जान ।
मध्य लोक में आयके जन्मे मल्लिनाथ भगवान ॥

पद्धड़ा छंद ।

मिती चैत्र सुदी परमा सु आय, असनी नक्षत्र पहुंची सो आय ।
अपराजित विमान को छोड़ आय, सरस्वती देवी के गर्भ आय ।१

फिर चतुर निकाय के देव आय, मिथिलापुरी में आनंद थाय।
गर्भ कल्यानक कर चले देव, सुन्दर सेन पिता को आनंद एव २
तिथि अगन सुदी ग्यारस सो जान, रोहनी नक्षत्र पहुंचो सो आन
सरस्वति माता ने जन्म दीन, सुन्दर सेन पितु आनद लीन।३।
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिशेष कर धरै आय।
तपावे सुवर्न समकाय वर्ण, पग चिन्ह कलश का कहो प्रभाव।४।
इक्ष्वाकु वंश में जनम लीन: पच्चीस धनुष ऊँचाई लीन।
पचवन हजार वर्ष आयु जान, कुमार काल सौ बरस मान।५।
रहे बाल ब्रह्मचारी जिनेश, न राज्य किया न व्याह करेश।
बिजली देख वैराग्य आय, लौकान्तक देव पहुंचे सो आय।६।
तिथि अगन सुदी ग्यारस सो आय, असनी नक्षत्र पहुंचा सो आय
फिर चतुर निकाय के देव आय, अपराजित पालकी लई सजाय ७
प्रभु का बैठार आकाश मार्ग, मिथलापुरी के आम्र बाग।
अशोक वृक्ष तल दई उतार, पूर्वान्ह समय दीक्षा विचार।८।
फिर धारे तीन उपवास सोय, छह सौ संग दीक्षा सो होय।
फिर भोग भये आहार काज, चक्रपुर नगर में गये आज।९।
राजा विश्व दत्त ने पड़गा लिये, गौ दुग्ध खीर आहार दिये।
छह दिन का संयम भयो सोय, मौन सहित प्रभु का विहार होय १०
तिथि पौष वदी दोज आई जान, पुनर वसु नक्षत्र लग्यो सो आन
मिथलापुरी मनोहर बाग जाय, चम्पा वृक्ष तल ध्यान लाय ११
बेला उपवास धरो जिनाय, प्रभात समय केवल सु पाय।
फिर चतुर निकाय के देव आय, समोशरन रचना कराय।१२।

तीन योजन का विस्तार जान, बारह कोठा तामें रहान ।
छह दिन घट चउवन हजार वर्ष; अरु नौ सौ अधिक विहार वर्ष १३
केवल ज्ञान सहित उपदेश देय, भव जीवन के हिरदै धरेय ।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सब जीवन को आनंद भाय १४
फिर जानी आयु एक मास, संवल कूट पर पहुंचे सो जाय ।
दिव्य ध्वनि को बन्द कीन तब समोशरन रचना विलीन १५
तिथि फागुन सुदी पांचे सो आय, रोहनी नक्षत्र पहुंची सो आय
रात्रि के समय मुक्ति सो होय, खड़गासन से जानौ जो सोय १६
संग में साधू पांच सौ मुक्ति होय; केवल ज्ञान के समय तक होय
फिर चतुर निकाय के देव आय निरवान कल्यानक करो जिनाय १७
इनके तीर्थ में धर्म सोय, चलतो रहो न फर्क होय ।
कबहूँ मुनी कबहूँ केवली होंय, कबहूं श्रावक कबहूँ श्राविका होंय १८

सोरठा घत्ता ।

मल्लिनाथ भगवान इतनी भिक्षा दीजिए ।
निश्चय सम्यक्त पाऊँ अरजी रिषभ की सुनीजिए ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घं ।

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय ।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधी होय ॥

इत्याशीर्वाद ।

❀ श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा—मुनि सुव्रत भगवान वीतराग महाराज जी ;
शिव सुख पावन काज पद पूजों मन लायकैं ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रत जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट ।

सुन्दरी छंद

अढ़ाई द्वीप की नदी सबरी कही, एक करोड़ उनअस्सी लाख एक हजार जी ।
इनतैं जल में भरकर ल्यावजी, प्रभुजी के चरनन देत चढ़ावजी ।
श्री मुनि सुव्रत महाराज को पूजिए, मन में ऐसी भावना लीजिए
निर्मल परनाम सो मन में राखि ए, तीन लोक को धनी बनाइए ।
ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रत जिनेन्द्राय जलं ॥१॥
चन्दन सबरी बावन लै आइये, केशर कपूर के संग मिलाइये ।
संसार ताप निवारन करने, प्रभुजी के चरनन देत चढ़ावने ॥
श्री मुनि सुव्रत० सुगंधं ॥२॥
तंदुल चोखे चोखे ल्यायकें प्राशुक पानी से धोयकें ।
अक्षय पद के कारन लै आइये, प्रभुजी के चरनन देत चढ़ाइये ॥
श्री मुनि सुव्रत० अक्षतं ॥३॥
श्री गुलाब के फूल मँगायकें सोध बीन कर थारी भरायकें ॥
काम विनाशन कारने प्रभुजी के चरनन देत चढ़ावने ॥
श्री मुनि सुव्रत० पुष्पं ॥४॥

लाडू नेवज अनेक प्रकार के थारी भर भर कें लैं आयकें।
क्षुधा वेदनी नाशन कारने; प्रभुजी के चरनन देत चढ़ावने॥
श्री मुनि सुव्रत० नैवेद्यं ॥५॥
कर्पूर बाती लैके आइये, हेमरतन की झारी भराइये।
दर्शन मोहनी नाशन कारनै प्रभुजी के चरनन देत चढ़ावने॥
श्री मुनि सुव्रत० दीपं ॥६॥
धूप दशंगी लेकर आइए; अगनी सूं धूप खेना भरवाइए।
अष्ट कर्म के नाशन कराने; धूप खेना में धूप जलावनै॥
श्री मुनि सुव्रत० धूपं ॥७॥
केला और बादाम मँगायकैं भर भर थारी घर से लै आयकें।
मोक्ष महल के पावन कारने; प्रभुजी के चरनन देत चढ़ावने॥
श्री मुनि सुव्रत० फलं ॥८॥
जल फलादिक द्रव्य सो ल्यायकैं, हेम रतन की थाली भरायकें
तीन प्रकार से कर्म नाश कैं, प्रभुजी के चरनन देत चढ़ावने॥
श्री सुव्रत० अर्घं ॥९॥

सोरठा—श्री मुनि सुव्रत जिनराज, पाँच कल्यानक पाय हैं।
हरो हमारी व्याधि सुबुध सम्यक्त मोहि दीजिए॥
ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रत जिनेन्द्र पांच कल्याणक प्राप्तये पूर्णं अर्घं।

अडिल्ल छंद।

श्री मुनि सुव्रत महाराज समोशरन में विराजहीं।
लहि केवल ज्ञान प्रकाश बारह सभा लगावही॥

मैं नमन करूं अष्टाँग पूज वसु विधि सही ।
मैं आतम अनुभव पाय मोक्ष जावो सही ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रत जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहित विराजमानाय अर्घं १

आपके समोशरन में महाराज गनधर पाइए ।
मल्य गनधर आदि अठारह गनधर पाइए ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मल्य गनधरादि अठारह गनधराय अर्घं ॥२॥

समोशरन में महाराज सामान केवली विराजहीं ।
गिनती एक हजार आठ सौ पावहीं ।

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एक हजार आठ सौ केवली विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में महाराज श्रुत केवली विराजहीं ।
गिनती पांच सौ होय सुदृष्टि तरंगनी गावहीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में पांच सौ श्रुत केवली विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके शिक्षक सूत्र अभ्यासी विराजहीं ।
गिनती में इकईश हजार और नहि पावहीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी इकईश हजार विराजमानाय अर्घं ॥५॥

आपके समोशरन में महाराज अवधि ज्ञानी पाइये ।
गिनती में एक हजार आठ सौ पाइये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एक हजार आठ सौ अवधि ज्ञानी विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में महाराज मनः पर्य्यय ज्ञानी पाइये।
गिनती में एक हजार पांच सौ मुनि पाइये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एक हजार पांच सौ मनः पर्य्यय ज्ञानी मुनि बिराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में आपके वैक्रियक साधू विराजहीं।
गिनती दोय हजार दो सौ पावहीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी दो हजार दो सौ मुनि विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में आपके वादित्य रिद्धिधारी पाइये।
गिनती में दोय हजार दोय सौ पावयीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी दोय हजार दोय सौ मुनि विराजमानाय अर्घं ॥९॥

आपके समोशरन में महाराज एकत्र साधू विराजहीं।
गिनतो में तीस हजार सब प्रति धोक हमारी ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में तीस हजार साधू विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके मोक्ष साधू विराजहीं।
गिनती में उनईश हजार दोय सौ पावहीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में उनईश हजार दोय सौ मोक्ष साधू विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में महाराज अर्जका विराजहीं।
पुष्प दन्ता को आदि पचास हजार विराजहीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में पुष्प दन्ता आदि पचास हजार विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक विराजहीं।
बिनती में एक लाख इच्छामि कह अर्घ देवहीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन मे एक लाख ऐलक छुल्लक विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

आपके समोशरन में महाराज छुल्लका विराजहीं।
गिनती में दोय लाख इच्छामि कह अर्घ देवहीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दो लाख छुल्लका विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्री मुनि सुव्रत भगवान कछुवा का चिन्ह है।
निर्जर कूट तें मोक्ष गये एक हजार संग हैं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रत जिनेन्द्रादि हजार मुनि संग निर्जर कूट तें मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१५॥

तीर्थं आपके महाराज दस साधू ऐसे पाइए ;
आठ प्रकार उपसर्ग सह अन्तः कृत केवली हूजिये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह कर अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ॥१६॥

तीर्थं आपके में दश साधू ऐसे पाइये।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद पाइये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दश साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह कर अहमेन्द्र भये तिनको अर्घं ॥१७॥

तीर्थ आपके में महाराज अनुवध केवली पाइये।
गिनती में बारह अननुवध बहुत से पाइये ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अनुवध केवली बारा अननुवध केवली बहुत हुए जिनको अर्घं ॥१८॥

तीर्थ आपके में महाराज अनन्त कीर्ति केवली विराजहीं।
कुल भूषन अरु देश भूषन मुनि विराजहीं ॥
सकल भूषन अरु बाल भूषन केवली विराजहीं।

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनंत वीर्य केवली देश भूषन कुल भूषन सकल भूषन बाल केवली विराजमानाय अर्घं ।१९॥

आपके तीर्थं पौत्र रावण के साढ़े बारह कोड़ जावही ।
नर्वदा तीर से जान नमन पूजन करावही ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में रावन के पौत्र साढ़े बारह कोड़ नर्वदा नदी के तीर से मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥२०॥

आपके तीर्थं में शिव घोष मुनि गये मोक्ष को।
जगत पाद पर्वत से जानौ मोक्ष को ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जगतपाद परवत से शिव घोष मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥२१।

आपके तीर्थं में दशव हरसेन चक्री भये ।
कंपिला नगरी जनम मोक्ष सुख पावहीं ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में हरसेन चकी मोक्ष पधारे अर्घं २२

आपके तीर्थं में अष्टम बलभद्र राम जू ।
शिखर सम्मेद से मोक्ष पधारे जान जू ॥
शिखर महातम में देखो और महावध में ।
उत्तर पुरान में देखो गुण भद्राचार्य बताए जू ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में रामचन्द जी शिखर सम्मेद के निर्जर कूट तें एक कोड़ पैतालीस लाख मुनि मोक्ष पधारे तिन सहित अर्घं ॥२३॥

आपके तीर्थ में महाराज हनुमान नल नील जी ।
सुग्रीव आदि मोक्ष पधारे तुंगी गिरि से जी ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में तुंगी गिरि से हनुमान सुग्रीव राम नल नील मोक्ष पधारे तिन सब को अर्घं ॥२४॥

आपके तीर्थ में जितने साधू मोक्ष गये ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधू मोक्ष पधारे होंय तिन सबको अर्घं ॥२५।

आपके तीर्थ में दिगम्बर निर्ग्रंथ भये ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निर्ग्रन्थ साधू मोक्ष पधारे तिन सबको अर्घं ॥२६॥

आपके तीर्थ में इन्द्रजीत और कुंभकर्ण जी ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में इन्द्रजीत और कुंभकर्ण मोक्ष गये तिनको अर्घं ॥२७।

आपके तीर्थ में भरत मोक्ष गये ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में भरत मोक्ष गये अर्घं ।२८।

आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका ।
वंदामि इच्छामि कह अर्घ देह का ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका जितने भये तिनको अर्घं ।२९।

श्री मुनि सुव्रत महाराज निरवान भूमि है आपकी ।
निर्जर कूट तें निन्यानवै कोड़ा कोड़ी जी ।
सन्तानवे कोड़ नौ लाख नौ सौ निन्यानवे जी ॥
मोक्ष गये सबन की हम पूजा नमन कराय जी ॥

ॐ ह्रीं श्रापकी निर्वान भूमि सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र निर्जर कूट तें मुनि सुव्रत जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी संतावनवे कोड़ नौ लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्ताय अर्घं ३०।

श्री मुनि सुव्रत महाराज अरज सुन लीजिये ।
समोशरन के साधु अरजी लीजिये ॥
सकल तीर्थ के साधु विनती लीजिये ।
रिषभचन्द घबड़ात हस्तावलवन दीजिये ॥
मोक्ष न जोलों होय तव लग भव भव में सही ।
चारों आराधन आराध पुद्गल को छोड़न सही ॥

इत्याशीर्वाद ।

जयमाला दोहा ।

उनईशवें भगवान को मोक्ष गये चउवन लाख वर्ष जान।
फिर मध्य लोक में आयकें जन्मही मुनि सुव्रतनाथ भगवान ॥

पद्धड़ी छंद ।

तिथि सावन वदी दोज आई जान, श्रवन नक्षित्र पहुंचो सो आन
ग्रैवेयक के सुख छोड़ आय, वामा देवी के गर्भ आय ॥१॥
कुसाग्रपुरी नगरी सो जोन; देवन कीनों कल्यान आन ।
वैसाख सुदी दशमी सु आय, श्रवन नक्षित्र पहुंचो सो आन।२।
वामा देवी ने जनम दीन, पिता कुंभक आनन्द लीन ।
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिशेष कर धरै जाय।३।

सुवर्ण समान शरीर जान, कछुवा का चिन्ह पग में कहान।
हरवंश कुल में जनम लीन, बीस धनुप ऊँचाई शरीर लीन।४।
तीस हजार वर्ष की आयु जान, कुमार काल साढ़े सात हजार वर्ष मान
पन्द्रह हजार वर्ष राज्य कीन, महामंडलेश्वर पद जो लीन।५।
जाति स्मरन से वैराग आय, लौकाँतिक पहुंचे सो आय।
वैसाख सुदी नौमी सो आय, श्रवन नक्षित्र पहुँचो सो आय।६।
फिर चतुर निकाय के देव आय, उत्तराकुरु पालकी लई सजाय।
प्रभु को बैठार आकाश जाय, कुशाग्रनगर के बाहर सु आय।७।
नील गुफा निकट पहुंचो सो जाय, मौलिश्री वृक्ष तर धरी जाय
संध्या समय दीक्षा सो धार, वेला उपवास धरे जिनाय।८।
राजा हजार संग दीक्षा सो धार, फिर आहारन के कुछ भाव आय
मथुरापुर को प्रभु गमन होय, राजा दत्य ने पड़गाय होय।९।
गौ दुग्ध की खीर दई जिनाय, देवन पंचाचार रतन दये बरसाय
ग्यारह मास भये तप करते सोय मौन सहित प्रभु का विहार होय १०
तिथि वैसाख वदी नौमी सो आय, श्रवन नक्षत्र पहुंचो सो आय
कुशाग्रपुरी मनोहर बाग आय, बकुल वृक्ष तरै प्रभु ध्यान लाय ११
पिछलो पहर दिन का सो होय जागो प्रभु केवल ज्ञान सोय।
फिर चतुर निकाय के देव आय, समोशरन रचना कराय।१२।
अढ़ाई योजन विस्तार जान, बारह योजन सभा लगी प्रमान।
प्रभु केवल ज्ञान उपदेश देय, भव्य जीवन के हिरदें धरेय।१३।

ग्यारह महीना घट जान सोय, साडे सात हजार वर्ष बिहार होय
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय. सब जीवन के आनंद थाय १४
फिर जानी आयु रही एक मास आय, निरजर कूट पै पहुंचे सो जाय
दिव्य ध्वनि जब बंद होय, समोशरन रचना विलीन सोय।१५।
तिथि फागुन सुदी तेरस सु आय, असनी नक्षत्र पहुंचो सो आय
रात्रि के समय निर्वाण होय, खड़गाशन से प्रभु मोक्ष होय १६
साधू हजार संग मोक्ष जान, अनंतानंत सुख लहो सो आन।
फिर चतुर निकाय के देव आय कल्यानक कर घर को सो आय १७
इनके तीर्थ में धर्म सोय; चलतो सो रहो नहिं अंत होय।
अरजी मोरी है बार बार, रिषभचन्द को भव दधि से तार तार १८

घत्ता सोरठा।

मुनि सुव्रत महाराज जन्म रोग विनाश करो।
आयो तुम दरबार भव सागर से पार करो।१९।

ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं।

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधी होय॥ २०

इत्याशीर्वाद।

❀ श्री नमिनाथ जिनपूजा ❀

सोरठा–श्री नमिनाथ भगवान इस असार संसार में।
वसु विध गुण महाराज सम्यक्त गुण मोहि दीजिये।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

नाराच छंद।

महान गंध सार नीर ल्यायये सो चीर सों।
पवित्र कुंभ हेम के भराइये कलश हाथ सों॥
नमिनाथ महाराज जो अरजी मेरी लीजिये।
शान्ति सुध दीजिये इतना जस लीजिये॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जलं।१।

चन्दनादि सुगंधसार केशर मंगायकें।
कपूर लौंग लायची गारहौं चढ़ायकें॥
नमिनाथ सुगंधं॥२॥
लाय अखंड अक्षतं पवित्र सेत भावहीं।
भरे महान थार ल्याय कुंद की लजावहीं॥
नमिनाथ० अक्षतं॥३॥
श्री गुलाब केवड़ा चमेली आदि ल्यायकें।
काम बान नासवे को प्रभु के अग्र धारकें॥
नमिनाथ० पुष्पं॥४॥

घेवरादि मौदकाद थार में भरायकें ।
सो हाथ माहीं लेय शुद्ध भाव को लगायकें ॥
नमिनाथ० नैवेद्यं ॥५॥
कपूर बात दीप में बड़ो उद्योत होत है ।
कहूँ न लेश धूम को महान ज्योति होत है ॥
नमिनाथ० दीपं ॥६॥
दशांग धूप लेयकें हेम पात्र धारिये ।
अग्नि को मंगायकें सन्मुख हो जलाइये ॥
नमिनाथ० धूपं ॥७॥
नाशपाती सेवफल नारंगी संतरा लीजिये ।
नारियल बादाम लै पिस्ता अंगूर चढ़ाइये ॥
नमिनाथ० फलं ॥८॥
नीर गंध अक्षित पुष्प नैवेद्य दीप धूप फलार्थ कें ।
एकत्र सब मिलायकें देहुं चरन चढ़ाय कें ॥
नमिनाथ० अर्घं ॥९॥

सोरठा—पूजौं पाँच कल्यान रिषभचन्द चरनन पड़ौ ।
मेटहु भव भट काय, नमिनाथ विनती करूं ॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्राप्तये पूर्णं अर्घं ।

नाराच छंद ।

समोशरन में विराजहीं, नमिनाथ भगवान जी ।
केवल ज्ञान प्रकाश कें बारह सभा लगाय जी ॥

नमन करूं अष्टांग में आठ द्रव्य सों पूजहों ।
क्रम अनुभव पायकें मोक्षपुरी कों जाऊं हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रेभ्यो केवल ज्ञान सहित समोशरन में विराजमानाय अर्घं ॥१॥

समोशरन में आपके गनधर सतरह पावहीं ।
सुप्रभु गनधर आदि हैं सातौं रिद्धि पावहीं ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सुप्रभु गनधर आदि देयं सतरा गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में आपके सामान केवली पावहीं ।
गिनती में एक हजार और छह सौ विराजहीं ॥

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली एक हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में आपके श्रुत केवली विराजहीं ।
चार सौ पचास गिनती जिनकी सुदृष्टि तरंगनी पावहीं ।

नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली चार सौ पचास विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में आपके सूत्र अभ्यासी पावहीं ।
तेरा हजार छह सौ जानो नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय तेरह हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में आपके अवधि ज्ञानी विराजहीं ।
एक हजार छह सौ जानौ नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्री आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू एक हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में आपके मनः पर्य्यय ज्ञानी पावहीं ।
एक हजार दो सौ पचास नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू एक हजार दो सौ पचास विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में आपके वैक्रियक साधू पावहीं ।
गिनती में हैं पन्द्रह सौ नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक साधू पन्द्रह सौ विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में आपके वादित्य साधू पावहीं ।
गिनती में एक हजार नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एक हजार वादित्य साधू विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में आपके एकत्र साधू पाइये ।
गिनती में हैं बीस हजार नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संग के एकत्र बीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में आपके मोक्ष साधू विराजहीं ।
नौ हजार छह सौ साधू नमन पूजन करावहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष जाने वाले साधू नौ हजार छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में आपके अर्जका चालीस हजार हैं ।
गिनती अर्जका आदि दै वंदामि अर्घ चढ़ावहौं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में चालीस हजार अर्जकाएं विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में आपके ऐलक छुल्लक पावहीं ।
गिनती में हैं एक लाख इच्छामि अर्घ देवहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एक लाख ऐलक छुल्लक विराजमानाय अर्घं ॥१३।

समोशान में आपके छुल्लका माता पावहीं ।
गिनती में दोय लाख इच्छामि अर्घ देवहीं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्री नमिनाथ भगवान जी लाल कमल का चिन्ह है ।
श्री मित्रधर कूट से हजार संग मोक्ष गये हैं ॥

नमन० ॐ ह्रीं मित्रधर कूट तें श्री नमिनाथ भगवान एक हजार मुनियों के संग मोक्ष पधारे अर्घं ॥१५॥

तीर्थ आपके में प्रभु दश साधू ऐसे पावहीं ।
आट प्रकार उपसर्ग सह मोक्ष लक्ष्मी पावहीं ॥

नमन० ॐ आपके समोशरन में आठ प्रकार उपसर्ग सह दश साधू अंतः कृत केवली होते भये अर्घं ॥१६॥

तीर्थ आपके में प्रभु दस साधू ऐसे भये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पदवी पाते भये ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दश साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सहकर अहमेन्द्र पद पाते भये अर्घं ॥१७॥

समोशरन में आपके अनुवध केवली आठ हैं ।
अननुवध जितने हों नमन पूजन सबन को हौ ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध केवली आठ हैं अननुवध जितने होंय तिन सबको अर्घं ।१८।

तीर्थ आपके में प्रभु ग्यारहवें जयसेन चक्री भये ।
शिखर सम्मेद तें मोक्ष गये नमन पूजन करते भये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में ग्यारहवें जयसेन चक्रवर्ती शिखर सम्मेद से मोक्ष पधारे अर्घं ।१९।

तीर्थ आपके में प्रभु मन्दिर स्थावर मेघरथ धनदत्य साधू तीन ।
राजगिरि से मोक्ष पधारे नमन करूं अष्ट द्रव्य से पूजा कीन ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में मन्दिर स्थवर धनदत्य राजगिरि से मोक्ष पधारे अर्घं ।२०।

तीर्थ आपके प्रभु मोक्ष साधु पाइये ।
गिनती में जितने हों नमन पूजन कराइये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधु मोक्ष पधारे होवें तिनको अर्घं २१

तीर्थ आपके में प्रभु दिगम्बर निरग्रंथ पाइये ।
बहु विधि नमन पूजन भक्ति कराइये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निरग्रंथ साधु होवें तिन सबको अर्घं ।२२।

तीर्थ आपके में प्रभु अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका हों ।
वंदामि कह इच्छामि कह अर्घ सबन कों देत हों ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका जितने हों तिन सबको अर्घं ।२३।

तीर्थ आपके में प्रभु बल गजा कामदेव ।
रेवा नदी सिद्ध वर कूट तें मोक्ष लेव ॥
ताम्बू लूर आचार्य ने कहा चूड़ामणि शास्त्र में ।
नमन पूजन करूं आठ द्रव्य से ।

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में बलराजा कामदेव रेवा नदी सिद्धवर कूट तें मोक्ष पधारे अर्घं २४

श्री नमिनाथ भगवान जी निर्वान भूमि है आपकी।
मित्रधर कूट है मोक्ष गये नौ सौ कोड़ा कोड़ी एक अरब
पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बियालीस सरब।

नमन ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर मित्र धर कूट तें श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नौ सौ कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बियालीस मुनि मोक्ष प्राप्ताय अर्घं २५।

श्री नमिनाथ भगवान जी अरजी मोरी लीजिये।
समोशर। के साधुजी अरजी चित में दीजिये॥
सकल तीर्थ के साधुजी विनती मोरी लीजियेजी
गिरधरचन्द घबड़ात है हस्तावलम्बन दीजिये॥
जब लग मोक्ष न होय प्रभु तब लग भव भव में सही।
चारों आराधन आराध के पुद्गल को छोड़ो सही॥

इत्याशीर्वाद।

जयमाला।

दोहा—बीसवें भगवान को प्रभु मोक्ष गये छह लाख बर्ष।
मध्य लोक में आयकें नमिनाथ जिन दर्श॥

पद्धड़ी छंद।

तिथि कुंवार वदी दोज आय जान, अश्वनी नक्षत्र पहुंचो सो आन
अपराजित विमान को छोड़ आय, विमला देवी के गर्भ आय।१।
फिर चतुर निकाय के देव आय, गर्भ कल्यानक कर अति हर्ष पाय

तिथि अषाढ़ वदी दशमी सो जान, श्रवन नक्षित्र पहुँचो सो आन २
विमलादेवी ने प्रभु जनम दीन; पिता विजयनंद आनंद लीन
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिषेश कर हर्ष लाय ।३।
मथुरापुरी में आनंद होय, घर घर में चरचा जिनराज होय ।
सुवरण समान शरीर जान, पन्द्रह धनुष ऊँचाई जान ।४।
लाल कमल पग में चिन्ह जान, इक्ष्वाक वंश में जन्मे महान ।
दश हजार वर्ष की आयु जान, ढाई हजार वर्ष कुंवर काल जान ५
फिर जन्म पाय जिनराज सोय, महाँमडलेश्वर की पदवी सो होय
पाँच हजार वर्ष तक राज कीन, दया धर्म महित कीनो प्रवीन ६
उल्का पात लख वैराग्य आय, लौकांतिक पहुंचे देव आय ।
तिथि अषाढ़ वदी दशमी सो आय, असनी नक्षत्र पहुंचो सो आन ७
फिर चतुर निकाय के देव आय, कुरू पालकी लीनी सजाय ।
प्रभु का बैठार आकाश जाय, मथुरापुरी आम्र वन के मझार ।८।
मेखपर्न वृक्ष तलें धरी जाय, संध्या समय दीक्षा लहाय ।
राजा हजार संग दीक्षा धार, बेला उपवास धर्यो जिनाय ।९।
फिर भाव भये आहार काज, राजगृह नगरी गमन आज ।
संजय राजा ने लये पड़गाय, गौ दूध खीर दीनो जिनाय ।१०।
तप करते भये नौ वर्ष सोय; मौन सहित प्रभु को भ्रमन होय ।
मथुरापुरी के मनोहर बाग सोय, सेमश्रंग वृक्ष तलें ध्यान होय ११
बेला उपवास धरे जिनाय, सुकल ध्यान दूजा पाय ध्याय ।
तिथि अषाढ़ वदी दशमी सो आय, अश्वनी नक्षत्र पहुंचो सो आय १२
पिछलो पहर दिन को सो आय, प्रभु केवल ज्ञान लयो जिनाय

फिर चतुर निकाय के देव आय; समोशरन रचना करवाय।१३।
दो योजन की रचना सो होय, बारह सभा तामैं सो होय।
केवल ज्ञान सहित उपदेश देय भव्य जीवन को अति लाभ होय १४
नौ वर्ष घाट अढ़ाई हजार वर्ष, प्रभु गमन कियो देशन में हर्ष।
फिर भ्रमन करत मधुवन में आय, सब जीवन के आनंद पाय १५
बाकी सो रही आयु एक मास; मित्रधर कूट पै पहुंचे सो जास।
दिव्य ध्वनि को बंद कीन, समोशरन रचना विलीन।१६।
तिथि बैसाख सुदी चौदश सो आय, श्रवन नक्षत्र पहुंचो सो आन
सूर्योदय में मुक्ति होय; खड़्गासन से जानो जो होय।१७।
साधु हजार संग मोक्ष होय, केवल ज्ञान समय से अन्त तक होय
फिर चतुर निकाय के देव आय' निर्वान कल्याणक कियो जाय १८
इनके तीर्थ में धर्म सोय, चलतो सो रहो नहिं फर्क होय।
कभी मुनि कभी केवली होय; कभी अर्जका कभी छुल्लका होय १९

घत्ता दोहा।

नमिनाथ विननी सुनो रिषभचंद करे पुकार।
भव भव के अघ नाश के दो आतम सुक्ख अपार॥

ॐ ह्रीं नमिनाथ जिनेन्द्र देव की जयमाला सहित पांचों कल्यान सहिताय अर्घं।२०।

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधी होय॥

इत्याशीर्वाद।

❀ श्री नेमिनाथ जिनपूजा ❀

दोहा—पशु की किलकार सुन का विवाह का त्याग।
बाल ब्रह्मचारी भये दीनबंधु बड़ भाग ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

चामरा छंद।

नीर ल्याय सोयरी महान मिष्ट सारसों।
आन शुद्ध गंध मेल वेस तीन धार सों ॥
नेमिनाथ सुनी पुकार पशू जीवन की आपने।
कीनों विवाह त्याग प्रभू मोक्ष सुक्ख कारने ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जलं ॥१॥

चन्दन औ कपूर ल्याय सुगंध को बनायकें।
केशर इलायची मिलाय हर्ष से चढ़ायकें ॥
नेमिनाथ० सुगंधं ॥२॥

तंदुल भले सोपान वर्ण खण्ड वर्जितं।
हेम थार में भराय चन्द्र क्रान्ति लज्जतं ॥
नेमिनाथ० अक्षतं ॥३॥

पंच वर्ण के प्रसून सुगंधता बड़ी घनी।
चरण के समीप धार वेद कर्म को हनी ॥
नेमिनाथ० पुष्पं ॥४॥

दुग्ध मोदकादि सद्य खोवा फैनी ल्याययै ।
लड्डू बरफी सिंगारपाग प्रभु को भेंट चढ़ाइये ॥
नेमिनाथ० नैवेद्य ॥५॥

धूम का न लेश शुद्ध बातिका कपूर की ।
रतन पात्र भगाय अंधकार दूर की ॥
नेमिनाथ० दीपं ॥६॥

धूप गंध सार और कपूर को मिलायकें ॥
धूप दहन मध्य खेय धूम को बढ़ायकें ।
नेमिनाथ० धूपं ॥८॥

लौंग लायची बादाम निम्बू अनार आम लै ।
पिस्ता दाख छुहारा लै प्रभु को चढ़ाय दै ॥
नेमिनाथ० फल ॥८॥

नीर गंध अक्षतं प्रसून सूप ओ दिया ।
धूप लै फलादि सोर अर्घ शुद्ध यह किया ॥
नेमिनाथ० अर्घं ॥९॥

श्री नेमिनाथ भगवान असरन के तुम सरन हो ।
इस संसार असार में सरन आपके चरन हो । पूर्णार्घं ।

नंदीश्वर चाल ।

श्री नेमिनाथ भगवान समोशरन में बैठे ।
लहै केवल ज्ञान प्रकाश बारह सभा में बैठे ॥

मैं नमन करूं अष्टांग पूजौं वसु विधि सौं ।
मैं आतम अनुभव पाऊं मोक्षपुरी जासौं ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहिताय अर्घं ॥१॥

समोशरन में महाराज गनधर सब बैठे ।
वर दत्य कों दे आदि ग्यारह गनधर बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वर दत्य गनधर को आदि लेय ग्यारह गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में महाराज सामान केवली बैठे ।
गिनती में एक हजार पाँच सौ और बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली पन्द्रह सौ विराजमानाय अर्घं ।३॥

समोशरन में महाराज श्रुत केवली बैठे ।
गिनती में चार सौ जान सुदृष्टि तरंगिनी देखे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली चार सौ विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में महाराज सूत्र अभ्यासी बैठे ।
गिनती में ग्यारह हजार आठ सौ और बैठे ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सूत्र अभ्यासी ग्यारह हजार आठ सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में महाराज अवधि ज्ञानी बैठे ।
गिनती पन्द्रह सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू पन्द्रह सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में महाराज मनः पर्य्यय ज्ञानी बैठे ।
गिनती नौ सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी नौ सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में महाराज वैक्रियक साधू बैठे ।
ग्यारह सौ गिनती जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक साधू ग्यारह सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में महाराज वादित्य रिद्धिधारी साधू बैठे ।
गिनती आठ सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी साधु आठ सौ विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में महाराज एकत्र साधू बैठे ।
गिनती अठारह हजार नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संघ के साधु एकत्र अठारा हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में महाराज मोक्ष साधू बैठे ।
गिनती में आठ हजार नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संघ के अठारह हजार साधु विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में महाराज अर्जका राजुल आदी ।
गिनती है चालीस हजार बंदामि कह देऊं अर्घादी ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में राजुल अर्जका को आदि दे चालीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में महाराज ऐलक छुल्लक बैठे ।
गिनती में हैं लाख इच्छामि हम अर्घ धरैं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक एक लाख विराजमानाय अर्घं ।१३।

समोशरन में महाराज छुल्लका माता बैठीं ।
गिनती में हैं दोय लाख इच्छामि कह अर्घ धरूं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता दो लाख विराजमानाय अर्घं ।१४

श्री नेमिनाथ महाराज संख का चिन्ह पग में ।
गिरनारी से गये मोक्ष पाँच सौ छत्तीस मुनि संग में ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र गिरनार पर्वत की पांचवीं टोक से पांच सौ छत्तीस मुनि मोक्ष पधारे अर्घं ।१५।

आपके तीर्थ में महाराज दश साधु ऐसे भये ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह मोक्षपुरी जा बसे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में दश साधु ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होते भये तिनको अर्घं ।१६।

आपके तीर्थ में महाराज दश साधु ऐसे बैठे ।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद पा बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधु ऐसे भये जो आठ प्रकार का उपसर्ग सह अहमेन्द्र पद प्राप्त किया अर्घं ।१७।

आपके तीर्थ में महाराज अनुवध केवली भये ।
गिनती में चार हुए अननुवध बहुते भये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध केवली चार होते भये और अननुवध जितने भये तिन सब को अर्घं ।१८।

आपके तीर्थ में महाराज प्रद्युन अनुरुद्ध बैठे।
संभू कुमार ऐसे तीन तीन गिरनारी सैं मोक्ष गये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में महाराज दूजे कूट ते अनुरुद्ध तीजे कूट ते संभू चौथे कूट तें प्रद्युन मोक्ष पधारे अर्घं १९

आपके तीर्थं में महाराज नागकुमार कामदेव भये।
व्याल और महाव्याल अच्छेद अभेद भये ॥
और सहस भट जान कैलाश गिरि से मोक्ष गये।
मैं नमन करू अष्टांग आठ द्रव्य से पूजत भये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में नागकुमार कामदेव व्याल महाव्याल अच्छेद अभेद सहस भट कैलाशगिरि से मोक्ष पधारे तिन सब को अर्घं ।२०।

आपके तीर्थं में महाराज गजकुमार मोक्ष गये।
गज पंथा क्षेत्र से जान मैं नमन कर अर्घ दये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में गजकुमार गज पंथा से मोक्ष पधारे अर्घं २१।

आपके तीर्थं में महाराज नववें बलभद्र भये।
मांगी तुंगी पै दिगम्बर मुनि हो मोक्षहि गये ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में नववें बलभद्र मुनि दीक्षा धार मांगो तुंगी से मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥२२॥

आपके तीर्थं में महाराज जितने साधू मोक्ष गये।
मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधू मोक्ष पधारे होवें उनको अर्घं ॥२३॥

आपके तीर्थं में महाराज दिगम्बर निर्ग्रंथ बैठे।
मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निर्ग्रंथ साधू भये होवें उन सबको अर्घं ॥२४॥

आपके तीर्थ में अर्जका छुल्लक ऐलक छुल्लका ।
उनको वंदामी इच्छामि कराय वसु विध अर्घ धरा ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अर्जका छुल्लक ऐलक छुल्लका जितने विराजमान होवें तिन सब को अर्घं ॥२५॥

श्री नेमिनाथ महाराज निरवान भूमि गिरिनार कही ।
बहत्तर कोड़ सात सौ मुनि मोक्ष नमन पूजन हम करी ॥

ॐ ह्रीं आपकी निरवान भूमि गिरिनार गिरि से बहत्तर कोड़ सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥२६॥

श्री नेमिनाथ भगवान अरजी सुन लीजे ।
समोशरन के महाराज अरजी चित दीजे ॥
सकल तीर्थ के महाराज विनती सुन लीजे ।
रिषभचन्द घबड़ाय हस्तावलंबन दीजे ॥
जब लग मोक्ष न होय तब लग भव भव में ।
चारों आराधन आराध पुद्गल छोड़न में ॥

इत्याशीर्वाद।

जयमाला ।

दोहा—इकईशवें भगवान को मोक्ष गमे पचास लाख वर्ष जान।
मध्य लोक में आयकं जन्मे नेमिनाथ भगवान ॥

पद्धड़ी छंद ।

तिथि कार्तिक सुदी छटमी सु जान; उत्तराषाढ़ नक्षत्र पहुंचो सो आन
वैजयन्त विमान को छोड़ आय, माता शिव देवी के गर्भ आय।१

फिर चतुर निकाय के देव आय, गर्भ कल्याणक कर जिनाय।
तिथि सावन सुदी छटमी सो आय, अश्वनी नक्षत्र पहुँचो सो आन २
शिवदेवी माता जनम दीन, पिता समद विजय आनंद लीन।
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिशेष कर हर्ष पाय।३।
सोरीपुर नगरी जनम भूमि; प्रभु बाल क्रीड़ा कर अनूप।
मोर कंठवत हरित शरीर, यदुवंश में प्रभु जन्म लीन ॥४॥
पग चिन्ह संख कहो प्रवीन, दश धनुष शरीर ऊँचाई लीन।
एक हजार वर्ष की आऊ जान, तीन सौ वर्ष कुमार काल जान।५।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी सो जान, व्याह त्याग दीक्षा सुजान।
नराज कियाँ प्रभु ने जो सोय, जीवन की रक्षा करी सोय ॥६॥
पशू घिरे देख वैराग आय, लौकाँतिक देव पहुंचे सो आय।
तिथि सावन वदी चौथ आई सोय, श्रवन नक्षत्र पहुंचो सो आय ७
फिर चतुर निकाय के देव आय, देव कुरु पालकी लई सजाय।
प्रभु को बैठार काँधे धराय, आकाश मार्ग लै चले जाय ॥८॥
द्वारकापुरी आम्र बाग माह, भव वृक्ष तरै दीनी उतार।
संध्या समय प्रभु दीक्षा सु धार, राजा हजार संग कच लुंच भाय ९
बेला उपवास धरे जिनाय; इच्छा अहार करी जिनाय।
द्वारका नगरी में चले जिनाय; राजा वरदत्य ने लिये पड़गाय १०
गौ दुग्ध खीर आहार दीन, रतनन वर्षा देवन ने कीन।
छप्पन दिन प्रभु ने तपश्चरन कीन, गिरनार मनोहर बाग लीन ११
धूल शाल वृक्ष तल ध्यान कीन, सुकल ध्यान में रहे लीन।
तिथि कुंवार सुदी परमा सो आय, चित्रा नक्षत्र पहुंचो सो आय १२

बेला उपवास धरे जिनाय, प्रभात समय दिन को सो आय।
प्रभु केवल ज्ञान लहो प्रकाश, देवन कीनो कल्यान मास।१३।
समोशरन रचना कराय, डेढ़ योजन का विस्तार भाय।
छप्पन दिन कम तप के जा सोय, केवल ज्ञान सहित सात सौ
वर्ष होय।१४।
फिर भ्रमन करत गिरिनार जाय, पंचम टोक पर पहुंचे सो जाय
बाकी रही आऊ ए रु माय; उपदेश नही समोशरन विनाश।१५।
तिथि अषाढ़ सुदी अ ठैं सु आय, अश्वनी नक्षत्र पहुंचो सो आय
रात्रि के समय निर्वान होय, पद मासन से जानो जो सोय।१६।
पांच सौ छत्तीस मुनी संग मोक्ष, केवल ज्ञान से अबै तक होय।
फिर चतुर निकाय के देव आय, निरवान कल्यानक कर जिनाय १७
इनके तीर्थ में धर्म सोय, चलतो रहो नहिं फर्क होय।

घत्ता सोरठा।

श्री नेमिनाथ महाराज बाल ब्रह्मचारी भये।
कर भव्यन उपकार रिषभचन्द शामिल करो॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं॥१८॥

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधी होंय॥

इत्याशीर्वाद।

❁ श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा ❁

पार्श्वनाथ महाराज निरममत्व वली इस लोक में।
मन बच शीश नवाय चाहूँ सिद्ध स्थान में ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

जोगी रायसा छंद।

अच्छे समुद्रन को जल लेकर कंचन झारी भराये।
जन्म जरा के मेटन कारन प्रभु के चरन चढ़ाये॥
पार्श्वनाथ जिनराज प्रभुजी चरनन शीश नवाऊं।
ऐसो पद देदो प्रभु मुझको फेर न भव भट काऊं॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं ॥१॥

मलयागिरि चन्दन घिस धर लाकर कटोरी भरिये।
संसार ताप को नाश करन को प्रभु के चरनन धरिये॥
पार्श्वनाथ० सुगंधं ॥२॥

पतरे पतरे चावर मंगालो अच्छे चुन कें धर लो।
अक्षय पद को प्राप्त करन को प्रभु के चरन चढ़ादो॥
पारसनाथ० अक्षतं ॥३॥

अच्छे अच्छे फूल मंगालो चुन चुन रकेबी भर लो।
काम वान के नाश करन को प्रभु के चरन चढ़ादो॥
पारसनाथ० पुष्पं ॥४॥

अच्छे अच्छे पकवान बना लो थारी नेवज भर लो।
क्षुधा रोग के नाश करन को प्रभु के चरन चढ़ा दो॥
पारसनाथ० नैवेद्यं ॥५॥
बाती उजयार लो कपूर जला लो रतनन थारी भर लो।
अज्ञान तिमिर के नाश करन को प्रभु के चरन चढ़ादो॥
पारसनाथ० दीपं ॥६॥
धूप दशांगी तैयार करके रतनन डबीआ भर लो।
राग द्वेष के नाश करन को धूप खेना में खेदो॥
पारसनाथ० दीपं ॥७॥
श्रीफल और बादाम सुपारी केला निम्बू ल्याओ।
अन्तराय के नाश करन को प्रभु के चरन चढ़ाओ॥
पारसनाथ० फलं ।८॥
जल फल आठौं द्रव्य सम्हालो भर भर कटौरी धारो।
आठ करम के नाश करन को प्रभुजी के चरन चढ़ाओ॥
पारसनाथ० अर्घं ॥९॥

सोरठा—पारसनाथ भगवान उपसर्ग कियौ कमठ के जीवने।
आपका कुछ न कर सका चार घातिया नाश किये॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घं ॥१०॥

जोगी रायसा छंद।

पारसनाथ भगवान विराजे समौशरन के माहीं।
केवल ज्ञान पाय कर स्वामी थिर भये आतम माहीं॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र केवल ज्ञान सहिताय अर्घं ॥१॥

समोशरन में आपके प्रभुजी स्वयंभूव गनधर आदि ।
दश गनधर हैं सबरे प्रभुजी कहुं नमन पूजनादि ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में स्वयंभूव गनधर आदि दश गनधर विराजमानाय अर्घं ॥२॥

समोशरन में आपके प्रभुजी सामान केवली बैठे ।
गिनती में हैं एक हजार प्रभु नमन पूजन कर हम बठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सामान केवली एक हजार विराजमानाय अर्घं ३।

समोशरन में आपके प्रभुजी श्रुत केवली सब बैठे ।
तीन सौ पचास हैं गिनती तिनको हम पूजन कर बैठे ।

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में श्रुत केवली साड़े तीन सौ विराजमानाय अर्घं ॥४॥

समोशरन में सूत्र अभ्यासी दश हजार नौ सौ बैठे ।
नमन करूं अष्टाँग सबन को आठ द्रव्य सों पूजै ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय दश हजार विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू एक हजार चार सौ बैठे।
नमन करूं पंचाँग सबन को आठ द्रव्य से पूजों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एक हजार चार सौ अवधि ज्ञानी साधू विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी सात सौ पचास बैठे ।
नमन करूं पंचाग गुरु को आठ द्रव्य सों पूजों ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी साधू सात सौ पचास विराजमानाय अर्घं ॥७॥

समोशरन में वैक्रियक साधू एक हजार सब बैठे ।
नमन करूं पंचांग गुरु को आठ द्रव्य से पूजौ ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी साधू एक हजार विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में वादित्य साधू छह सौ गिनती जानौ ।
नमन करूं पंचांग गुरु को आठ द्रव्य लै पूजौं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वादित्य रिद्धिधारी साधू छह सौ विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में सातों संग के चौदा हजार सब बैठे ।
नमन करूं अष्टाँग प्रभु को आठ द्रव्य लै पूजौं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में एकत्र सातों संघ के चौदा हजार साधू विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में मोक्ष साधू छह हजार दो सौ बैठे ।
नमन करूं अष्टाँग प्रभु को आठ द्रव्य लै पूजौ ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मोक्ष साधू छह हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ॥११॥

आपके समोशरन में अर्जका माता सुलोचना को दै आदि ।
अड़तालीस हजार है गिनती जिनकी जजूं लै अर्घादि ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मातेश्वरी अर्जका सुलोचनादि अड़तालीस हजार विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में ऐलक छुल्लक एक लाख सब बैठे ।
इच्छाकार करूं मैं सब को अर्घ चढ़ाय हर्ष से बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक एक लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में छुल्लका माना दो लाख सवर्गी जानौ।
इच्छाकार करौं मैं सबकौ वसु विधि अघ सो जानौ ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में छुल्लका माता दो लाख विराजमानाय अर्घं १४।

श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र प्रभुजी पग में चिन्ह है सर्प का।
सुवर्ण भद्र तैं मोक्ष पधारे पांच सौ छत्तिस मुनि संग का॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं श्री सुवर्ण भद्र कूट तें श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र सहित मोक्ष पधारे अर्घं।१५

आपके तीर्थ में दश साधू ऐसे भये आठ प्रकार उपसर्ग सह मोक्ष पधारे अन्तर्मुहूर्त में अन्तः कृत केवली हुए सबने जय जय शब्द उचारे

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू ऐसे भये जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ॥१६॥

तीर्थं आपके में दश साधु ऐसे भये।
जो आठ प्रकार उपसर्ग सह अनुत्तर गये ॥

मैं नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधू आठ प्रकार उपसर्ग सह सर्वार्थ सिद्धि गये अर्घं ॥१७॥

तीर्थ आपके अनुवध केवली तीन की गिनती जानों।
अननुवध केवली जितने होवें नमन पूजन हम करें ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में अनुवध केवली तीन है अननुवध केवली जितने होवें उन सबको अर्घं ॥१८॥

तीर्थं आपके में मोक्ष साधू भये हों गिनती में जितने होवें।
नमन करूं पंचांग गुरु को आठ द्रव्य सों पूजों ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधू मोक्ष पधारे होवें तिनको अर्घं १९

तीर्थ आपके दिगम्बर साधू जितने होवें सब ही।

नमन० ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने दिगम्बर निरग्रंथ साधू होवें तिनका अर्घं ॥२०॥

तीथ आपके अर्जका माता ऐलक छुल्लक जानौ।
छुल्लका माता जितनी होवें वंदामि कर अर्घ दीनौ॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितनी अर्जका छुल्लक ऐलक छुल्लका विराजमान हों तिन सबको अर्घं ॥२१॥

श्री पार्श्वनाथ भगवान जिनेश्वर निर्वान भूमि सम्मेद शिखर के
सुवर्न भद्र कूट नाम है मोक्ष गये बहु साधू संग के॥
वियालीस कोड़ चौरासी लाख पैतालीस हजार जानौ।
सात सौ वियालीस और कहे हैं नमन पूजन कर मानौ॥

ॐ ह्रीं आपकी निर्वान भूमि सम्मेद शिखर के सुवर्ण भद्र कूट तें श्री पार्श्वर्वनाथ जिनेन्द्रादि वियालीस कोड़ चौरासी लाख पैतालीस हजार सात सौ वियालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥२२॥

पारसनाथ महाराज अरजो मोरी सुनिये।
समोशरन के साधू गुरूजी अरजी चित में दीजे॥
सकल तीर्थ के साधू गुरूजी विनती मोरी लीजे।
रिषभचन्द धंधड़ाय प्रभुजी हस्तालवन दीजे॥
मोक्ष न जब लग होय गुरूजी तब लग भव भव में जाचौं।
चारों आराधन आराध मरन समाधी पाऊं॥

इत्याशीर्वाद।

जयमाला ।

दोहा-बाईशवें भगवान को मोक्ष गये पीछे चौरासी हजार वर्ष जान
मध्य लोक में आयकें जन्मे पारसनाथ भगवान ।

पद्धड़ी छंद ।

तिथि बैसाख वदी दोइज जान; विसाखा नक्षत्र पहुंचो सो आन
ग्रैवेयक स्वर्ग को छोड़ आय, वामादेवी के गर्भ पाय ॥१॥
फिर चतुर निकाय के देव आय, गर्भ कल्याणक कर जिनाय।
बनारस नगरी के भेलूपुर सो जान, नृप अश्वसेन आनंद मान २
तिथि पौष वदी ग्यारस सो आय, चित्रा विसाखा नक्षत्र सु आय
वामा माता ने जन्म दीन, अश्वसेन पिता आनंद लीन ॥३॥
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिषेक कर निज ठौर जाय
वपु वर्ण स्याम घन समान, पग में सर्प चिन्हन कहो प्रमान ४
इक्ष्वाकु वंश में जनम लीन, काय ऊँचाई नौ हाथ लीन।
सौ वर्ष की आयु कहीजिनेश, कुमार काल तीस वर्ष ईश ॥५॥
जे बाल ब्रह्मचारी महान, न राज कियो न ब्याह मान।
सर्प जलै देख वैराग्य आय; लौकांतिक देव पहुंचे सो आय ६
तिथि पौष सुदी ग्यारस सो आय, विसाषा नक्षत्र पहुंचो सो आय
फिर चतुरन काय के देव आय, विमला पालकी लई सजाय ।७।
प्रभु को बैठार आकाश जाय; बनारस के आम्र बाग आय।
अरु वृक्ष तल दई उतार, बेला उपवास धरो जिनाय ।८॥
संध्या के समय दीक्षा सु धार, छह सौ नृप संग जप कराय
फिर भाव भये आहार काज, कोम्याकृतपुर पहुंचे जिनाय ।९।

धन्य राजा ने पड़गाय लीन, गाय दूध खीर जिनाय दीन।
लै अहार प्रभु वन को सु जाय. नृप के घर रतनन राशि भाय १०

तप करते प्रभु को चतु मास होय, मौन सहित प्रभु विहार होय
काशी के निकट मनोहर बाग जाय, शाल वृक्ष तल प्रभु ध्यान लाय ११

तिथि चैत्र वदी अमावस सो आय, विसाषा नक्षत्र पहुंचो सो आय
वेला उपवास धरे जिनाय, प्रभात समय दिन का सु आय।१२।

केवल ज्ञान प्रभु कों प्रगट होय; तुरतई चतुर निकाय के देव आय
समोशरन रचना कराय इक योजन का विस्तार भाय।१३।

बारह जु सभा लगी जु सोय, उपदेश लागो भव्यन कों सु होय
चतु मास घाट सत्तर जु वर्ष, केवल ज्ञान मय उपदेश हर्ष १४

फिर भ्रमन करत मधुवन में आय; सब हो जन के मन हर्ष थाय
जब शेष आयु रही एक मास, सुवर्न भद्र कूट पर भये तास।१५।

दिव्य ध्वनि भई बन्द छीन, समोशरन रचना विलीन।
तिथि सावन सुदी सातें सुभाय, चित्रा विसाषा नक्षत्र आय १६

रात्रि समय प्रभु मुक्ति होय, खड़गासन से जानौं जु सोय।
पाँच सौ छत्तिस संग मोक्ष होय; केवल ज्ञान के समय से अन्त
तक होय ॥१७॥

फिर चतुर निकाय के देव आय, निर्वान कल्याणक करो जिनाय
इनके तीर्थ में धर्म सोय, चलतो सु रहो नहिं फर्क होय १८

घत्ता सोरठा ।

पारसनाथ भगवान अजर अमर पद दीजिये ।
भव भव के अघ नाश निश्चल पद दीजिये ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं ।

दोहा–जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय ।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधि होय ॥

इत्याशीर्वाद ।

❀ श्री वीरनाथ जिनपूजा ❀

वीरनाथ भगवान वीतरागता दो मुझे ।
पूजा हेतु बुलाव यह आसन प्रभु बैठिये ॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट ।

नाराच छंद ।

महान गंध नीर धार ल्याइये सो क्षीर सों ।
पवित्र कुंभ हेम के भराइये गहीर सों ॥
वीरनाथ की जो सेव तरह तरह सों कीजिये ।
दुराइये सु चार गाय तबला मजीरा बजाइये ॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ जिनेन्द्राय जलं ॥१॥

चन्दनादि केशरादि कपूर को मिलायकैं ।
चर्ण के समीप धार सर्व रोग भगायकैं ॥
वीरनाथ० सुगंधं ॥२॥

हीरा मोती ल्याय कें चावर चोखे धारके ।
पखार के चढ़ाइये हर्ष भाव लाइये ॥
वीरनाथ० अक्षतं ॥३॥

श्री गुलाब केवडा चमेली चम्पा लीजिये ।
काम बान के नाश करन को प्रभु के चरन चढ़ाइये ॥
वीरनाथ० पुष्पं ॥४॥

पुड़ी पपरिआ फैनी सार शुद्ध सद्य ल्यायकें ।
क्षुधा रोग के नाश करन को प्रभुजी को चढ़ाइये ॥
वीरनाथ० नैवेद्यं ॥५॥

रत्न दीप तेजवान हेम पात्र धारिये ।
भवांधिकार दुःख भार मूलतें उखारिये ॥
वीरनाथ० दीपं ॥६॥

देवदारु कृष्ण सार चन्दनादि ल्यावही ।
दशाँगी धूप धूम गंध अग्नि माहि जलावही ॥
वीरनाथ० धूपं ॥७॥

श्री फलादि खारकादि हेम थाल में भरौं ।
शिष्ट मिष्ट गंध सार प्रभु के आँगे धरौं ॥
वीरनाथ० फलं ॥८॥

नीर गंध अक्षतान पुष्प नैवेद्य लीजिये ।
दीप धूप श्री फलादि वीरनाथ पूजिये ॥
वीरनाथ• अर्घं ।९॥

सौरठा—श्री वीरनाथ महाराज शिव दायक शिवपुर पती ।
मोह महा मद चूर रत्नात्रय निधि दीजिये ॥
ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं ।

चाल नन्दीश्वर ।

श्री वीरनाथ महाराज पहिला नाम कहा ।
दूजा श्री सन्मति जान तीजा अति वीर कहा ॥
चौथा श्री महावीर पंचम वर्द्धमान कहा ।
लह केवल ज्ञान प्रकाश भव्य प्रति बोधी ॥
ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ जिनेन्द्राय समोशरन स्थिताय अर्घं ॥१॥

समोशरन में महाराज ग्यारह गनधर बैठे ।
इन्द्रभूत वायुभूत अगनभूत सुधर्म बैठे ॥
मौजो मौदर्य राम पुत्र मित्रेय अकंपन बैठे ।
अन्ध बेल प्रभास सो जान वीर शासन में बैठे ॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ग्यारह गनधर विराजमानाय अर्घं २

समोशरन में महाराज सामान केवली बैठे ।
गिनती में सात सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥
ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सात सौ सामान केवली विराजमानाय अर्घं ॥३॥

समोशरन में महाराज श्रुत केवली बैठे ।
गिनती में तीन सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में तीन सौ श्रुत केवली विराजमानाय अर्घं ४

समोशरन में महाराज शिक्षक सूत्र अभ्यासी बैठे ।
एक हजार नौ सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में शिक्षक सूत्र अभ्यासी उपाध्याय एक हजार नौ सौ विराजमानाय अर्घं ॥५॥

समोशरन में महाराज अवधि ज्ञानी बैठे ।
एक हजार तीन सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में अवधि ज्ञानी साधू तेरह सौ विराजमानाय अर्घं ॥६॥

समोशरन में महाराज मनः पर्य्यय ज्ञानी बैठे ।
गिनती में पाँच सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में मनः पर्य्यय ज्ञानी पांच सौ विराजमानाय अर्घं ।.७॥

समोशरन में महाराज वैक्रियक साधू बैठे ।
गिनती में नौ सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में वैक्रियक रिद्धिधारी नौ सौ साधू विराजमानाय अर्घं ॥८॥

समोशरन में महाराज वादित्य रिद्धिधारी बैठे ।
गिनती में चार सौ जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में चार सौ वादित्य रिद्धिधारी साधू विराजमानाय अर्घं ॥९॥

समोशरन में महाराज एकत्र साधू बैठे ।
गिनती चौदह हजार नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संघ के एकत्र साधू चौदह हजार विराजमानाय अर्घं ॥१०॥

समोशरन में महाराज मोक्ष साधू बैठे ।
सात हजार दो सो जान नमन पूजन कर हम बैठे ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में सातों संग में से मोक्ष जाने वाले साधू सात हजार दो सौ विराजमानाय अर्घं ॥११॥

समोशरन में महाराज अर्जका चन्दना बैठीं ।
गिनती में छत्तिस हजार बंदामि कह अर्घ धरूं ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में चन्दना अर्जका को आदि देय छत्तिस हजार अर्जका विराजमानाय अर्घं ॥१२॥

समोशरन में महाराज ऐलक छुल्लक बैठे ।
गिनती में एक लाख इच्छामि कह अर्घ देते ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक एक लाख विराजमानाय अर्घं ॥१३॥

समोशरन में महाराज छुल्लका माता बैठीं ।
गिनती में दो लाख इच्छामि अर्घ हम देती ॥

ॐ ह्रीं आपके समोशरन में ऐलक छुल्लक दो लाख विराजमानाय अर्घं ॥१४॥

श्री वीरनाथ भगवान पावापुर के तालाब से ।
छत्तिस साधू साथ मोक्ष गये अघ नासे ॥
अरु उत्तरपुरान में बताये हजार संग मोक्ष पधारे ।
नमन करूं अष्टांग वसु विधि पूजा कारे ॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ भगवान पावापुर के तालाब से छत्तिस साधु के साथ मोक्ष पधारे और उतर पुरान की अपेक्षा हजार मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१५॥

भगवता आराधन बताय आपके तीर्थ में प्रभुजी।
दश साधु ऐसे भये होय आठ प्रकार उपसर्ग सहेजी॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दस साधु नमी १ मातंगज २ सोमिल ३ राम पुत्र ४ सुदर्शन ५ इसिनिलक ६ बलक ७ विसकंवल ८ पलाबाव वष्ट ९ मुंडपुत्र १० ये आठ प्रकार उपसर्ग सह अंतः कृत केवली होय मोक्ष पधारे अर्घं ॥१६॥

आपके तीर्थ में महाराज दश साधु ऐसे भये।
आठ प्रकार उपसर्ग सह अहमिन्द्र पद लये॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में दश साधु आठ प्रकार उपसर्ग सह रिसीघदास १ धन्त साधु २ सुनक्षत्र ३ कातिकेय ४ नंदभद्र ५ शान्त्व भद्र ६ नन्दन ७ अभय ८ वारिषेण ९ चिलाती पुत्र १० ये मुनि आठ प्रकार उपसर्ग सह अनुत्तर विमान में जा पहुंचे ऐसे साधुओं को अर्घं १७

तीर्थ आपके में पीतंकर साधु मोक्ष पधारे भाई।
नमन करूं अष्टांग प्रभु को आठ द्रव्य सों पूजों॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ मे पीतंकर साधु मोक्ष पधारे तिनको अर्घं १८

तीर्थ आपके में इन्द्रभूति गनधर जीवंधर कुमार सों जानो।
विपलाचल ते मोक्ष पधारे नमन पूजन कर हर्ष मानो॥

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में विपलाचल परवत मे इन्द्रभूति गनधर और जीवनधर स्वामी मोक्ष पधारे तिनको अर्घं ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्री खण्ड गिरि सिद्ध क्षेत्र से एक हजार मुनि मोक्ष गये बाद में श्री जितार मुनि भी खण्ड गिरि से मोक्ष पधारे तिनको अर्घं २०

महाराज अरजी मोरी लीजिये ।
समोशरन के साधु अरजी चित में दीजे ॥
सकल तीर्थ के महाराज विनती मोरी लीजिये ।
रिषभचन्द घबड़ाय हस्तालंबन दीजिये ॥
जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय ।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मरन समाधी होय ॥

इत्याशीर्वाद ।

जयमाला ।

दोहा—श्री पार्श्व जिनेश के मोक्ष गये वर्ष ढाई सौ जान ।
बाद प्रभु अवतरे श्री वीरनाथ भगवान ॥

पद्धड़ी छंद ।

तिथि अषाढ़ सुदी छटमी सो आय, उत्तरा नक्षत्र पहुंचो सो आय ।
बारहवें स्वर्ग को छोड़ आय, त्रिसला देवी के गर्भ पाय ॥१॥
फिर चतुर निकाय के देव आय, गर्भ कल्यानक कर जिनाय
फिर चैत्र सुदी तेरस सो जान, उत्रा फाल्गुनी नक्षत्र आन ।२।
त्रिसला माता ने जनम दीन, पिता सिद्धारथ ने आनंद लीन ।
कुंडलपुर में आनंद होय, देव देवी खड़े हर समय सोय ॥३॥
फिर चतुर निकाय के देव आय, जन्माभिशेष कर घरै जाय ।
ताऐ सुवर्ण सम वपु वर्ण जान, इक्ष्वाक वंश में जनम मान ।४।

पग चिन्ह शेर जानो सोय, सात हाथ ऊंचा शरीर होय।
बहत्तर वर्ष का आयु जान, तीस वर्ष कुमार काल जान ॥५॥
जे बाल ब्रह्मचारी महान, न राज्य कियो न विवाह जान।
लखकर पात देख बैराग आय, लौकान्तिक पहुंचे देव आय।६।
तिथि अगन वदी दशमी सो आय, उत्तरा नक्षत्र पहुंची सो आय
फिर चतुर निकाय के देव आय, चन्द्रका पालकी लई सजाय।७।
प्रभु को बैठार कांधे धराय, आकाश मार्ग लै चले जाय।
कुंडलपुर के बाहर सो जाय, ज्ञान वन के शाल वृक्ष तर धरी जाय ८
संध्या समय दीक्षा सो धार; बेला उपवास धरो जिनाय।
राजा तीन सौ संग में दीक्षा धार, नाथ वंश कुल दीपक उजाल ९
फिर भाव भये आहार काज, कुंडलपुर में पहुंचे जिनाय।
बकुल राजा ने पड़गाय लाय, सो दुग्ध खीर दई जिनाय।१०।
बारह बरस संजम धरेय, मौन सहित प्रभुजी भ्रमन होय।
ऋजु कूला नदी के निकट आय, धवल वृक्ष तलै प्रभु ध्यान लाय ११
बेला उपवास धरो जिनाय, प्रभु शुकल ध्यान में मन लगाय।
तिथि बैसाख सुदी दशमी सो जान हस्त नक्षत्र पहुंचा सी आन १२
पिछली पहर दिन का सो आय, प्रभु केवल ज्ञान भयो सो जान।
फिर चतुर निकाय के देव आय, समोशरन रचना कराय।१३।
आधा योजन विस्तार जान, बारह कोठा तामें रहान।
गनधर निमित्त जब जुड़ी आय, दिव्य ध्वनि प्रभु की खिराय १४
तीस वर्ष प्रभु उपदेश देय, केवल ज्ञान सहित प्रभु भ्रमन होय।
फिर भ्रमन करत पावापुर में आय, सब ही जन को आनंद भाय १५

दो दिन की आयु रही शेष; सरोवर के टीले पर गये जिनेश।
दिव्य ध्वनि की बंद कोन, समोशरन रचना विलीन ।१६।
तिथि कार्तिक वदी अमावस सो आय स्वाती नक्षत्र पहुंचो सो आन
सूर्योदय समय मुक्ति सो होय, संग में छत्तिस मुनि मोक्ष होय १७
खड़गासन से प्रभु मुक्त जाय, फिर चतुर निकाय के देव आय।
निर्वान कल्यानक करो जिनाय, अपने अपने स्थान जाय।१८।
इनके तीर्थ में धर्म सोय, पंचम काल के अंत तक रहे सोय।
तीन वर्ष साढ़े आठ माह, पंचम काल के बाकी रहाय।१९।
वहाँ तक धर्म चलै जो सोय, साढ़े आठ माह तीन वर्ष रहे सोय।
कभी कोई क्षेत्र में रहै सोय, कभी कोई क्षेत्र में विछोह होय २०

धत्ता सोरठा।

महावीर भगवान तुम स्वामी तिहुं लोक के।
मोहि करो भव पार चरन शरन में आव हौं ।२१।

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ पंचकल्यान जयमाला पूर्णार्घं।

जब लग इस संसार में भ्रमन हमारा होय।
तब लग मुझ सम्यक्त सहित मगन समाधी होय॥

इत्याशीर्वाद।

सुधर्मा स्वामी के निर्वाण के दिन जम्बू स्वामी को केवल ज्ञान जानों
अरतीस वर्ष को विहार कीओ प्रभु नमन पूजन कर मानों।
ॐ ह्रीं तीसरे अनुवध केवली जम्बू स्वामी को अर्घं ॥१॥
इनसे पीछे श्रीधर केवली अननुवध केवली जानों।
कुंडलपुर से मोक्ष पधारे महावन्ध में बतानों ॥
ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में श्रीधर केवली कुंडलपुर से मोक्ष पधारे अर्घं २
इनके पीछे श्रुत केवली पांचों विस्त्र श्रुत केवली जानों।
चौदह वर्ष विहार किया उन नमन पूजन करि मानों ॥
इनके बाद में नन्दि मित्र ने चौदह वर्ष विहारा।
इनके बाद में अपराजित श्रुत ने सोलह वर्ष विहारा ॥
इनके बाद में गोवर्द्धन श्रुत ने उन्नीस वर्ष विहारा।
इनके बाद में भद्र बाहु श्रुत ने उन्नीस वर्ष विहारा ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर केवली के बाद पांच श्रुत केवली हुए तिनको अर्घं ।३।
इनके बाद में विसाषा चार्ज भये, ग्यारह अंग दश पूर्व जानों
दश वर्ष का काल इनका जानों नमन पूजन हम ठानों ॥
इनके बाद में पोस्टल जानों उन्नीस वर्ष विहारा।
इनके बाद में छत्रिय जानों सतरह वर्ष विहारा ॥
इनके बाद में जयसेन जानो इक्कीस वर्ष विहारा।
इनके बाद में नागसेन जानों अठारा वर्ष विहारा ॥
इनके बाद सिद्धारथ जानों सतरह वर्ष विहारा।
इनके बाद धृतसेन जानों तेरा वर्ष विहारा ॥
इनके बाद में विजयशील भये बीस वर्ष विहारा।

इनके बाद में बुधलिंग भये चौदह वर्ष विहारा ॥
इनके बाद में अंगदेव भये चौदह वर्ष विहारा ।
इनके बाद धर्म सेन भये सोरा वर्ष विहारा ॥
नमन करूं पंचांग सबै को अष्ट द्रव्य से पूजौं ।

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में ग्यारह अंग के पाठी पांच आचार्य हुए तिनको अर्घं ।।४।।

इनके बाद में पाँच आचार्य भये एक अंग के पाठी ।
अरहद बली आचाय भये हैं अट्ठ ईस वर्ष तिन का काल ॥
इनके बाद माघ नंदी भये इक्कीस वर्ष तिन का काल ।
इनके बाद में धर सन गुरु भये उन्नीस वर्ष जिनका काल ॥
इनके बाद में पुष्प दन्त साधू भये तीस वर्ष जिनका काल ।
इनके साथ में भूजबली भये बीस वर्ष जिनका कास ॥
नमन करूं पंचांग गुरू को आठ द्रव्य सों पूजों ।

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में पांच साधू एक अंग के पाठी भये तिन सबको अर्घं ।।५।।

इनके बाद में उनईश निरग्रंथ भये ।
प्रथम जिनचन्द सो जानों शिव को ही रुस बायन जानौ
पूज्य पाद कुन्द कुन्द जानौ वीरसेन जिनसेन भये हैं ॥
नेमचन्द रायसेन जानौ तारकिक अकलंक भये हैं ।
विद्यानद सो जानों मानकचंद प्रभाचंद भये हैं ॥
रामचन्द वासवचन्द जानों गुन भद्र और वीर नंद जानौ ।
सिद्धान्ती नेमीचन्द जानौ नमन करूं पंचांग पूजन कर मैं मानौ

ॐ ह्रीं आपके तीर्थ में जितने साधू मोक्ष पधारे होवें तिनको अर्घं ६

तीर्थ आपके दिगम्बर निर्ग्रंथ भये जितने होवें साधू ।
नमन करूं पंचांग गुरु को आठ द्रव्य से पूजूं ॥
ॐ ह्रीं आपके तीर्थमें जितने दिगम्बर निर्ग्रन्थ विराजमान होवें अर्घं ७
तीर्थ आपके अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका बैठे ।
वंदामी इच्छामी कह कर अर्घ सबे को देहैं ॥
ॐ ह्रीं आपके तीर्थमे अर्जका ऐलक छुल्लक छुल्लका जितने होवें अर्घं ८
महावीर भगवान निर्वान भूमि पावापुरी ।
सरोवर के मध्य मे छत्तीस मुनि या हजार मुनि ॥
ॐ ह्रीं आपको निर्वान भूमि पावापुरी मे छत्तीस मुनि सुदृष्टि तरंगनी से या उत्तरा पुराण मे एक हजार मुनि मोक्ष गय तिन सब को अर्घं ॥९॥
चौबीसों भगवान महाराजजी आपके समोशरन के संभजी ।
चौदा सौ त्रेपन गनधर होते हैं तामें चार सौ त्रेपन मोक्ष हैं
नमन करूं पंचांग गुरु को अर्घ आठ द्रव्य सों पूजत मैं सबै
ॐ ह्रीं श्री चौबीस तीर्थंकरों के समोशरन के चौदा से तिरेपन गनधर भये तामें चार सौ त्रेपन मोक्ष गये तिन सबको अर्घं ॥१०॥
चौबीस तीर्थंकर के साधू सबै समोशरन में विराजते सबै ।
उनतालीस लाख अड़तालीस हजार जू हम नमन पूजन करत जू
ॐ ह्रीं आपके समोशरन के संग के चौबीसों भगवान के साधू एकत्र उनतालीस लाख अड़तालीस हजार भय तिनको अर्घं ॥११॥
अढ़ाई दीप के माहि जिनने सब आचार्य उपाध्याय साधू हों ।
ऐसे त्रिपद के धारक साधूजी भूत भविष्य वर्तमान साधू हों ॥
तीनों काल सम्बन्धी साधूजी तुष्ट पुष्ट शान्ति कराय जी ।
अनेक रोग शोक अधि व्याधि डी डाकनी शाकनी भूत प्रीतजी

वितरादिक दुष्ट ग्रह दुरभिक्ष जी ऐसे सर्व विनाशक साधूजी
ऐसे साधुन को पंचांग नमन है आठ द्रव्य से पूजन करोजी

ॐ ह्रीं अढ़ाई दीप जितने साधू सर्व भूत भविष्य वर्तमान के साधु अनेक रिद्धि के धारक साधु रोगादि मिटाने वाले साधुओं को अर्घ १२

अढ़ाई दीप के साधू हैं सबै मोक्ष पधारे हैं जितने सबैं।
नमन पूजन सबको कीजिये शान्ति में जाओं बुद्धा लीजिए ॥

ॐ ह्रीं अढ़ाई द्वीप से जितने साधू मोक्ष गये हैं तिन सबको अर्घ १३

अढ़ाई दीप के पांचों परमेष्ठी जी रिषभचंदको विनती लीजिएजी
मोक्ष न जोलों मेरा होवे प्रभु इतनी चीजें मैं माँगत प्रभुजी ॥
जैन सिद्धान्त की श्रद्धा सब रहे शास्त्र अभ्यास हमारे रहें।
भगवान की पूजन भक्ति मैं करूं मन वच काय की दिढ़ता से करूं
सदाचारी साधु की संगति रहै जिनेन्द्र देव का श्रद्धान रहै।
पुन्य पुरुषों की कथा सुनता रहूँ पर निंदा का त्याग मैं करूं
दूसरे के त्रिरस्कार में मौन मेरा रहे सब जीवों से मित्रता बनी रहे
हितमित वचन बोलता रहूँ आतम भावना हिरदै में रहै।
इतनी वस्तु का समागम होता रहे जब लग मोक्ष प्राप्ति न मिले
आपके चरन कमल मेरे हृदय में रहें मोरो हृदय आपके चरनोंमें रहें

इत्याशीर्वाद।

यातैं मैं जानत सही आप राग द्वेष निर मोह।
ना काहू को देत कछु न काहू का लेत ॥

ये तो मेरा राग है भक्ति में अनुराग ।
मोरी तों मांमैं बने मुक्ति वधू के काज ॥
चौबीसों भगवान की स्तुति पूजन जयमाल ।
रिषभचन्द उर में है हर्ष फूलो नहीं समात ।
विनय करने में अनुराग शुद्धाशुद्ध जानौं नहीं ।
सकल पंच परमेष्ठी भूल चूक की माफ दो ॥
विक्रम संवत् दो हजार ऊपर अठारह जान ।
खुरजा के चौमासे में पूरन भयो विधान ॥

— लेखक परिचय —

लेखक परिचय में कहूँ रिषभचन्द ब्रह्मचारी ।
जनम भूमि चन्दपुरा कही मध्य प्रदेश मझारी ॥
पिताजी आसाराम हैं इन्द्रानी माता नाम ।
इन दोनों के सुत भयो खेमचन्द है नाम ॥
बाल ब्रह्मचारी भये तातैं धरया नाम ।
रिषभचन्द गुरु ने कही वहाँ सें बदलो नाम ॥
उदासान गुरु चिदानंद हैं घृत देने वाले गनेश ।
क्षुल्लक गुरु दोनों जनें ज्ञान गुरु हैं साधु ॥
श्री सुमतिसागर महाराजजी दीक्षा शिक्षा गुरु जान ।
भक्ता वश में लिखौं काय सुधारन भान ॥
जिला टीकमगढ़ जान पोस्ट खरगापुर कहाँ ।
जनम चन्द्रपुरा जान रिषभचन्द ब्रह्मचारी भयो । सम्पूर्ण ।

ब्र० रिषबचन्द दि० जैन ग्रंथमाला के ग्रंथ

१ नित वन्दना
२ मेरी जाचना
३ त्रिकाल वन्दना
४ अर्जका वन्दना
५ वर्तमान चौबीसी विधान
६ विदेह क्षेत्र विधान
७ सामान केवली अर्घ
८ तीस चौबीसी अर्घ
९ सिद्ध परमेष्ठी विधान
१० आचार्य परमेष्ठी विधान
११ उपाध्याय परमेष्ठी विधान
१२ साधु परमेष्ठी विधान
१३ जिन भवन विधान
१४ जिन प्रतिमा विधान
१५ जिनवानी विधान
१६ जिनधर्म विधान
१७ श्रावक प्रतिक्रमण
१८ चरचासागर नोट
१९ सम्यक्त प्रश्नोत्तर
२० ब्र० रिषबचन्द चरित्र